डाक पंजीयन संख्या/643/2016-2018/2016
RNI-MPHIN/2015/62199

नई सोच, नई पहल

पुष्पांजली टुडे

राष्ट्रीय मासिक पत्रिका

वर्ष : 06 अंक : 11 जनवरी 2021 मूल्य: ₹ 30 पृष्ठ : 44

आंदोलन को मजबूर किसान

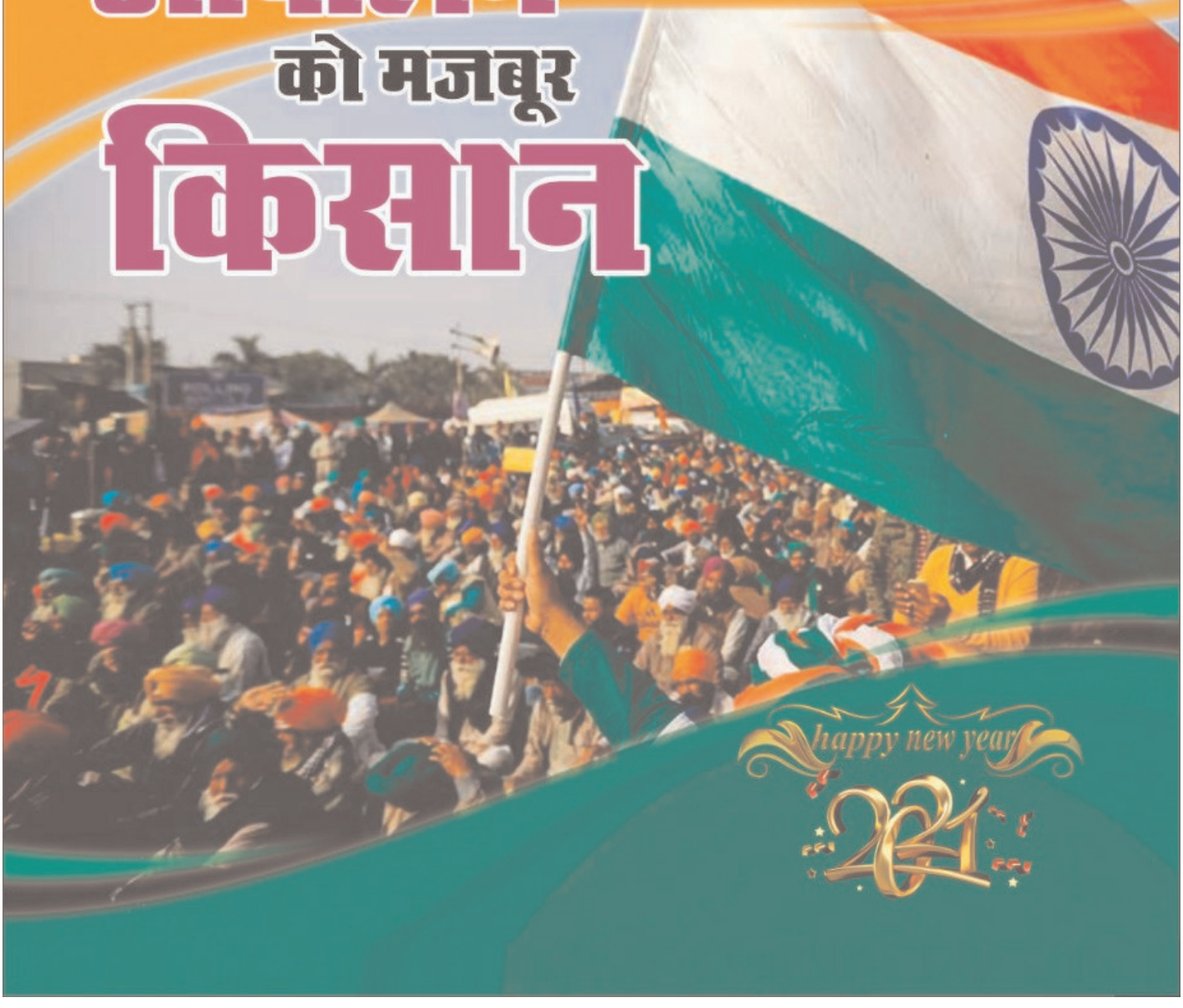

संपादक की कलम से

नए साल में नए संकल्प...

कोई भी नया वक्त, नया साल या नया दशक एक स्वाभाविक खुशी और उम्मीद के साथ अवतरित होता है। खुशी यह होती है कि हम पुराने से नए की ओर जा रहे हैं और उम्मीद यह कि जो होगा, पहले से बेहतर होगा। यह खुशी और उम्मीद इस बार कुछ ज्यादा ही है, क्योंकि जो बीता है, वह शायद कुछ ज्यादा ही बुरा था। उस बुरे को छोड़कर हमें नए साल में आगे बढ़ना है और बहुत कुछ ऐसा अच्छा रचना है, जो हमारी उम्मीदें पूरी करके हमें खुशियों से सराबोर कर दे। यकीन मानिए, जो बीत गया, उसमें भी बहुत कुछ अच्छा था, जिसे साथ लिए चलना होगा। जैसे, महामारी के दौर में हम जिस तरह मिलकर लड़े, जिस तरह से हमने एक-दूसरे की चिंता की, वह काबिले तारीफ है।

सभी को नए साल 2021 की हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं यह 21वीं सदी के नए और तीसरे दशक की शुरुआत है। मेरी कामना यही है कि नए साल में हम नए संकल्प लें और पुरानी गलतियों से सबक लें। कोरोना महामारी पूरे 2020 में हमें बहुत कुछ सिखा गई है जिंदगी में कई उतार चड़ाव हमने 2020 में देखे अब 2021 से यही आशाा है कि कोरोना जैसी महामारी से हमें छुटकारा मिले और अंधेरे में उजाले की तरह कोरोना वैक्सीन से यह महामारी समाप्त हो और पूरी दुनिया में फिर एक नई सुबह हो। कोविड-19 बीमारी ने पूरी दुनिया में सिर उठाया और हाहाकार मचा दिया। कई लोगों का घर-बार छूट गया, रोजगार छूट गया। अपने सपनों की गठरी लिए कितने ही घर, परिवार से बेदखल हो गए। कितने ही लोग शहरों से गांव लौट गए, कितने ही राहों में ही बीमार हुए और जीवन से हाथ धो बैठे। बीते साल में आम आदमी के साथ-साथ देश के कुछ बड़े कलाकार और लेखक भी हमसे बिछुड़ गए। खबरें आती रहीं, हम मन मसोसकर सुनते रहे। 2020 का साल इस मायने में याद किया जाएगा कि उसने लगभग हर इंसान के मनोबल को तोड़ने का काम किया। ऐसी बीमारी हमारे पीछे लग गई, जो बिना आहट हमला करती थी। चिंटू (ऋषि कपूर), इरफान, जगदीप, बासु दा (बासु चटर्जी) जैसे कलाकार हमारे बीच से चले गए। सुशांत सिंह राजपूत की मौत ने झकझोरकर रख दिया। और भी कितने लोग इस साल साथ छोड़ गए। लेकिन 2020 का साल इस बीमारी से लड़ने वालों और इसका मुकाबला करने वालों के नाम भी रहा। मैं अपने देश के डॉक्टरों और पुलिस को सलाम करना चाहूंगा, जिन्होंने महीनों अपने घर न जाकर, अपने घर-परिवार की रक्षा-सुरक्षा की परवाह न करते हुए खुद को जनसेवा में झोंक दिया। उन्होंने कड़ी गरमी, बरसात और इस जाड़े में लगातार काम करते हुए, एक सीमा के बाद सब्र खो देने वाली जनता के गुस्से, उसकी आक्रामकता को भी बिना शिकायत सहन किया और उनकी पीड़ा, वेदना को अपनी सदाशयता से शांत करने में कोई कोर-कसर न छोड़ी। दोस्तो, आपका यह हीरो पिछले पूरे साल भी आपके साथ लगातार बना रहा है।

भरत सिंह चौहान
संपादक

सभी को नए साल 2021 की हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं यह 21वीं सदी के नए और तीसरे दशक की शुरुआत है। मेरी कामना यही है कि नए साल में हम नए संकल्प लें और पुरानी गलतियों से सबक लें। कोरोना महामारी पूरे 2020 में हमें बहुत कुछ सिखा गई है जिंदगी में कई उतार चड़ाव हमने 2020 में देखे अब 2021 से यही आशाा है कि कोरोना जैसी महामारी से हमें छुटकारा मिले और अंधेरे में उजाले की तरह कोरोना वैक्सीन से यह महामारी समाप्त हो और पूरी दुनिया में फिर एक नई सुबह हो।

पुष्पांजली टुडे

राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका

वर्ष 06, अंक 11, जनवरी 2021

मूल्य 30 रु, पृष्ठ 44

संरक्षक	बहादुर सिंह चौहान
संपादक	भरत सिंह चौहान
प्रबंध संपादक	शैलेश सिंह कुशवाह
उपसंपादक	अर्पित गुप्ता
	शशिभूषण चौहान (मप्रे)
	पुष्पेन्द्र तोमर
	संदीप प्रधान
	प्रदीप नागेन्द्र सिकरवार
	विपिन तोमर
कानूनी सलाहकार	एड. आर. के. जोशी
एडिटिंग	इमरान गौरी
राष्ट्रीय मीडिया प्रभारी	आर एस रजक

ब्यूरो प्रमुख

पंकज त्रिपाठी	मध्य प्रदेश
राजानल शर्मा	छत्तीसगढ़
नरेन्द्र शर्मा	हरियाणा
केशव प्रसाद शर्मा	चंबल संभाग
विजस कुमार सिंह	बिहार/झारखंड
अमित कुमार	जम्मू-कश्मीर (यूटी)
अमन राय	बर्दवान पश्चिम बंगाल
नारायण लाल	बेंगलुरु
दीपक रलहन	पंजाब
नैनाराम सिरवी	पाली, राजस्थान
केवल राम मालवीय	इंदौर
सादिक मिर्जा	खरगोन
राजा दुबे	सीहोर
राजेश लोधी	रायसेन
रीतेश कटरे	बालाघाट
सुरजीत राजावत	ग्वालियर
विनोद पाठक	श्योपुर
प्रेमकिशोर शर्मा	आगरा मंडल
शशिकांत खरे	झांसी
हरिनिवास दुबे	मथुरा (उत्तर प्रदेश)
सोनू कुमार माथुर	एटा, (उत्तर प्रदेश)
प्रवेन्द्र सिंह	आगरा (उत्तर प्रदेश)
अरविंद प्रताप सिंह	कन्नौज (उत्तर प्रदेश)
रूपसिंह	इटावा, (उत्तर प्रदेश)
किरण राठौर	औरैया, (उत्तर प्रदेश)
अरूण शुक्ला	भिण्ड
मोहन मांझी	गोहद
अमित शर्मा	ग्वालियर

कार्यालय

जी. एस. प्लाजा, गोले का मंदिर ग्वालियर मध्य प्रदेश

हेल्पलाईन: 0751-4901403, 8269307478

www.pushpanjalitoday.com, Email-pushpanjalitoday@gmail.com

इस अंक में

पुष्पांजली टुडे टीम

अनिल पाराशर	मध्य प्रदेश क्राइम रिपोर्टर
महेन्द्र शर्मा	चम्बल संभाग
गौरव शर्मा	चम्बल संभाग
योगेश शर्मा	चम्बल संभाग
राधा तोमर	अम्बाह
अंकित कुमा	अजीतमल, औरैया
भीमसेन तोमर	अम्बाह
सुनील सिंह तोमर	अम्बाह
रवीकांत पाठक	पिछोर
रंजीत बघेल	सेंवढ़ा, दतिया
राहुल कुमार	: आगरा
छोटे सिंह भदौरिया	मालनपुर
संतोष सिंह भदौरिया	गोरमी
हरिओम चतुर्वेदी	करैरा
अरिमर्दन सिंह भदौरिया	भिण्ड, क्राइम रिपोर्टर
निर्मला	भिण्ड
राहुल खन्ना	इंदौर
शिवकांत ओझा	रौन
आदित्य सिकरवार	पोरसा
वासुदेव मिश्रा	ग्वालियर
शहनवाज खान	श्योपुर
रियाज मोहम्मद	हरदा
चेतना कास्ले	खरगोन

कांग्रेस में बदलाव.... 13

यूपी में योगीराज में 16

पर्यटन 37

सिनेमा 40

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक भरत सिंह चौहान। कंचन प्रिंटिंग प्रेस निम्बालकर का बाड़ा, तेजी की बजरिया नियर पी.एंड.एन. बैंक नया बाजार लश्कर ग्वालियर म.प्र. से मुद्रित तथा दीपू इलेक्ट्रोनिक्स हनुमान मंदिर के पास, गोवर्धन कॉलोनी भिण्ड रोड, गोला का मंदिर जिला ग्वालियर म.प्र. से प्रकाशित। संपादक भरत सिंह चौहान। (समाचारों के चयन के लिए पीआरबी एक्ट के तहत जिम्मेदार) दूरभाष 8269307478

दुनियांभर में उम्मीदों के साथ हुआ 2021 का स्वागत

कोविड-19 के त्रासद अनुभव के बीच दुनियांभर में 2021 का स्वागत बड़े जोरशोर और ऊर्जा के साथ किया गया क्योंकि कोरोना के साये में बीता 2020 जाते-जाते भी नये स्ट्रेन का भयावह चेहरा दिखाते हुए

विदा ले गया भले ही लोग इसे सदी का भयावह साल मानें पर सही मायने में देखा जाए तो मानव इतिहास के सबसे भयावह सालों में से 2020 रहा है। हालांकि 2020 के साल की भयावहता का आभास तो 2019 की अंतिम तिमाही में ही होने लगा था जब चीन के वुहान में कोरोना के मामले सामने आने लगे थे। हालांकि हमारे देश में इसकी भयावहता मार्च के पहले पखवाड़े के खत्म होते-होते सामने आने लगी थी। कोविड-19 ने जीवन के हर क्षेत्र में अपना असर छोड़ा है। देखा जाए तो कोरोना सही मायने में कार्ल मार्क्स के साम्यवाद का प्रत्यक्ष अवतार माना जा सकता है जिसने शक्तिशाली, अति विकसित से लेकर कमजोर व अविकसित देशों तक किसी को नहीं छोड़ा तो अमीर से लेकर गरीब तक समान रूप से इसके कुप्रभाव से बच नहीं सके। अगले ने पूरी निष्पक्षता बरती और पूरी तरह से ऑब्जेक्टिव तरीके से अपना प्रभाव दिखाया। कोरोना के असर को लेकर उस पर कोई भी देश और कोई भी नागरिक पक्षपात का आरोप नहीं लगा सकता। इसका असर किसी एक देश पर नहीं पड़ कर समूची दुनिया के देशों में देखने को मिला है। एक और जहां लंबे लॉकडाउन के चलते बिना किसी भेदभाव के घर में कैद होने का अनुभव कराया तो दूसरी और शुरुआती दौर में सभी गतिविधियों और अब भी बहुत-सी गतिविधियों पर लगभग विराम ही लगा दिया। शुरुआती दौर में कोरोना के नाम से इस तरह भय व्याप्ती का अनुभव भी रहा जब सारी मानवीय संवेदनाओं को ताक में रखे देखा।

दूसरी ओर समाज का एक उजला पक्ष भी सामने आया जब धरती के साक्षात् भगवान यानी चिकित्सकों और उनसे जुड़े चिकित्सा कर्मियों के सेवाभाव के साक्षात् दर्शन किए। डरते-डरते भी लोग एक दूसरे की सहायता के लिए आगे आए। अन्नदाता की मेहनत का असर भी देखने को मिला कि देश दुनिया में घर की चारदीवारी में कैद होने के बावजूद कोई भूखा नहीं रहा। इस महामारी ने आपदा प्रबंधन का भी नया अनुभव कराया। आवश्यकता ही आविष्कार की जननी है, को चरितार्थ करते हुए इनोवेशन और नवाचारों की देन इस दौरान साफ तौर से देखी जा सकती है। 2020 इसलिए भी याद किया जाएगा जब संभवतः मानव इतिहास में इतने नए शब्दों से समूची दुनिया को साक्षात् होना पड़ा। जिस तरह का लॉकडाउन 2020 में देखने को मिला मानव इतिहास में इस तरह का लॉकडाउन का भी पहला ही अनुभव होगा। सोचिए लॉकडाउन से लेकर सोशल डिस्टेंसिंग जैसे शब्दों और उनका प्रत्यक्ष उपयोग इसी साल देखने को मिला है। लॉकडाउन, क्वारंटाइन, सुपर स्प्रेडर, कंटेनमेंट जोन, आइसोलेशन, जूम, कांटेक्ट ट्रेसिंग, रेमडेसिविर, हाइड्रोक्सीक्लोरोक्विन, पीपीई किट, सोशल डिस्टेंसिंग, हेल्थ एडवाइजरी, डेडिकेटेड कोविड सेंटर, वेबिनार, वर्चुअल मीटिंग्स, वर्चुअल सुनवाई, वर्क फ्रॉम होम आदि से लगभग प्रतिदिन साक्षात् होना पड़ा। जो मास्क केवल डॉक्टरों के लिए वो भी ऑपरेशन थिएटर के लिए जाना जाता था, वह हर व्यक्ति की अनिवार्य जरूरत बन गया तो कोरोना वैक्सिन को लेकर वैज्ञानिकों के प्रयास काफी हद तक सफल रहे। लगभग थम चुकी आर्थिक गतिविधियां साल की तीसरी तिमाही तक पटरी पर आने लगीं तो आर्थिक क्षेत्र में थोड़ा आशा का संचार दिखाई देने लगा है।

पीएम मोदी ने आगे बढ़कर चुनौतियों का सामना करने में देश का नेतृत्व किया और देश को एकजुट किया

पीएम मोदी ने देश को दी नई दिशा

संकट के समय सबसे बड़ी परीक्षा देश का नेतृत्व कर रहे व्यक्ति की ही होती है और पूरी दुनिया ने देखा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने ना सिर्फ भारत में रहने वालों की चिंता की बल्कि दुनिया के विभिन्न देशों में बसे भारतीयों और वहां फँसे भारतीयों की भी चिंता की। साल 2020 भले बहुत ज्यादा समस्याएं लेकर आया लेकिन जिस तरह प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने आगे बढ़कर सभी चुनौतियों का सामना करने में देश का नेतृत्व किया और देश को एकजुट किया वह अपने आप में मिसाल है। कोरोना वायरस जैसी वैश्विक महामारी से निबटने में जहां दुनिया के बड़े नेताओं के हाथ-पाँव फूले जा रहे थे वहीं प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने समय पर और सही निर्णय लेकर देश को बड़ा नुकसान होने से बचा लिया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के आह्वान पर जनता कैसे एकजुट हो जाती है यह दुनिया ने तब देखा जब उन्होंने जनता कर्फ्यू का आह्वान किया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अपीलों का असर कैसा होता है यह दुनिया ने तब देखा जब प्रधानमंत्री ने कोरोना वारियर्स के प्रति सम्मान प्रकट करने और महामारी के खिलाफ लड़ाई के दौरान नया उजाला करने के लिए पहले ताली और थाली बजाने की अपील की, फिर दीया और मोमबत्ती जलाने की अपील की

नए साल में पीएम की सौगातः6 राज्यों में लाइट हाउस प्रोजेक्ट

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने नए साल के पहले दिन 6 राज्यों में लाइट हाउस प्रोजेक्ट की नींव रखी। इसके तहत मिडिल क्लास और गरीबों के लिए सस्ते और मजबूत घर बनाए जाएंगे। ग्लोबल हाउसिंग टेक्नोलॉजी चैलेंज-इंडिया के तहत यह योजना अगरतला (त्रिपुरा), रांची (झारखंड), लखनऊ (उत्तर प्रदेश), इंदौर (मध्य प्रदेश), राजकोट (गुजरात) और चेन्नई (तमिलनाडु) में शुरू की गई है। यहां दुनिया की बेहतरीन तकनीक की मदद से हर साल 1000 घर तैयार किए जाएंगे। मोदी ने नए साल की शुभकामनाएं देते हुए 30 मिनट के भाषण में कहा कि यह प्रोजेक्ट प्रकाश स्तंभ की तरह है, जो हाउसिंग को नई दिशा दिखाएगा। हर क्षेत्र से राज्यों का इसमें जुड़ना कोऑपरेटिव फेडरलिज्म की भावना को मजबूत कर रहा है। यह काम करने के तरीकों का अच्छा उदाहरण है। वहीं दूसरी ओर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि कोरोना की दो मेड-इन-इंडिया वैक्सीन बनाने में सफलता पाना उपलब्धि है। दुनिया का सबसे बड़ा वैक्सीनेशन प्रोग्राम शुरू होने जा रहा है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने नेशनल मेट्रोलॉजी कॉन्क्लेव का उद्घाटन वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए किया। उन्होंने नेशनल एन्वायरमेंटल स्टैंडर्ड लैब, नेशनल एटॉमिक टाइमस्केल और भारतीय निर्देशक द्रव्य की शुरुआत भी की।मोदी ने कहा कि नए दशक में ये शुभारंभ देश का गौरव बढ़ाने वाले हैं। नया साल एक और बड़ी उपलब्धि लेकर आया। वैज्ञानिकों ने एक नहीं दो मेड इन इंडिया वैक्सीन तैयार करने में सफलता पाई है। देश को वैज्ञानिकों के योगदान पर गर्व है। दुनिया का सबसे बड़ा वैक्सीनेशन प्रोग्राम शुरू होने जा रहा है। साथ ही बोले कि मेड

पीएम मोदी ने 128 करोड़ रु. लागत के लाइट हाउस प्रोजेक्ट की आधारशिला रखी

इन इंडिया की ग्लोबल क्रेडिबिलिटी भी हो, प्रोडक्ट्स की क्वालिटी से इनकी ताकत बढ़ेगी।

संकट के समय सबसे बड़ी परीक्षा देश का नेतृत्व कर रहे व्यक्ति की ही होती है और पूरी दुनिया ने देखा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने ना सिर्फ भारत में रहने वालों की चिंता की बल्कि दुनिया के विभिन्न देशों में बसे भारतीयों और वहां फँसे भारतीयों की भी चिंता की। यही नहीं भारत की विश्व कल्याण की भावना को आगे बढ़ाते हुए समय-समय पर विभिन्न जरूरत वाली दवाइयों को दुनिया के बड़े देशों को भी भेजा गया और छोटे देशों की भी सिर्फ दवा ही नहीं चिकित्सा उपकरणों और अन्न से भी मदद दी गयी। ब्राजील के प्रधानमंत्री ने तो नरेंद्र मोदी की तुलना हनुमानजी से करते हुए कहा था कि वह संजीवनी बूटी लेकर आ गये हैं। लॉकडाउन के कारण बड़ी संख्या में लोग बेरोजगार हुए तो मनरेगा का दायरा बढ़ाते हुए उसके लिए बजट में विशाल वृद्धि की गयी ताकि गरीबों, मजदूरों को आमदनी होती रहे। लोग कर्ज की किश्तों का भुगतान नहीं कर पा रहे थे तो आरबीआई ने उन्हें छह महीने के लिए राहत दी। दुनिया ने देखा कि कैसे भारत के प्रधानमंत्री समय-समय पर टीवी के माध्यम से देश को संबोधित करते हुए महामारी के खिलाफ लड़ाई में जनता का मार्गदर्शन भी कर रहे हैं और उनके लिए तमाम राहतों का ऐलान भी कर रहे हैं। यह भी पहली बार हुआ कि देश के प्रधानमंत्री ने राष्ट्र के नाम अपने संबोधन में उद्योगपतियों, कंपनियों और अन्य नियोक्ताओं से हाथ जोड़ कर अपील की

कि अपने कर्मचारियों की तनख्वाह नहीं काटें। उद्योग के जो भी क्षेत्र मंदी की गिरफ्त में आये उनके लिए तमाम प्रोत्साहन दिये गये। अंतरिक्ष समेत नये-नये क्षेत्रों को निजी कंपनियों के लिए खोला गया। इसके साथ ही पहली बार 20 लाख करोड़ रुपए का राहत पैकेज जनता के लिए पेश किया गया।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का ध्यान सिर्फ भारत में कोरोना की रोकथाम तक ही नहीं रहा बल्कि उन्होंने वीडियो कांफ्रेंसिंग के माध्यम से पहले सार्क देशों की बैठक की पहल की ताकि पड़ोस में यह महामारी थमे और इससे एकजुटता के साथ लड़ा जा सके। इसके बाद उन्होंने तमाम वैश्विक मंचों की बैठक बुलाने की पहल की और भारत ने दिखाया कि संकट के समय अपना ख्याल रखते हुए पूरी दुनिया की चिंता कैसे की जाती है और दुनिया की मदद कैसे की जाती है।

शायद ही किसी प्रधानमंत्री ने अपने कार्यकाल में मुख्यमंत्रियों के साथ इतना संवाद किया होगा जितना प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सिर्फ एक वर्ष में किया। समय-समय पर मुख्यमंत्रियों के साथ कोरोना की स्थिति पर चर्चा करने के अलावा उनकी समस्याओं को सुलझाने के लिए केंद्र सरकार के हर मंत्रालय को उन्होंने विशेष रूप से सक्रिय किया। यही नहीं प्रधानमंत्री मोदी ने कोरोना के प्रति जागरूकता बढ़ाने के लिए विभिन्न क्षेत्र की हस्तियों, मीडिया जगत के लोगों, उद्योगपतियों, सामाजिक कार्यकर्ताओं, बॉलीवुड हस्तियों, खेल प्रतिभाओं के साथ वीडियो कांफ्रेंसिंग के माध्यम से चर्चा की। सबका साथ सबका विकास और सबका विश्वास के अपने मंत्र पर आगे बढ़ते हुए प्रधानमंत्री ने महामारी से निबटने के दौरान सभी दलों के नेताओं को भी विश्वास में लिया और सर्वदलीय बैठकों के माध्यम से उनके विचार कोरोना से लड़ाई के मुद्दे पर भी जाने और वैक्सीन के मुद्दे पर भी जाने। कोरोना जिस तरह अपनी चाल बदलता रहा उसको लेकर प्रधानमंत्री चिकित्सा विज्ञानियों के भी सतत संपर्क में बने रहे ताकि सरकार की रणनीति हमेशा कारगर साबित हो। बात सिर्फ कोरोना से लड़ाई की नहीं थी। खुद को प्रधान सेवक और देश का चौकीदार मानने वाले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत ने चीन को ऐसा सबक सिखाया है जिसकी उसने कल्पना तक नहीं की होगी। पूर्वी लद्दाख में चीनी हिमाकत का मुँहतोड़ जवाब दिया गया। घायल जवानों का हाल जानने और एलएसी पर तैनात जवानों का हौसला बढ़ाने खुद प्रधानमंत्री पूर्वी लद्दाख पहुँचे और चीन को सीधी चेतावनी दी। यही नहीं जब पूरा देश दीवाली मना रहा था तब प्रधानमंत्री जैसलमेर में भारतीय सेना के वीर जवानों को मिठाई खिला रहे थे। देश ने इस दौरान विभिन्न चक्रवातों और तूफानों का सामना भी किया और प्रधानमंत्री वहां भी पहुँचे, हालात का जायजा लिया और मदद की घोषणा की। मौका आने पर प्रधानमंत्री ने संयुक्त राष्ट्र महासभा के अधिवेशन को संबोधित करते हुए उसकी कार्यशैली पर कई बड़े सवाल उठाये। राजनीतिक मोर्चे पर भी प्रधानमंत्री ने कमान सँभाली और बिहार में अगर आज एनडीए की सरकार है तो उसका पूरा श्रेय नरेंद्र मोदी को जाता है। इसके अलावा इस साल हुए विभिन्न चुनावों और उपचुनावों में भाजपा ने अपनी शानदार जीत का श्रेय प्रधानमंत्री मोदी की नीतियों को ही दिया है।जम्मू-कश्मीर में शांतिपूर्ण और पारदर्शी तरीके से कराये गये चुनाव हों या युवाओं को उद्यमी बनने के लिए प्रेरित करने की बात हो, रेहड़ी-पटरी वालों से लेकर बड़े उद्योगों को आगे बढ़ाने के लिए प्रोत्साहन देने की बात हो... सभी क्षेत्रों में काफी काम किया गया है। साल 2020 में अयोध्या में भव्य राममंदिर निर्माण के लिए भूमि पूजन के साथ ही प्रधानमंत्री ने संसद के नये भवन के निर्माण के लिए भी भूमि पूजन किया। संसद के नये भवन के निर्माण कार्य की राह में भले बाधाएं पैदा करने के प्रयास किये जा रहे हों लेकिन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का विजन स्पष्ट है और वह बार-बार स्पष्ट कर चुके हैं कि राजनीति इंतजार कर सकती है लेकिन विकास इंतजार नहीं कर सकता। प्रधानमंत्री ने देश को आत्मनिर्भर बनाने का जो महासंकल्प भारतीयों को दिलाया है उसमें हर व्यक्ति अपने-अपने स्तर से योगदान दे रहा है।

पीएम मोदी ने किया नए संसद भवन का शुभारंभ

आंदोलन को मजबूर किसान

कृषि बिलः सरकार और किसानों में कई बैठकों के बाद भी नहीं बन पा रही बात?

धरना, बैठक, बातचीत, चेतावनी...अब तक सबकुछ हो चुका है और हो रहा है, मगर समाधान कोई नहीं निकल सका है. किसान सड़कों पर है, क्योंकि रास्ता नहीं निकल रहा है. किसानों और सरकार के बीच सोमवार को आठवें राउंड की बैठक भी बेनतीजा रही. बातचीत की टेबल पर केंद्र सरकार के मंत्री और किसान नेता करीब घंटों तक आमने सामने रहे लेकिन फाइनल रिजल्ट टाई ही रहा. अब सवाल ये है कि आखिर पेच कहां फंसा कि बात एक नई तारीख तक पहुंच गई और अब इस मसले का हल कैसे होगा?

सरकार और किसानों के बीच अभी हाल ही में हुई बैठक में कोई नतीजा नहीं निकला. सरकार ने बैठक खत्म होने के बाद सफाई दी कि किसान कोई विकल्प ही नहीं दे पाए. ऐसे में समाधान कैसे होता. अब सरकार ने किसानों को 15 जनवरी को फिर से बातचीत के लिए बुलाया है. सरकार ने किसानों को अगली तारीख दे दी है, लेकिन बैठक के बाद किसानों के तेवर और ज्यादा कड़े नजर आए. किसानों ने साफ कहा कि वो बड़ी से बड़ी लड़ाई लड़ने के लिए तैयार हैं. किसानों का साफ कहना है कि उन्हें कृषि कानून वापस लेने से कम कुछ भी मंजूर नहीं है. बता दें कि कृषि कानून के विरोध में किसान 26 नवंबर से आंदोलन कर रहे हैं, लेकिन सरकार और किसानों के बीच बातचीत का दौर इस आंदोलन से पहले से जारी है. पहले दौर की बात 14 अक्टूबर को हुई थी, इसमें कृषि मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर की जगह कृषि सचिव आए, लेकिन किसान संगठनों ने मीटिंग का ये कहते हुए बायकॉट कर दिया कि वो कृषि मंत्री से ही बात करना चाहते है.इसके बाद दूसरे दौर की बात हुई 13 नवंबर को यानी ठीक 1 महीने के बाद. इसमें सरकार ने किसानों की बात को माना और इस बार कृषि मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर और रेल मंत्री पीयूष गोयल ने किसान संगठनों के साथ मीटिंग की. ये बैठक करीब 7 घंटे चली, लेकिन कोई नतीजा नहीं निकला. दूसरे दौर में बात नहीं बनने के बाद 1 दिसंबर को सरकार और किसानों के बीच तीसरे दौर की बात हुई. ये मीटिंग करीब 3 घंटे चली. इसमें सरकार ने एक्सपर्ट कमेटी बनाने का सुझाव दिया, लेकिन किसान संगठन तीनों कृषि कानून रद्द करने की मांग पर अड़े रहे और ये बैठक भी बेनतीजा रही. फिर 3 दिसंबर को सरकार और किसान चौथी बार बातचीत की टेबिल पर आए. इस बार साढ़े 7 घंटे तक बातचीत चली. सरकार ने वादा किया कि स्वक्क से कोई छेड़छाड़ नहीं होगी, लेकिन किसानों का कहना था कि सरकार स्वक्क पर गारंटी देने के साथ-साथ तीनों कानून भी रद्द करे. जिसके चलते बात फिर नहीं बनी. 5 दिसंबर को 2020 को सरकार और किसान के बीच पांचवे दौर की बात हुई. इसमें सरकार स्वक्क पर लिखित गारंटी देने को तैयार हुई, लेकिन किसानों ने साफ कहा कि कानून रद्द करने पर सरकार हां या न में जवाब दे और फिर बात बिगड़ गई. 30 दिसंबर को सरकार और किसानों के बीच छठे दौर की बात हुई. कृषि मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर और रेल मंत्री पीयूष गोयल ने किसान संगठनों के 40 प्रतिनिधियों के साथ बैठक की. जिसमें किसानों की 4 मांगों में से दो मुद्दों पर सहमति बनी, लेकिन दो पर

किसानों का बढ़ता आंदोलन जितना दुखद है, उतना ही चिंताजनक भी। दिल्ली की सीमाओं पर अनेक जगह जिस तरह से ट्रैक्टर रैली निकालकर किसानों ने प्रदर्शन किया है, उससे प्रशासन के कान खड़े हो जाने चाहिए। सबसे दुखद यह कि घोषित रूप से ऐसी रैली का अभ्यास 26 जनवरी के आयोजन को प्रभावित करने के लक्ष्य के साथ किया गया है। दिल्ली चलो के नाम पर 26 नवंबर को शुरू हुआ किसानों का विरोध प्रदर्शन तनाव बढ़ाने की दिशा में बढ़ चला है। किसानों को नए कृषि कानूनों की वापसी और न्यूनतम समर्थन मूल्य की कानूनी गारंटी के अलावा कुछ भी मंजूर नहीं। सरकार किसानों के साथ अनेक बार वार्ता कर चुकी है, लेकिन समाधान की उम्मीद को बल नहीं मिला है।

मतभेद कायम रहे और फिर बात बिगड़ गई. 4 जनवरी 2021 को सरकार और किसान 7वीं बार फिर आमने-सामने आए. सोचा कि पुराने साल का मसला नए साल पर तो सुलझ जाएगा. 4 घंटे चली बैठक में किसान कानून वापसी की मांग पर अड़े रहे और जब मीटिंग खत्म हुई तो कृषि मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर ने कहा कि ताली दोनों हाथों से बजती है. सरकार का साफ कहना था कि हम अगर दो कदम पीछे हट रहे हैं, तो किसान भी थोड़ा पीछे हटें. वहीं, 8 जनवरी 2021 को विज्ञान भवन में सरकार और किसानों के बीच 8वें दौर की बात हुई. करीब ढाई घंटे तक बातचीत चली, लेकिन बात इस बार भी नहीं बनी. अब सवाल इस बात का है कि आखिर सरकार और किसानों के बीच बात कैसे बनेगी, क्योंकि किसानों ने अपना रुख साफ कर दिया है.

सरकार और किसानों के तर्क

दोनों पक्षों के अपने-अपने तर्क हैं. किसान संगठन की सबसे बड़ी मांग जो पहले दिन से बनी हुई है वो ये कि तीनों कृषि कानून वापस लिए जाएं. जबकि सरकार इसके लिए राजी नहीं है. सरकार का कहना है कि वो पूरे देश के किसानों को ध्यान में रखकर फैसला करेगी. दूसरी तरफ किसान चाहते हैं कि एमएसपी पर अलग कानून बने. दरअसल, किसान फसलों के एमएसपी की पूरी गारंटी चाहते हैं. सरकार से किसान एमएसपी पर लिखित गारंटी मांग रहे हैं. किसानों को लगता है कि कॉन्ट्रैक्ट फॉर्मिंग के दौर में एमएसपी की बात बेमानी हो जाएगी, किसानों को औने-पौने दामों में फसल बेचनी पड़ेगी. किसान चाहते हैं कि उसकी हर फसल एमएसपी पर खरीदी जाए. एमएसपी से कम दाम पर खरीदने वालों को सजा देने के लिए कानून बनाया जाए. सरकार किसानों से मुख्य रूप से धान, गेहूं और दलहन की खरीदारी करती है. किसान चाहते हैं कि उसकी दूसरी फसलों को सरकार खरीदे या कोई निजी कंपनी, किसानों को एमएसपी मिलनी चाहिए. एमएसपी पर सरकार का तर्क है कि इस पर कोई भी असर नहीं पड़ेगा. सरकार चाहती है कि कानून पर क्लॉज वाइज चर्चा हो लेकिन किसान संगठन कानूनों की वापसी के अलावा कुछ नहीं चाहते हैं. किसानों का कहना है न अपील, न दलील, सिर्फ रिपील (वापस). पूरे देश के किसानों का ध्यान रखने वाली सरकार की दलील पर किसान नेताओं का कहना है कि सरकार कहती है देश के बाकी किसान खुश हैं तो फिर हम सरकार से ये पूछना चाहते हैं कि जो सितंबर से सड़कों पर बैठे हैं वो कौन हैं. किसान नेताओं का ये भी तर्क है कि देश के करीब 500 किसान संगठन आंदोलन कर रहे हैं, क्या सरकार उन्हें किसान नहीं मानती?

अमेरिका में लोकतंत्र पर ट्रम्प समथकों का हमला

दुनिया में लोकतांत्रिक देशों की सूची में सबसे ऊपर माने जाने वाले अमेरिका में लोकतंत्र पर कुठाराघात हुआ है। हालांकि जहां तक लोकतंत्र की बात है तो सबसे महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि लोकतंत्र में जनमत का बहुत बड़ा योगदान होता है। इसमें यह भी महत्व का विषय है कि जनता अपने वोट के आधार पर यह तय करती है कि उसे क्या पसंद है और क्या नापसंद। इसी के आधार पर सत्ता का रास्ता तैयार होता है। लोकतांत्रिक पद्धति में जहां एक पक्ष को जय मिलती है, तो दूसरे को पराजय का सामना करना पड़ता है। पराजय निश्चित तौर पर एक सबक होती है, जो स्व का अवलोकन करने की ओर प्रेरित करती है। लेकिन कुछ दल ऐसे भी हैं जो आत्म मंथन करने की बजाय यह सिद्ध करने की कुचेष्टा करते हैं कि हम ही सही हैं, बाकी सब गलत। इस प्रकार की सोच रखना कहीं न कहीं लोकतांत्रिक मूल्यों की राह में घातक ही होता है।

अमेरिकी संसद में जिस प्रकार से उत्पात मचाया गया, वह केवल इसीलिए था कि नए राष्ट्रपति बाइडेन की राह में रोड़े स्थापित किए जाएं, क्योंकि संसद के सत्र में बाइडेन की जीत की आधिकारिक घोषणा की जानी थी। हम जानते ही

हैं कि नवंबर माह के प्रथम सप्ताह में आए राष्ट्रपति पद के लिए आए चुनाव परिणामों में जहां बाइडेन को 306 मत प्राप्त हुए, वहीं डोनाल्ड ट्रंप को 232 वोट मिले। इसके बाद सब कुछ साफ था, लेकिन ट्रम्प ने आरोप लगा दिया कि चुनाव में धांधली हुई है। इसके ट्रम्प के समर्थकों ने कई राज्यों में मामले भी दर्ज कराए, लेकिन सच तो सच ही रहता है। आखिरकार वे सभी मामले प्रथम दृष्टया खारिज हो गए। इसी प्रकार दो याचिकाएं वहां का सर्वोच्च न्यायालय भी खारिज कर चुका है। इन सबके बाद भी ट्रम्प क्यों नहीं समझ पा रहे हैं कि वे हार चुके हैं।

आज अमेरिका में राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प और उनके समर्थकों की हरकतों से लोकतंत्र शर्मसार है। क्योंकि डोनाल्ड ट्रंप लोकतंत्र को अपने हिसाब से चलाना चाहते है, जो लोकतांत्रिक पद्धति में प्रथम दृष्ट्या स्वीकार करने योग्य नहीं कहा जा सकता है। लोकतंत्र की खूबसूरती भी यही है कि जो जीतकर आए, उसको लोकतांत्रिक पद्धति से नियमों के अंतर्गत सत्ता सौंप देना चाहिए।

अगर ऐसा कर पाने का सामर्थ्य नहीं है तो फिर अपने आपको लोकतांत्रिक कहना भी बंद कर देना चाहिए। लोकतंत्र में जिस प्रकार जीत का स्वाद अच्छा लगता है, उसी प्रकार हार में भी प्रसन्न होना चाहिए। सत्ता का हस्तांतरण करना भी एक स्वस्थ लोकतंत्र का हिस्सा है। अमेरिका में अभी मात्र दो माह पूर्व हुए राष्ट्रपति पद के चुनावों में रिपब्लिकन पार्टी के डोनॉल्ड ट्रम्प को हार का सामना करना पड़ा, वहीं डेमोक्रेटिक पार्टी के उम्मीदवार जो बाइडेन को जीत हासिल हुई है। परिणामों से स्पष्ट परिलक्षित हो रहा है कि बाइडेन को अमेरिका की जनता ने राष्ट्रपति बनाने के लिए समर्थन दिया है। हालांकि मतदान के तुरंत बाद ही यह लगभग तय हो गया था कि बाइडेन ही अमेरिका के राष्ट्रपति होंगे। लेकिन विसंगति यह है कि डोनाल्ड ट्रंप अपनी पराजय को पचा नहीं पा रहे। इसीलिए उन्होंने निरंकुशता की मर्यादा को भी लांघ दिया है। डोनाल्ड ट्रंप को अपनी पराजय के बारे में यह चिंतन करना चाहिए कि आखिर ऐसा क्या हुआ, जिसके चलते हार का सामना करना पड़ा। ट्रम्प की मानसिकता से यह भी पता चलता है कि वह अभी इस पद पर और बने रहना चाहते थे, लेकिन ऐसा हुआ नहीं। सवाल यह आता है कि क्या ट्रम्प राष्ट्रपति पद को हथियाना चाहते हैं? अगर ऐसा है तो फिर लोकतंत्र कहां रहा। उन्हें चाहिए कि जहां कमी रह गई, उसे सुधारें और अगली बार की तैयारी करें।

कहा जा रहा है कि अमेरिकी संसद में डोनाल्ड ट्रम्प के समर्थकों ने लोकतंत्र के मुख पर कालिख पोतने का ही काम किया है। इस कृत्य की विश्व भर में निंदा हो रही है। खुद ट्रम्प की पार्टी के कुछ सांसद इस अलोकतांत्रिक कृत्य की निंदा कर रहे हैं। कुल मिलाकर अमेरिकी संसद में जो कुछ घटित हुआ वह कम से कम लोकतांत्रिक देशों में उपयुक्त नहीं कहा जा सकता।

साल 2021 में उम्मीद की नई किरण लेकर आई कोरोना वैक्सीन

हम साल 2021 में कोविड-19 से निजात पाने के लिए टीकाकरण की दिशा में आगे बढ़ चुके हैं। दस से ज्यादा देशों में टीकाकरण की शुरुआत भी हो चुकी है। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने भी साल बीतते-बीतते वैक्सीन को स्वास्थ्य आपातकाल के आधार पर अनुमति दे दी है। दुनिया को इस पल का इंतजार था। विश्व स्वास्थ्य संगठन से मिली मंजूरी के बाद भारत ही नहीं, बल्कि पूरी दुनिया में टीकाकरण अभियान में तेजी आ जाएगी। अब दुनिया में कहीं भी जरूरत पड़ने पर वैक्सीन कोवीशील्ड का इस्तेमाल किया जा सकता है। भारत में भी ऑक्सफोर्ड एस्ट्राजेनेका की कोवीशील्ड और कोवैक्सीन के आपातकालीन इस्तेमाल की मंजूरी लगभग तय हो गई है। भारत में और भी वैक्सीन को मंजूरी मिल सकती है, वैक्सीन बनाने वाली कंपनियां अपने-अपने ढंग से अपने टीके को कारगर साबित करने में लगी हैं। इन दिनों दुनिया के अन्य देशों के साथ-साथ भारत में भी टीकाकरण कार्यक्रम की पूरी तैयारी हो रही है।

देशव्यापी पूर्वाभ्यास चल रहा है। यह टीकाकरण की सभी व्यवस्थाओं के प्रबंधन का पूर्वाभ्यास है। भारत वैक्सीन निर्माताओं के साथ निरंतर संपर्क में है। वैक्सीन बन चुकी है। अपने परीक्षण के प्रारंभिक तीन चरण पूरे कर चुकी है, जिनकेआधार पर विशेषज्ञ स्तर से आपातकालीन मंजूरी मिलनी तय है। वैसे अभी भी कुछ विवरण, जैसे कीमत, खुराक इत्यादि बहुत स्पष्ट नहीं हो सके हैं। भारत सरकार लगातार वैक्सीन अपडेट पर अपनी नजर और संपर्क बनाए हुए है। वैक्सीन ऐसा विषय है, जिसमें तमाम सरकारों को दुनिया भर में चल रहे वैज्ञानिक प्रयासों से जुड़ना होगा। वैक्सीन की गुणवत्ता में विशेष रूप से निगाह रखने की जरूरत रहेगी। भारत में वैक्सीन की पूरी हलचल है। पूर्वाभ्यास के जरिए 96,000 के करीब वैक्सीनेटरों को प्रशिक्षित किया गया है। राष्ट्रीय प्रशिक्षण द्वारा 2,360 प्रशिक्षक तैयार किए गए हैं। देश भर के 719 जिलों में जिला-स्तरीय प्रशिक्षण में 57,000 से अधिक प्रतिभागियों को प्रशिक्षित किया गया है। वैक्सीन और सॉफ्टवेयर संबंधित प्रश्नों के लिए राज्य हेल्पलाइन नंबर 104 लाने की तैयारी चल रही है। यह हेल्पलाइन नंबर 1075 के अतिरिक्त होगा। जब टीकाकरण अभियान आगे बढ़ेगा, तब निचले स्तर पर लोगों को जोड़ने के लिए और भी

सुविधाएं देने की जरूरत पड़ेगी। सरकारों और अंतरराष्ट्रीय संगठनों के तमाम प्रयासों के बावजूद कोरोना वैक्सीन की चुनौतियां अभी भी कम नहीं हैं। वैक्सीन में भ्रष्टाचार की अटकलों से भारत भी अछूता नहीं है। स्वास्थ्य आपातकाल की इस परिस्थिति में सफल वैक्सीन बाजार में आने वाली है। इसके बाद यह सुनिश्चित करना है कि सही लोगों को सही समय पर सही वैक्सीन मिले, यह एक बड़ी चुनौती है। हम सब जानते हैं, भारत में यह एक बहुत बड़ा काम होगा।

वैक्सीनेशन की सुविधा का समान रूप से राष्ट्रीय स्तर पर वितरण हो, यह सुनिश्चित करने के लिए प्रारूप तैयार किया गया है। अभी तक भारत में अधिकांश राष्ट्रीय टीका वितरण प्रणाली का प्रारूप बच्चों के पूर्ण टीकाकरण के उद्देश्य से ही रहा है। अभी तक इतने बड़े पैमाने पर वयस्क टीकाकरण के लिए ऐसी व्यवस्था नहीं है, तो

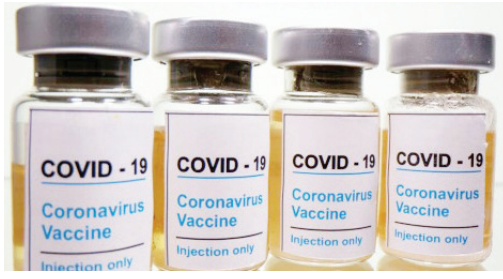

यह भी एक नई चुनौती होगी। भारत में खासकर स्वास्थ्य प्रशासन के लिए यह परीक्षा की घड़ी होगी। प्रशासन में विभिन्न स्तर पर कोरोना वायरस प्रतिरोधी टीकाकरण अभियान की तैयारियां जोरों पर हैं, लेकिन भारत के विभिन्न क्षेत्रों में इस महामारी के संक्रमण की गति और प्रभाव में बड़ा अंतर देखने को मिला है। इस आधार पर टीकाकरण को लेकर लोगों

है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपने वक्तव्य में देशवासियों को आश्वस्त किया है कि हमारे लिए सुरक्षा महत्वपूर्ण है, जितनी भी वैक्सीन भारत अपने नागरिकों को देगा, वे सभी वैज्ञानिक मानकों पर सुरक्षित होंगी। उधर, अमेरिका में पहले ही कोविड-19 टीकाकरण शुरू कर दिया गया है। इजरायल में अभी तक सात प्रतिशत नागरिकों को टीका लगाया

लगवा रहे हैं, ताकि अन्य लोगों को प्रेरणा मिले। भारत में भी इसकी जरूरत पड़ सकती है। अमेरिका के अलावा स्विट्जरलैंड, इजरायल, मलेशिया, ब्रिटेन, बहरीन, कनाडा, मैक्सिको, रूस और चीन में भी टीकाकरण चल रहा है। कई देशों में अनेक टीके इस्तेमाल किए जा रहे हैं, लेकिन उनका सभी मानव समूहों पर समग्र प्रभाव परखना अभी बाकी है। टीका व्यक्ति के बीमार पड़ने और उसे फिर अस्पताल में भर्ती होने के खतरे से बचाएगा, लेकिन यह भी संभव है कि वैक्सीन लिया हुआ व्यक्ति वायरस का वाहक हो, वह दूसरों के लिए संक्रामक हो सकता है। इसलिए टीकाकरण के बाद भी लोगों को मास्क पहनने के साथ-साथ शारीरिक दूरी बनाए रखने जैसे एहतियात बरतने होंगे। विश्व स्वास्थ्य संगठन का भी यह कहना है कि टीका संक्रमण को रोककर वायरस के प्रसार को रोक सकता है, लेकिन अभी और प्रमाण की जरूरत है। साथ ही, टीकाकरण से हर्ड इम्यूनिटी प्राप्त करने के लिए बड़ी संख्या में लोगों को वैक्सीन लगाने की जरूरत पड़ सकती है और इसमें समय लगेगा।

में वैक्सीन की जरूरत और उसके असर की विश्वसनीयता को लेकर संशय है। जनता के बीच वैक्सीन की मांग और स्वीकार्यता को लेकर सोच-समझ में भारी अंतर है। कई तरह की अफवाहें और फर्जीवाड़े भी लोगों के विचार पर असर डाल रहे हैं। वैक्सीन के रखरखाव और उसे प्रभावी बनाए रखने की व्यवस्था को लेकर भी नकारात्मक चर्चाओं से लोगों में असमंजस की स्थिति बनी है। प्रशासन को लोगों के बीच ज्यादा मुस्तैदी के साथ जागरूकता के लिए काम करना पड़ सकता है। लोगों को वैक्सीन के लिए तैयार करने में मुश्किल आ सकती है। यह अच्छी बात है कि लोग वैक्सीन की चर्चा कर रहे हैं। जगह-जगह कोल्ड चेन सिस्टम, कोल्ड स्टोरेज को आखिरी स्वरूप दिया जा रहा है। सिरिंज, बिजली व्यवस्था, सोलर पावर कोल्ड स्टोरेज को भी बेहतर करने पर पूरा ध्यान दिया जा रहा है। इन तैयारियों से भी देश में वैक्सीन के प्रति स्वीकार का भाव बन रहा

जा चुका है। बेंजामिन नेतन्याहू ने भी वैक्सीन लगवाई है और लोगों को जागरूक और प्रेरित करने के लिए उनके टीकाकरण का सीधा प्रसारण किया गया है। दुनिया में बड़े-बड़े नेता आगे आकर टीका

पश्चिम बंगाल में मेगा रोड शो के बाद अमित शाह बोले

बीजेपी जीती तो बंगाल की मिट्टी से ही अगला सीएम

केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह पश्चिम बंगाल में कहा कि कुछ दिन पहले हमारे राष्ट्रीय अध्यक्ष के बंगाल दौरे के दौरान उन पर टीएमसी के कार्यकर्ताओं ने जिस तरह से हमला किया था, उसकी बीजेपी निंदा करती है और मैं व्यक्तिगत रूप से भी इसकी निंदा करता हूं। उन्होंने कहा कि बीजेपी के कार्यकर्ताओं ने तय किया है कि हम हिंसा का जवाब लोकतांत्रिक तरीके से देंगे और आने वाले चुनाव में इस सरकार को हराकर दिखाएंगे।

अमित शाह ने कहा कि बीजेपी यहां से जीतती है तो बंगाल की मिट्टी से ही अगला मुख्यमंत्री होगा। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने शनिवार को बोलपुर में स्टेडियम रोड स्थित हनुमान मंदिर से बोलपुर सर्कल तक 1 किमी का मेगा रोड शो किया। रोड शो की समाप्ति के बाद पत्रकारों को संबोधित करते हुए अमित शाह ने कहा कि टीएमसी के लोग गलतफहमी ने न रहें कि इस तरह के हमलों से बीजेपी की गति, बीजेपी का कार्यकर्ता रुकेगा। जितना इस प्रकार की हिंसा का वातावरण बनाएंगे, बीजेपी और मजबूती के साथ बंगाल में खुद को मजबूत करने का काम करेगी। हिंसा का जवाब हम लोकतांत्रिक तरीकों से देंगे और आने वाले चुनाव में देंगे। अमित शाह ने कहा कि बंगाल में राजनीतिक हिंसा चरम पर है, 300 से ज्यादा बीजेपी कार्यकर्ताओं की हत्या हुई है। उनकी जांच में तनिक भी प्रगति नहीं हुई है। भ्रष्टाचार भी चरम सीमा पर है। तूफान के वक्त जो पैसे मिले, उसमें भ्रष्टाचार हुआ।

गृहमंत्री अमित शाह के दौरे के बाद आक्रामक हुईं ममता,

भ्रम फैलाने का आरोप लगाया

पश्चिम बंगाल में विधानसभा चुनाव से पहले ही सियासी जंग तेज हो गई। राज्य ममता सरकार और केंद्र सरकार के बीच लड़ाई का अखाड़ा बन गया है। केंद्रीय मंत्री अमित शाह के दो दिवसीय दौरे के बाद पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी आक्रामक तेवर में नजर आईं। मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने एक प्रेस कॉन्फ्रेंस कर केंद्र सरकार पर निशाना साधा। ममता बनर्जी ने कहा कि केंद्र सरकार जनता को भ्रमित कर रही है। केंद्र सरकार राज्य में झूठ फैला रही है। ममता बनर्जी ने केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह पर झूठ बोलने का आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि गृहमंत्री झूठ का पुलिंदा लेकर घूम रहे हैं। उन्होंने कहा कि गृह मंत्री अमित शाह भ्रम फैला रहे हैं। गृहमंत्री को झूठ बोलना शोभा नहीं देता है। मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने कहा कि केंद्र सरकार चुनाव जीतने के लिए झूठा प्रचार-प्रसार कर रही है। रवींद्र नाथ टैगोर और जनगण मन का अपमान किया जा रहा है, यह टैगोर और जनगण मन का अपमान नहीं है, सीधे पश्चिम बंगाल की जनता का अपमान है। सही समय आने पर जनता ही इसका जवाब देगी। ममता बनर्जी ने कहा कि गलत तथ्य बोलकर अमित शाह बंगाल के लोगों का अपमान न करें। ममता बनर्जी ने सोमवार को केंद्रीय कृशि मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर को पत्र लिखा। पत्र में ममता ने तोमर से पीएम किसान सम्मान निधि योजना के तहत धनराशि हस्तांतरित करने का अनुरोध किया है।

शिवराज मंत्रिमंडल का विस्तार: सिंधिया समर्थक सिलावट और राजपूत ने ली मंत्री पद की शपथ

राज्यसभा सांसद ज्योतिरादित्य सिंधिया समर्थक तुलसी सिलावट और गोविंद सिंह राजपूत ने मंत्री पद की शपथ ली. इसके साथ ही शिवराज सरकार के बहुप्रतीक्षित मंत्रिमंडल का विस्तार हो गया. मंत्रियों को प्रदेश की राज्यपाल आनंदी बेन पटेल ने पद की शपथ दिलाई. शपथ ग्रहण कार्यक्रम सादगी पूर्ण ढंग से राजभवन में आयोजित किया गया. शपथ ग्रहण समारोह कुछ ही मिनट में संपन्न हो गया. जानकारी के मुताबिक, कोविड-19 के कारण राजभवन में शपथ कार्यक्रम के दौरान केवल डेढ़ सौ लोगों को ही प्रवेश दिया गया. जानकारी के मुताबिक, विधायकों को मंत्री बनने के बाद पूर्व के विभागों की ही जिम्मेदारी मिलेगी. सूत्रों के मुताबिक, गोविंद सिंह राजपूत राजस्व और परिवहन, तुलसी सिलावट जल संसाधन विभाग का जिम्मा संभालेंगे. आपको बता दें कि ये दोनों ही विधायक ज्योतिरादित्य सिंधिया के कट्टर समर्थक माने जाते हैं. गौरतलब है कि मध्यप्रदेश कैबिनेट के 14 सदस्यों गोविंद सिंह राजपूत, तुलसीराम सिलावट, इमरती देवी, प्रद्युम्न सिंह तोमर, महेंद्र सिंह सिसोदिया, डॉ. प्रभुराम चौधरी, बिसाहूलाल सिंह, एदल सिंह कंषाना, हरदीप सिंह डंग, राज्यवर्धन सिंह दत्तीगांव, बृजेंद्र सिंह यादव, गिर्राज दंडौतिया, सुरेश धाकड़ और ओपीएस भदौरिया ने चुनाव लड़ा था. इसमें से इमरती देवी, एदल सिंह कंषाना और गिर्राज दंडोतिया चुनाव हार गए थे. इसमें से 2 तुलसी सिलावट और गोविंद सिंह राजपूत को छह माह का कार्यकाल पूरा होने पर चुनाव के दौरान ही मंत्री पद से इस्तीफा देना पड़ा था. अब दोनों को फिर से कैबिनेट में लिया जा रहा है. इसके बाद भी 4 पद खाली रह जाएंगे यानि आगे भी कैबिनेट विस्तार होगा.

तुलसी सिलावट का राजनीतिक सफर

सांवेर विधायक तुलसी सिलावट 1977 से 1979 तक इंदौर के शासकीय आर्ट एंड कॉमर्स कॉलेज तथा 1980-81 में देवी अहिल्याबाई विश्वविद्यालय के छात्रसंघ अध्यक्ष रहे. 1982 में इंदौर में पार्षद बने. 1985 में पहली बार विधानसभा का चुनाव जीता और उन्हें संसदीय सचिव की अहम जिम्मेदारी दी गई. 1995 में नेहरू युवा केंद्र के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष बने. इसके बाद 1998-2003 तक ऊर्जा विकास निगम के अध्यक्ष की जिम्मेदारी मिली. इस दौरान उन्हें प्रदेश कांग्रेस कमेटी का उपाध्यक्ष बनाया गया. 2007 में उपचुनाव में कांग्रेस ने उन्हें फिर से टिकिट दिया और वे जीते। इसके बाद 2008 के आम चुनाव में जीत हासिल हुई. सिलावट 2018 में चौथी बार विधायक बने और कमलनाथ सरकार में उन्हें कैबिनेट मंत्री बनाया गया. उन्हें स्वास्थ्य विभाग की अहम जिम्मेदारी दी गई. 10 मार्च 2020 को विधानसभा की सदस्यता से इस्तीफा देकर भाजपा में शामिल हो गए थे. शिवराज सरकार में उन्हें जल संसाधन और मछुआ कल्याण विभाग की जिम्मेदारी सौंपी गई. इसके बाद हुए उपचुनाव में जीत हासिल कर वे 5वीं बार विधायक बने।

गोविंद सिंह राजपूत का राजनीतिक सफर

सुरखी विधायक गोविंद सिंह राजपूत प्रदेश युवक कांग्रेस के अध्यक्ष रहे हैं. 2002 से 2020 तक प्रदेश कांग्रेस के महासचिव और उपाध्यक्ष के पद पर रहे. उन्होंने 2003 में पहली बार विधानसभा चुनाव जीता. उन्हें कांग्रेस विधायक दल के सचेतक की जिम्मेदारी पार्टी ने सौंपी थी. 2008 में दूसरी बार विधायक बने लेकिन 2013 में उन्हें हार का सामना करना पड़ा था. 2018 में भाजपा उम्मीदवार सुधीर यादव को हरा कर राजपूत एक बार फिर विधायक बन गए. उन्हें कमलनाथ सरकार में परिवहन और राजस्व विभाग की जिम्मेदारी मिली. राजपूत 10 मार्च 2020 को विधानसभा की सदस्यता से इस्तीफा देकर भाजपा में शामिल हो गए थे. शिवराज सरकार में उन्हें खाद्य और सहकारिता मंत्री बनाया गया. राजपूत उन पांच मंत्रियों में शामिल रहे, जिन्हें मुख्यमंत्री बनने के बाद शिवराज सिंह चौहान ने कैबिनेट का सदस्य बनाया था. मंत्रिमंडल के विस्तार में राजपूत को फिर से परिवहन और राजस्व विभाग दिया गया. छह माह की अवधि समाप्त होने के कारण उन्हें मंत्री पद से 20 अक्टूबर को इस्तीफा देना पड़ा था. राजपूत ने उपचुनाव में कांग्रेस की पारुल साहू को हराया और चौथी बार विधायक बने.

एक बार फिर राहुल के हाथ में आएगी कांग्रेस की कमान!

अंतरिम अध्यक्ष सोनिया गांधी के बदले पार्टी को पूर्णकालिक अध्यक्ष के लिए कांग्रेस एक सप्ताह के भीतर चुनाव का कार्यक्रम तय कर सकती है। कांग्रेस सदस्यों और राजनीतिक पर्यवेक्षकों के सामने बड़ा सवाल यह है कि चुनाव राहुल गांधी की वापसी के गवाह होंगे या नहीं। लोकसभा चुनाव में पार्टी के डूबने के बाद राहुल ने मई 2019 में कांग्रेस के अध्यक्ष पद से इस्तीफा दे दिया था और उनका इस्तीफा जुलाई में स्वीकार कर लिया गया था। फिर 10 अगस्त को सोनिया गांधी ने अंतरिम प्रमुख के तौर पर काम संभाला था जबकि उन्होंने गैर-गांधी को लाने पर जोर दिया था। हालाकि अटकलें इस बात को लेकर भी हैं कि राहुल अब धीरे-धीरे तैयार हो रहे हैं। बहरहाल, राहुल के अध्यक्ष को लेकर संशय बना है और चर्चाओं का बाजार गर्म है।

सोनिया गांधी द्वारा गठित पांच-सदस्यीय केंद्रीय चुनाव प्राधिकरण (सीईए) के बावजूद अभी तक यह तय नहीं है कि कांग्रेस के नए अध्यक्ष का चुनाव फरवरी के अंत या मार्च के शुरू में कराने की सिफारिश की जाएगी। हालांकि, कांग्रेस के नेताओं ग्रुप 23 के नेताओं में कुछ ने आंतरिक चुनावों के माध्यम से नेतृत्व संकट को खत्म करने की मांग की थी। आखिरकार राहुल भी अब इसके लिए तैयार हैं।

बेशक, इस आशय का कोई ठोस संकेत अभी तक राहुल ने भी नहीं दिए हैं,जो इटली में है - पार्टी के कुछ नेताओं ने सिर्फ इतना बताया कि वह अपनी बीमार नानी से मिलने के लिए गए है। राहुल गांधी कांग्रेस के 136वें स्थापना दिवस कार्यक्रम से ठीक पहले विदेश यात्रा पर रवाना हो गये थे। उनके कुछ करीबी सहयोगियों को छोड़कर, यहां तक कि वरिष्ठ कांग्रेस पदाधिकारियों को भी उनके जाने की जानकारी नहीं थी।

दिल्ली में कृषि कानूनों को लेकर आंदोलन के बीच 24, अकबर रोड पर कांग्रेस के स्थापना दिवस कार्यक्रम में राहुल की गैर-हाजिरी को पार्टी के नेताओं के समूह ने उनकी लगातार नेतृत्व करने के लिए अनिच्छा के तौर पर लिया। राहुल के अघोषित इटली प्रस्थान से ठीक एक सप्ताह पहले, उनकी पार्टी के भीतर कई लोग कांग्रेस सांसद की टिप्पणी को तूल दे रहे थे जिसमें 7 कांग्रेसी उन 23 में थे जिन्होंने संगठन को लेकर विवादास्पद पत्र लिखकर सवाल उठाए थे जिस पर 19 दिसंबर को सोनिया गांधी ने 10 जनपथ पर इन नेताओं की बैठक भी बुलाई थी। तब राहुल ने कहा था कि उन्हें पार्टी द्वारा जो भी जिम्मेदारी दी जाएगी, उसे वह उठाने को तैयार

है। बैठक में मौजूद वरिष्ठ नेता पवन कुमार बंसल और हरीश रावत ने मीडिया के सवालों का जवाब दिया कि क्या राहुल कांग्रेस अध्यक्ष के रूप में लौटने के लिए सहमत हैं। बैठक में उपस्थित संगठन में सुधार की बात करे वाले कुछ नेताओं ने आउटलुक को बताया था कि ÷राहुल के कांग्रेस अध्यक्ष के रूप में लौटने के विषय पर बैठक में चर्चा नहीं की गई थी÷ और सोनिया ने कहा कि ÷यह बहुत ही स्पष्ट है कि एक नए पार्टी प्रमुख के चुनाव की प्रक्रिया हमारे द्वारा शुरु की गई थी।÷ एक नेता ने कहा राहुल की टिप्पणी, , ÷कांग्रेस के रूप में पार्टी के प्रति हमारी व्यक्तिगत जिम्मेदारी पर सामान्य चर्चा÷ के जवाब में था।

इसलिए, सीईए के कांग्रेस अध्यक्ष चुनावों के लिए नामांकन दाखिल करने की प्रक्रिया शुरू होने से कुछ हफ्ते पहले भी, क्यों 24, अकबर रोड वायनाड के सांसद की अफवाहों से नाराज़ होकर पार्टी की हॉट सीट पर वापसी का संकेत दे रहे हैं? सूत्रों का कहना है कि 23 नेताओं द्वारा पत्र को मीडिया में लीक किए जाने के बाद से, सोनिया और राहुल ने पार्टी के राष्ट्रीय, राज्य और जिला स्तरों पर संगठनात्मक सुधार की प्रक्रिया को तेजी से ट्रैक किया है। उन्होंने कहा,विवादित पत्र से पहले ही पार्टी इकाइयों को फिर से चालू करने की प्रक्रिया जारी थी लेकिन धीमी गति से। एक वरिष्ठ पार्टी पदाधिकारी ने आउटलुक को बताया कि पत्र प्रकरण के बाद से, लगभग हर हफ्ते नई नियुक्तियां की जा रही हैं। 23 नेताओं द्वारा चौतरफा विद्रोह की संभावना ने सोनिया को सीईए, राज्य इकाइयों में पार्टी प्रमुखों की नई नियुक्तियों और कई अन्य पार्टी पैनल को जल्दबाजी में गठित करने के लिए मजबूर किया।

यूपी में खुशहाली ला रहा योगी का इकोनॉमिक मॉडल

देश की आर्थिक राजधानी मुंबई को उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की उपस्थिति में सिने-इकोनोमी, इण्डस्ट्रियल इकोनोमी और मार्केट इकोनोमी के समागम की ग्लोरियस हिस्ट्री लिखता हुआ दिखा। इसी समय देश के वित्तीय बाजार की नब्ज की तरह काम करने वाले बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज (बीएसई) ने लखनऊ म्युनिस्पिल कार्पोरेशन बॉन्ड की लिस्टिंग की जिसे मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने एक नये युग की शुरूआत कहा। एक नए युग की शुरूआत इसलिए क्योंकि जो प्रदेश कुछ वर्ष पहले तक बीमारू प्रदेश की श्रेणी में आता रहा हो वह प्रदेश आज मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में देश की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनकर आत्मनिर्भर भारत को मजबूती प्रदान कर रहा है। वह प्रदेश गवर्नेंस मैकेनिज्म और इकोनोमी रिफार्म के माध्यम से काम्पिटीटिव इकोनोमी बनने की दिशा में तेजी से आगे बढ़ रहा है जिसका प्रमाण है ईज आफ डूइंग बिजनेस में लम्बी छलांग लगाकर दूसरे स्थान पर पहुंचना। वह प्रदेश विश्वस्तरीय इन्फ्रास्ट्रक्चर का निर्माण कर सर्वश्रेष्ठ कनेक्टिविटी सुनिश्चित विकास के इंजन के रूप में स्वयं प्रस्तुत कर रहा है। साथ ही उत्तर प्रदेश इन्क्ल्यूसिव विकास के जरिए अंतिम पायदान पर खड़े अंतिम व्यक्ति तक विकास पहुंचा कर ईज आफ लाइफ की ओर बढ़ रहा है।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के सार्थक प्रयासों का ही परिणाम है कि आज देश और प्रदेश के आम आदमी से लेकर उद्यमी, व्यवसायी और निवेशक सभी सबसे ज्यादा उत्तर प्रदेश में अपना भरोसा जता रहे हैं। ऐसे आशा भरे वातावरण में जब लखनऊ नगर निगम के बांड्स की ऐतिहासिक लिस्टिंग के लिए बाम्बे स्टॉक एक्सचेंज के हेरिटेज हॉल में परम्परागत 'रिंगिंग बेल सेरेमनी' मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की उपस्थिति में हुयी तो इसका अपना मतलब है। कोरोना कालखण्ड में लखनऊ नगर निगम द्वारा 200 करोड़ रुपये के म्युनिसिपल बॉन्ड की लिस्टिंग यह संदेश देती है कि उत्तर प्रदेश पूरे विश्वास के साथ विकास और आत्मनिर्भरता के लक्ष्य को प्राप्त करने की दिशा में आगे बढ़ रहा है।

पूरे उत्तर भारत में म्युनिसिपल कार्पोरेशन बांड्स की यह पहली सूचीबद्धता बदलते उत्तर प्रदेश का प्रमाण है। यह यूपी के न्यू इकोनोमिक माडल, न्यू विज़न या यूं कहें कि यह योगीनोमिक्स का परिणाम है जिसने सोशल डायनामिक्स को बदला है, सोशियो-इकोनोमिक स्ट्रक्चर को प्रोग्रेसिव बनाया है, जिसने वेलफेयरिज्म की स्थापना है, जिसने बिजनेस इनयारनमेंट में सकारात्मक रूप से आमूलचूल परिवर्तन किया है, जिसने इकोनोमिक रिफार्म के जरिए उत्तर प्रदेश को देश का सर्वश्रेष्ठ बिजनेस डेस्टिनेशन बनाया है।

उत्तर प्रदेश सरकार का यह कदम नगर अर्थव्यवस्था और नगरीय जीवंतता के लिए निर्णायक साबित होगा। यदि ऐसा नहीं हुआ तो नगर बाजार अर्थव्यवस्था के बेहतर इंजन साबित नहीं हो पाएंगे। आज की जरूरत यह है कि नगर नवोन्मेष के प्रतिनिधि बनें। यह बात आर्थिक दुनिया पूरी तरह से स्वीकार कर रही है कि नगर हमारे 'इनीशिएबल फ्यूचर' हैं। आज वैश्विक अर्थव्यवस्था ही नहीं बल्कि वैश्विक जीवन भी शिफ्टिंग से गुजर रहा है। इसमें बाजार ही नहीं बल्कि नगर भी निर्णायक भूमिका में होंगे। यदि शहर असमर्थ साबित हुए तो शहरी अर्थव्यवस्थाएं प्रतियोगिता से बाहर होंगी और उस स्थिति में शहरों में मिसलीडिंग सोसाइटी आकार लेने में सफल हो जाएगी। यही कारण है कि वर्ष 2008 में ही संयुक्त राष्ट्र संघ ने घोषणा की थी कि शहरीकरण वैश्विक बदलाव का प्रमाण है और शहर इस नये युग के प्रतिनिधि हैं। इस दृष्टि से लखनऊ नगर निगम की बीएसई में उपस्थिति वास्तव में एक नये युग की परिचायक है।

186 सुधारों से देंगे नए रोजगार

औद्योगिक नजरिए से उत्तर प्रदेश में सबसे ज्यादा कानपुर, आगरा, मेरठ, मुजफ्फरनगर सहित अन्य कई जिलों में उद्योगों की अधिकतम वृद्धि दर रही है। 60-70 के दशक में उद्योग जगत के नजरिए से यूपी की एक अलग पहचान थी। यही कारण रहा कि यूपी के उत्पादों की देश के अलावा

विदेशों में भी अच्छी मांग थी। लेकिन, बदलते वक्त में यूपी का यह रुतबा खत्म होता चला गया और एक के बाद एक उद्योगों पर ताले लगने शुरू हो गए। जिसकी वजह से यूपी से दूसरे राज्यों में पलायन बढ़ने लगा। राज्य सरकार का आरोप है कि उद्योग संगठन समय-समय पर अपनी बातों को सरकार तक पहुंचाते रहे लेकिन कुछ खास उन्हें व्यवस्थाएं नहीं मिली। रोजगार के अवसर ना के बराबर थे, जिस कारण पलायन भी अपने शीर्ष पर रहा। योगी आदित्यनाथ साढ़े तीन साल से सत्ता में काबिज हैं। योगी सरकार के मुताबिक उस समय 36 हजार करोड़ की 86 लाख लघु और सीमांत किसानों की कर्जमाफी और करीब 36 हजार करोड़ की ही सातवें वेतन आयोग की देनदारी थी। अब इससे उबारने के लिए योगी सरकार का दावा है कि वो चरणबद्ध तरीके से काम कर रही है और करीब दर्जन भर अलग-अलग विभागों की नीतियां बनाई गई है। राज्य सरकार के मुताबिक विभिन्न क्षेत्रों में रिकॉर्ड 186 सुधारों को लागू किया गया है।

कोविड 19 के दौरान ही सरकार एक तरफ जहां वायरस से लड़ी और प्रदेश के लोगों को सुरक्षित व स्वस्थ रखने की सफल व्यूह रचना बनायी वहीं दूसरी तरफ निवेश हेतु एक स्वस्थ वातावरण निर्मित करने के लिए बहुत सी नई नीतियों को अपनाया। इंडस्ट्रियल इनवेस्टमेंट एंड एम्प्लायमेंट प्रोमोशन पालिसी 2017 की शुरूआत के साथ सरकार ने पालिसी ओरिएंटेड गवर्नेंस मैकेनिज्म अपनायी जो कि इंटरप्रेन्योरशिप, इनोवेशन और मेक इन यूपी में निर्णायक भूमिका निभा रही है। पोस्ट कोविड काल में अर्थव्यवस्था को गति देने और निवेश प्रोत्साहन के लिए सरकार नई नीतियां लागू की गयी हैं। इनमें प्रमुख है ÷पोस्ट कोविड-19 एक्सीलिरेटेड इनवेस्टमेंट प्रोमोशन पालिसी फार बैकवर्ड रीजन्स 2020÷ जिसके तहत राज्य सरकार पूर्वांचल, मध्यांचल और बुंदेलखंड क्षेत्रों को विकास के केंद्र के रूप में स्थापित करने के लिए नई औद्योगिक इकाइयों को फास्ट ट्रैक मोड पर आकर्षक इंसेंटिव दे रही है।

उत्तर प्रदेश में बदलते बिजनेस एनवायरमेंट का ही परिणाम है कि निवेशकों के लिए उत्तर प्रदेश पसंदीदा अब स्थान बन रहा है। कोरोना महामारी के दौरान भी, 52 राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय कंपनियों ने यूपी में रुचि दिखाई है और लगभग 45,000 करोड़ रुपये का निवेश किया है। इनमें वॉन वेलिक्स, माक सॉफ्टवेयर, एकग्रेट इंक, एडिसन मोटर्स, याजाकी, और कुछ घरेलू कंपनिया जैसे कि हीरानंदानी ग्रुप, ब्रिटानिया, डिक्सन टेक्नोलॉजीज आदि शामिल हैं। इससे पहले, लखनऊ में फरवरी 2018 में आयोजित इन्वेस्टर्स समिट के दौरान, 4.52 लाख करोड़ रुपये के समझौता (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए गए थे।

बिहार में राजनीति चरम पर

“ पिछले 15 सालों से सत्ता से बाहर रह रही राष्ट्रीय जनता दल के वरिष्ठ नेताओं को लगता है कि लगातार सत्ता से दूर रहने के कारण आने वाले समय में पार्टी का वोट बैंक कमजोर होगा। क्योंकि उन्हें लगेगा कि अब राजद का सत्ता में आना मुश्किल है। ऐसे में बहुत से नेता व कार्यकर्ता राजद छोड़कर दूसरे दलों की तरफ जाने लगेंगे। इसी को रोकने के लिए ही राजद के बड़े नेता ऐसी बयानबाजी कर रहे हैं जिससे पार्टी के कार्यकर्ताओं को लगे कि राजद शीघ्र ही सत्ता में आने वाली है।

राष्ट्रीय जनता दल के संस्थापक राष्ट्रीय अध्यक्ष व बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री लालू प्रसाद यादव चारा घोटाले में रांची की जेल में सजा काट रहे हैं। ऐसे में पार्टी का नेतृत्व उनके छोटे पुत्र तेजस्वी यादव के हाथों में है। पिछले लोकसभा व विधानसभा चुनाव में लालू यादव के जेल में रहने के कारण राजद के सभी फैसले तेजस्वी यादव कर रहे हैं। पिछले महीने संपन्न हुए बिहार विधानसभा के चुनाव में राजद नेता तेजस्वी यादव को पूरा भरोसा था कि इस बार बिहार की सत्ता उनके हाथों में होगी और वह प्रदेश के मुख्यमंत्री बन जाएंगे। मगर चुनावी नतीजों के बाद नीतीश कुमार फिर से एक बार एनडीए गठबंधन के मुख्यमंत्री बनने में सफल हो गए। ऐसे में तेजस्वी यादव सहित राजद के सभी नेताओं को लगने लगा कि बिहार की सत्ता दिनोंदिन उनसे दूर होती जा रही है। 2019 के लोकसभा चुनाव में राजद शून्य पर आउट हो गई थी। वहीं इस बार के विधानसभा चुनाव में भी पिछली बार की 80 सीटों की तुलना में राजद को 75 सीटें ही मिल पाई।

राष्ट्रीय जनता दल पार्टी (राजद) के नेताओं को कैसे भी बिहार की सत्ता चाहिए। इसके लिए पार्टी के नेता सब कुछ करने को तैयार हैं। हाल ही में राजद नेता व पूर्व विधानसभा अध्यक्ष उदय नारायण चौधरी ने नीतीश कुमार को भाजपा छोड़कर राजद के साथ मिलकर सरकार बनाने का सुझाव दिया था। वहीं राजद नेता श्याम रजक तो जनता दल यू के 17 विधायकों के शीघ्र ही राजद में शामिल होने की घोषणा करते घूम रहे हैं। राजद के कुछ नेता बिहार में शीघ्र ही नीतीश सरकार के गिरने की भविष्यवाणी कर रहे हैं। इन सब बयानों से लगता है कि पिछले 15 वर्षों से सत्ता से दूर राजद नेताओं का मन सत्ता पाने को बेहद ललचा रहा है।

बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री लालू प्रसाद यादव चारा घोटाले में रांची की जेल में सजा काट रहे हैं। ऐसे में राजद का नेतृत्व उनके छोटे पुत्र तेजस्वी यादव के हाथों में है। पिछले लोकसभा व विधानसभा चुनाव में लालू यादव के जेल में रहने के कारण राजद के सभी फैसले तेजस्वी यादव कर रहे हैं।

2015 के विधानसभा चुनाव में नीतीश कुमार ने एनडीए से अलग होकर राजद से गठबंधन कर चुनाव लड़ा था। महागठबंधन की सरकार में नीतीश कुमार को मुख्यमंत्री व लालू प्रसाद यादव के छोटे बेटे तेजस्वी यादव को उप मुख्यमंत्री बनाया गया था। लालू प्रसाद के बड़े बेटे तेज प्रताप यादव को कैबिनेट मंत्री बनाया गया था। मगर 20 महीने बाद ही नीतीश कुमार राजद से गठबंधन तोड़कर फिर से एनडीए के साथ मिलकर मुख्यमंत्री बन गए। 20 महीने के कार्यकाल में ही नीतीश कुमार ने लालू प्रसाद यादव व उनके परिवारजनों के कारनामों से तंग आकर उनसे अलग होना ही बेहतर समझा था।

नवंबर 2020 के विधानसभा चुनाव में राजद ने 144 सीटों पर चुनाव लड़कर 75 सीटें जीतीं तथा उसे 23.11 प्रतिशत यानी 97 लाख 36 हजार 242 वोट मिले थे। 2015 के विधानसभा चुनाव में राजद ने जेडीयू, कांग्रेस के गठबंधन में 101 सीटों पर चुनाव लड़ कर 80 सीटें जीती थीं। राजद को 18.35 प्रतिशत यानि 69 लाख 95 हजार 509 वोट मिले थे। 2010 के विधानसभा चुनाव में राजद ने 168 विधानसभा सीटों पर चुनाव लड़कर मात्र 22 सीटें जीती थीं। उसे 18.84 प्रतिशत यानि 54 लाख 75 हजार 656 वोट मिले थे। 2005 के विधानसभा चुनाव में राजद ने 175 सीटों पर चुनाव लड़कर 54 सीटें जीती थीं। पार्टी को 23.45 प्रतिशत यानि 55 लाख 25 हजार 81 वोट मिले थे।

2019 के लोकसभा चुनाव में राजद एक भी सीट जीतने में सफल नहीं हुआ। उसे 15.36 प्रतिशत वोट मिले थे। 2014 के लोकसभा चुनाव में राजद ने 27 सीटों पर चुनाव लड़कर 4 सीटें जीती थीं। पार्टी को 20.13 प्रतिशत यानि 72 लाख 24 हजार 893 वोट मिले थे। 2009 में राजद ने 28 सीटों पर चुनाव लड़कर 4 सीटें जीती थीं। उसे 19.31 प्रतिशत यानि 46 लाख 78 हजार 880 वोट मिले थे। 2004 के लोकसभा चुनाव में राजद ने 26 सीटों पर चुनाव लड़कर 22 सीटें जीती थीं। पार्टी को 30.67 प्रतिशत यानि 89 लाख 94 हजार 821 वोट मिले थे। उपरोक्त आंकड़ों का विश्लेषण करें तो पता चलता है कि लालू प्रसाद यादव ने जनता दल से अलग होकर 5 जुलाई 1997 को राष्ट्रीय जनता दल का गठन किया था। उस समय बिहार से झारखंड अलग नहीं हुआ था तथा पूरे बिहार में लालू यादव की तूती बोलती थी। राष्ट्रीय जनता दल के गठन के मात्र 20 दिन बाद ही लालू प्रसाद यादव को चारा घोटाले में जेल जाना पड़ा था। मगर उस वक्त उनका इतना जलवा था कि उन्होंने अपने स्थान पर पार्टी के किसी अन्य वरिष्ठ नेता की बजाए अपनी पत्नी राबड़ी देवी को मुख्यमंत्री बना दिया था। राष्ट्रीय जनता दल पार्टी बिहार में लालू प्रसाद की पारिवारिक पार्टी बनकर रह गई है।

कोरोना के बाद बर्ड फ्लू का कहर

कोविड-19 और उसके नए स्ट्रेन के भारत पहुंचने को लेकर देश की चिंताएं अभी थमी भी न थीं कि बर्ड फ्लू से जुड़ी खबरों ने देशवासियों को एक नई उलझन में डाल दिया है। मध्य प्रदेश के इंदौर, मंदसौर और राजस्थान के झालावाड़ से पक्षियों के मरने की खबर और जांच में उनमें एच5एन1 वायरस की पुष्टि के बाद अब इसका दायरा हिमाचल से लेकर केरल तक फैल चुका है। हिमाचल में बड़ी संख्या में प्रवासी पक्षी इन दिनों पोंग डैम झील में उतरते हैं, अब तक वहां लगभग 1,800 ऐसे पक्षियों के मरने की सूचना है। केरल में अलप्पुझा और कोट्टायम जिलों में मृत बत्तखों में एच5एन1 की पुष्टि के बाद सभी जिलों को अलर्ट कर दिया गया है। अब तो वहां इसे आपदा घोषित कर दिया गया है और राज्य में कंट्रोल रूम सक्रिय भी हो गए हैं। केरल की इस तत्परता की सराहना की जानी चाहिए।

बर्ड फ्लू कोई नई आपदा नहीं है, लेकिन इसकी प्रकृति को देखते हुए यह वक्त बहुत खतरनाक है। यह वायरस कितना घातक है, इसका अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि इंसान के इससे संक्रमित होने के बाद मृत्यु-दर लगभग 60 फीसदी आंकी गई है। इंसान से इंसान में आसानी से संचरण की प्रकृति भी इसको खतरनाक बनाती है, इसीलिए विश्व स्वास्थ्य संगठन दुनिया भर के देशों को इसे लेकर आगाह करता रहता है कि ऐसी कोई भी नौबत सार्वजनिक स्वास्थ्य के लिए बेहद गंभीर साबित होगी। संतोष की बात है, अभी पोल्ट्री फॉर्म के स्तर पर किसी तरह के संक्रमण की सूचना नहीं मिली है, मगर केंद्र समेत तमाम राज्य सरकारों को अपनी निगरानी बढ़ानी होगी। स्वाभाविक रूप से सर्दियों में पोल्ट्री उत्पादों की खपत काफी बढ़ जाती है और ऐसे में कोई भी लापरवाही भारी साबित हो सकती है। वैसे भी, जिस मोड़ पर दुनिया खड़ी है, वहां इलाज से बेहतर एहतियात का सूत्र ही अभी कारगर साबित हो रहा है। किसी भी प्रकार की दहशत में आए बिना सरकार और तंत्र के लिए यह जरूरी है

कि लोगों को बर्ड फ्लू के बारे में जागरूक किया जाए। डब्ल्यूएचओ के मुताबिक, यदि पोल्ट्री उत्पादों को 70 डिग्री सेल्सियस से अधिक तापमान में अच्छी तरह से पकाकर खाया जाए, तो वह भोजन सुरक्षित है। कच्चे या अधपके मांसाहार के लिहाज से यह वायरस विशेष रूप से चिंताजनक है। भारत में भी खान-पान के मामले में नित नए-नए प्रयोग होने लगे हैं, इसलिए सावधानी की जरूरत अब पहले से कहीं ज्यादा है। हमारा स्वास्थ्य ढांचा कोरोना महामारी के कारण पहले ही काफी दबाव में है। देश इस समय इसके टीकाकरण अभियान की तैयारियों में जुटा है। ऐसे में, बर्ड फ्लू की चुनौती को गंभीरता से लिए जाने की जरूरत है। प्रशासनिक चौकसी से जुड़े लोगों के साथ-साथ नागरिक समाज, खासकर पोल्ट्री उद्योग से जुड़े लोगों की यह जिम्मेदारी है कि पक्षियों की असामान्य मौत की सूचना वे तुरंत अधिकृत विभाग को दें। देश को उनकी सतर्कता, तत्परता और कर्तव्यपरायणता की इस वक्त सबसे अधिक जरूरत है। कोरोना के प्रकोप से हम पहले ही जान-माल का काफी नुकसान उठा चुके हैं, और अब किसी तरह की कोई भी भूल अपराध ही कहलाएगी।

प्रदेश में बेटी बचाओ अभियान को नए सिरे से चलाया जाएगा :शिवराज

मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा है कि प्रदेश में बेटी बचाओ अभियान को नए सिरे से चलाया जाएगा। इसके अंतर्गत बच्चियों के जन्म से लेकर उनकी शिक्षा, सुरक्षा तथा सशक्तीकरण हर पहलू पर ध्यान दिया जाएगा। मध्यप्रदेश की पोषण नीति तैयार है, जिसे शीघ्र ही अंतिम रूप दिया जाएगा।

मध्यप्रदेश देश का पहला राज्य है जिसने गंभीर कुपोषित बच्चों का एकीकृत प्रबंधन कार्यक्रम राज्य में लागू किया है। हम कुपोषण को पूरी तरह समाप्त करेंगे। हमारा ध्येय है पोषित परिवार-सुपोषित मध्यप्रदेश। मुख्यमंत्री श्री चौहान मंत्रालय में महिला एवं बाल विकास विभाग के कार्यों की समीक्षा कर रहे थे। बैठक में मुख्य सचिव श्री इकबाल सिंह बैंस, प्रमुख सचिव श्री अशोक शाह और प्रमुख सचिव श्री मनोज गोविल उपस्थित थे।

बच्चों का कुपोषण दूर करने के सघन प्रयास

मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि प्रदेश में बच्चों का कुपोषण दूर करने के लिए सघन प्रयास किए जा रहे हैं। इसके अंतर्गत उनका नियमित रूप से वजन लिए जाना, पोषण आहार प्रदाय, सामान्य कुपोषित बच्चों का समुदाय स्तर पर उपचार एवं पोषण प्रबंधन, अतिरिक्त पोषण आहार प्रदाय, गंभीर कुपोषित बच्चों का पोषण पुनर्वास केन्द्रों पर उपचार एवं देखभाल आदि कार्य किए जा रहे हैं। पोषण सेवाओं की मॉनीटरिंग के लिए श्पोषण डैशबोर्डश् तैयार किया गया है।

पोषण स्तर में सुधार होने पर प्रोत्साहन

मुख्यमंत्री श्री चौहान ने बताया कि श्पोषित परिवार-सुपोषित मध्यप्रदेशश् कार्यक्रम के अंतर्गत गंभीर कुपोषण वाले बच्चों के पोषण स्तर में सुधार होने पर परिवार को प्रोत्साहन राशि दी जाती है तथा सम्मान किया जाता है।

पूरी ताकत से रोकेंगे महिला अपराध

मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा है कि मध्यप्रदेश में अपराधियों पर अंकुश लगाने का कार्य पूरी ताकत से किया जाएगा। आम लोगों को कानून के राज का एहसास करवाया जाएगा। गत 08 माह में अपराधियों के विरूद्ध की जा रही सख्त कार्यवाही का परिणाम है कि विभिन्न तरह के अपराधों में 15 से लेकर 50 प्रतिशत तक की कमी आयी है। बालिकाओं और महिलाओं से जुड़े अपराधों में लिप्त लोग नरपिशाच हैं। उन्हें किसी भी स्थिति में न छोड़ा जाए। बलात्कारियों को तो फाँसी ही मिलना चाहिए। प्रदेश में गुम बालिकाओं के संबंध में विस्तार से समीक्षा की गई है। अपहृत बच्चे की बरामदगी के लिए चैकलिस्ट के अनुसार कार्यवाही होगी। परिजनों को एक रिकार्ड पत्र दिया जाएगा जिसमें पुलिस द्वारा की जा रही विवेचना का विस्तृत विवरण होगा। अधिकार पत्र में जानकारी रहेगी कि कितने दिनों में क्या-क्या कार्यवाही की गई है। इस व्यवस्था में अब अपहृत होने वाले बच्चे के परिजन के साथ प्रत्येक 15 दिन में थाना प्रभारी और प्रत्येक 30 दिन में एसडीओपी केस डायरी के साथ बैठेंगे। इसमें यह सुनिश्चित किया जाएगा कि अधिकार पत्र के अनुसार कार्यवाही हुई है अथवा नहीं। मुख्यमंत्री श्री चौहान मिंटो हॉल में प्रदेश-स्तरीय सम्मान अभियान का शुभारंभ कर रहे थे। इस अभियान का उद्देश्य महिला अपराध के उन्मूलन में समाज की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करना, महिलाओं और बालिकाओं के लिए सम्मानजनक एवं अनुकूल वातावरण तैयार करना और आम लोगों को कानूनी प्रावधानों के प्रति इस तरह जागरूक करना है कि वे महिला सुरक्षा के प्रति अपनी जिम्मेदारी को निभा सकें। कार्यक्रम में गृह विभाग के साथ ही अभियान में सहयोगी महिला एवं बाल विकास और जनसंपर्क विभाग के वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने प्रदेश के 6 साहसी नागरिकों को

उनके जिलों के कलेक्टर, एस.पी. के माध्यम से प्रशंसा पत्र भी प्रदान किए। इन नागरिकों द्वारा विभिन्न अपराधियों को पकड़वाने में भूमिका निभाई गई। गृह मंत्री डॉ. नरोत्तम मिश्र ने कहा कि मुख्यमंत्री श्री चौहान के नेतृत्व में प्रदेश में कानून व्यवस्था की स्थिति को मजबूत बनाया गया है। अब महिला अपराधों में कमी आ रही है। पंचायतों, नगरीय निकायों, शिक्षण संस्थानों और पुलिस बल में महिलाओं की भागीदारी से उनकी शक्ति बढ़ी है। विकृत मानसिकता वाले लोगों के विरूद्ध निरंतर कदम उठाए जा रहे हैं। हमारी संस्कृति नारियों के सम्मान को प्रमुखता देती है। महिलाओं के सम्मान को आंच पहुंचाने वाले बख्शे नहीं जाएंगे।

ऊर्जा हानियों का स्तर कम किया जाए : ऊर्जा मंत्री तोमर

मध्यप्रदेश के ऊर्जा मंत्री प्रद्युम्न सिंह तोमर ने राष्ट्रीय ऊर्जा संरक्षण सप्ताह के अंतर्गत उपभोक्ताओं को जागरूक करने के लिए संदेश देते हुए कहा है कि ऊर्जा हमारे जीवन की अनिवार्य आवश्यकता है। ऊर्जा ने विभिन्न रूपों में हमारी जीवन-शैली में महत्वपूर्ण स्थान बना लिया है आधिकारिक जानकारी में तोमर ने कहा कि इन विभिन्न रूपों में बिजली ऊर्जा का वह प्रकार है, जो सबको सुगमता से हर कहीं उपलब्ध और सुलभ है। यही कारण है कि ऊर्जा के विभिन्न स्त्रोतों को भी बिजली के रूप में बदलकर उसका उपयोग प्रकाश, यातायात, आवास, स्वास्थ्य, शिक्षा, उद्योग, कृषि जैसी मूलभूत आवश्यकताओं के साथ मनोरंजन, दूरसंचार एवं पर्यटन जैसे सुख-साधन में भी किया जा रहा है। यह संदेश जारी किया है। ऊर्जा मंत्री ने कहा कि वैश्वीकरण के दौर में हमारी जीवन-शैली में तेजी से बदलाव हो रहा है। उदाहरण के रूप में जो काम हम दिन के उजाले में सरलता से कर सकते हैं उन्हें भी हम देर रात तक बिजली की व्यवस्था करके करते हैं। और तो और हम अपने कार्यालयों में बड़े-बड़े पर्दे लगाकर प्राकृतिक प्रकाश में काम करने के बजाए बिजली का उपयोग प्रकाश के लिए कर रहे हैं। हमारी दिनचर्या इस प्रकार बदलती जा रही है कि ऊर्जा की मांग भी दिन-प्रतिदिन बढ़ रही है। तोमर ने बताया कि एक अनुमान के अनुसार विद्युत के गुणवत्तापूर्ण उपयोग तथा उचित प्रबंधन और अनावश्यक उपयोग पर अंकुश लगाकर औद्योगिक क्षेत्र में 20 से 25 प्रतिशत, कृषि क्षेत्र में 25 से 30 प्रतिशत तथा घरेलू एवं वाणिज्यिक क्षेत्र में 15 से 20 प्रतिशत तक बिजली की बचत की जा सकती है। यदि हम ऊर्जा हानियों में कमी ला सकें और उपभोक्ताओं को ऊर्जा संरक्षण के लिए प्रेरित कर सकें, तो प्रदेश का हित ऊर्जा क्षेत्र में और अधिक कर सकते हैं।

सत्ता में आने पर प.बंगाल में भी लव जिहाद के खिलाफ कानून लाएगी भाजपा : मिश्रा

मध्य प्रदेश में धर्म स्वातंत्र्य अध्यादेश लाने के बाद अब बीजेपी पश्चिम बंगाल में भी लव जिहाद के खिलाफ कानून बनाएगी. बशर्ते वहां अगले चुनाव में पार्टी सत्ता में आ जाए.रक्कमें कल ही राज्यपाल ने लव जिहाद अध्यादेश को मंज़ूरी दी है. मध्य प्रदेश में लव जिहाद पर कानून बनाने वाली बीजेपी सरकार अब इसे पश्चिम बंगाल में कैश कराने की तैयारी में जुट गई है. षड्यंत्र या जबरिया विवाह कर धर्म बदलवाने के मामले में सख्त कानून बनाने वाली प्रदेश की बीजेपी सरकार अपने इस फैसले का ममता के राज्य पश्चिम बंगाल में प्रचार करेगी. प्रदेश के गृह मंत्री नरोत्तम मिश्रा ने ऐलान किया है कि पश्चिम बंगाल में बीजेपी सत्ता में आते ही एमपी की तर्ज पर लव जिहाद के खिलाफ धर्म स्वातंर्त्य कानून लाएगी. पश्चिम बंगाल में जबरिया या फिर साजिश के तहत धर्म बदलवाने वालों के खिलाफ कानून बनाया जाएगा. मिश्रा ने कहा पश्चिम बंगाल में सत्ता में आते ही एमपी की तर्ज पर पश्चिम बंगाल में गौ कैबिनेट भी बनायी जाएगी. राज्य की गायों को सुरक्षा देने के लिए गौ कैबिनेट का गठन कर बड़े फैसले लिए जाएंगे. गृह मंत्री नरोत्तम मिश्रा पश्चिम बंगाल मैं बीजेपी के प्रभारी भी हैं और इन दिनों पश्चिम बंगाल में पार्टी को मजबूती देने में जुटे हुए हैं. यही कारण है कि मध्य प्रदेश में लव जिहाद के खिलाफ सख्त कानून बनाने के बाद अब इसका प्रचार ममता के राज्य में किया जा रहा है. ताकि बीजेपी पश्चिम बंगाल में अपनी हिंदुत्व की छवि को पेश कर पार्टी को मजबूती दे सके.

ग्रामों के विकास से ही प्रदेश एवं देश का विकास होगा : भदौरिया

भिण्ड। मध्य प्रदेश सरकार के सहकारिता एवं लोक सेवा प्रबंधन मंत्री अरविन्द सिंह भदौरिया ने शनिवार अटेर क्षेत्र की ग्राम पंचायत जौरी कोतवाल, किशूपुरा, नखनौली, सुरपुरा एवं क्यारीपुरा में 77 लाख से अधिक राशि के कई कार्यों का लोकार्पण, शिलान्यास एवं भूमिपूजन किया। साथ ही उन्होंने प्रदेश सरकार की योजनाओं के पात्र अनेक हितग्राहियों को हितलाभ भी वितरित किये। सहकारिता एवं लोक सेवा प्रबंधन मंत्री अरविन्द सिंह भदौरिया ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि ग्रामों के विकास से ही प्रदेश एवं देश का विकास होगा। प्रदेश सरकार अपनी विभिन्न योजनाओं के माध्यम से ग्रामों के विकास की ओर कार्य, चाहे वो ग्रामों को पक्की सड़क से जोड़ना हो, ग्रामों का विद्युतीकरण हो, किसानो के लिए अनेक योजनाओं से किसान को समृद्ध बनाने की बात हो, प्रदेश सरकार इस ओर लगातार कार्य कर रही है। मंत्री डॉ भदौरिया ने बताया कि प्रदेश सरकार की विभिन्न योजना जैसे लाड़ली लक्ष्मी, आयुष्मान भारत, सीएम किसान सम्मान निधि, संबल योजना आदि के माध्यम से आमजन को विभिन्न प्रकार के लाभ प्रदान कर उनके जीवन को बेहतर बनाकर उनका विकास कर रही है। मंत्री ने कहा कि प्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान की सरकार किसान भाइयों के प्रति बेहद संवेदनशील है एवं उनके हित के प्रति सदैव कार्यरत है। सहकारिता मंत्री डॉ भदौरिया ने किसानों

के लिये बनाए गए नवीन कृषि कानूनों के बारे में किसान भाईयों को जानकरी प्रदान की। उन्होंने बताया कि केंद्र सरकार ने नवीन कृषि कानून बनाकर उन्हें बंधे-बंधाये रूटीन से आजादी प्रदान की है। उन्होंने कहा कि किसान अब अपनी क्षमता के अनुरूप उपज का भण्डारण कर सकता है। कॉन्टेक्ट फार्मिंग के जरिये अच्छे से अच्छा लाभ लेकर अपनी फसल का अनुबंध कर सकता है और तीसरे कानून के तहत किसान अपने उत्पादों को कहीं भी जाकर बेच सकता है। मंत्री डॉ भदौरिया ने कहा कि जो लोग इन कानूनों का विरोध कर रहे हैं वे असल में किसान विरोधी हैं। उन्होंने कहा कि किसानों के हित में केन्द्र एवं राज्य सरकार सदैव खड़ी है। मंत्री डॉ भदौरिया ने बताया कि इस वर्ष मध्य प्रदेश में गेहूं उपार्जन में देश में सबसे ज्यादा गेहूं का उपार्जन किया है। सहकारिता एवं लोकसेवा विभाग के मंत्री डॉ अरविन्द सिंह भदौरिया ने आयोजित कार्यक्रमों में प्रदेश सरकार की विभिन्न योजनाओं के हितग्राहियों को हितलाभ वितरित किए जैसे लाड़ली लक्ष्मी, आयुष्मान भारत योजना, आयुष्मान भारत कार्ड, वरद्धावस्था पेंशन एवं कल्याणी पेंशन आदि।

भाजपा प्रदेश कार्यकारिणी में एससी-एसटी व ओबीसी की संख्या अधिक रहेगी

बीजेपी की प्रदेश कार्यसमिति में नियुक्तियों को लेकर इंतजार अब खत्म होता हो गया है। कैबिनेट विस्तार के साथ प्रदेश अध्यक्ष वीडी शर्मा भी अपनी टीम का ऐलान कर देंगे। प्रदेश अध्यक्ष रविवार को देर शाम मुख्यमंत्री शिवराज सिंह, प्रदेश संगठन महामंत्री सुहास भगत और संगठन सह महामंत्री हितानंद शर्मा के साथ बैठक कर नामों को फाइनल करेंगे। इसके बाद प्रदेश कार्यकारिणी सूची जारी की जाएगी। पार्टी सूत्रों का कहना है कि प्रदेश कार्यकारिणी में एससी-एसटी और ओबीसी के ज्यादा लोगों को जगह दी जाएगी। ऐसे में सांसद ज्योतिरादित्य सिंधिया के खेमे से केवल 3-4 लोगों को एडजस्ट किया जाएगा। इसमें एक-दो प्रवक्ता व एक चेहरा संगठन में होगा। पंकज चतुर्वेदी के साथ विधायक मनोज चौधरी और रक्षा सिरोनिया को संगठन में लेने के लिए संगठन तैयार है, लेकिन सिंधिया खेमा दोनों विधायकों को मंत्री बनवाना चाहता है। कैबिनेट विस्तार में केवल तुलसी

सिलावट और गोविंद सिंह राजपूत को लिया गया है। सिंधिया खेमे के अन्य नेताओं पर रविवार को होने वाली बैठक में इस अंतिम निर्णय होगा। संगठन में जातिगत समीकरण को ध्यान में रखकर संगठन में नियुक्ति पर ज्यादा फोकस किया गया है। इसके मद्देनजर सिंधिया के समर्थकों को कार्यसमिति में कम ही जगह मिलेगी, उन्हें मोर्चों में एडजस्ट किया जाएगा। दिल्ली ने प्रदेश संगठन को साफ कर दिया है कि बहुत अधिक मजबूरी या विवशता न हो तो टीम में 55 वर्ष से अधिक उम्र का व्यक्ति न लिया जाए। इस क्राइटेरिया के आने के बाद अब प्रदेश में टीम के गठन पर चल रहा गतिरोध थम गया है। दरअसल, यहां कई सीनियर नेता दबाव बना रहे थे कि उन्हें मंत्रिमंडल में नहीं लिया गया तो कम से कम संगठन में सम्मान मिले। इसमें पूर्व मंत्री व तीन से चार बार के विधायक हैं।

गहलोत ने की गडकरी की तारीफ, कहा आप कमिटमेंट के साथ कर रहे हैं काम

जयपुर. सीएम अशोक गहलोत ने मोदी सरकार के मंत्री नितिन गडकरी की जमकर तारीफ की है. सीएम गहलोत ने गडकरी से कहा कि जब से आपने मंत्रालय संभाला है आप कमिटमेंट के साथ काम कर रहे हैं. सीपी जोशी और गजेंद्र सिंह शेखावत ने जो समस्याएं और मांगें रखी, वही जोधपुर संभाग की मांगें हैं. जोधपुर में एलिवेटेड रोड को लेकर आप जितने विस्तार में गए हैं उनसे मैं बहुत प्रभावित हूं. गहलोत ने कहा कि आपने हमारे 25 सांसदों द्वारा उठाई गई मांगों का ब्यौरा भी रखा. आप भेदभाव नहीं करते. भेदभाव होना भी नहीं चाहिए. क्योंकि समय कभी किसी का इंतजार नहीं करता. सरकारें आती-जाती रहती हैं. कलम विकास के लिए जितनी चल जाए वह अच्छा है. आप जो कह रहे हैं, उसी भावना से आप काम भी कर रहे हैं. सीएम गहलोत ने गडकरी की यह तारीफ गुरुवार को 18 हाई-वे प्रोजेक्ट्स का वर्चुअल लोकर्पण शिलान्यास समारोह में की. इस दौरान सीएम गहलोत ने कहा कि राजस्थान अब पहले वाला नहीं रहा है. हम पहले खराब सड़कों के लिए बदनाम थे रेत से पटी कच्ची सड़कें होती थी. गुजरात से चलकर जब उबड़-खाबड़ सड़क आ जाती थी तो समझो राजस्थान आ गया. लेकिन अब सड़कें अच्छी बन गई हैं. इस मौके पर सीएम अशोक गहलोत ने नितिन गडकरी से की मांग करते हुये कहा कि जयुपर-दौसा लिंक को दिल्ली मुंबई एक्सप्रेस-वे से जोड़ा जाये. जोधपुर से पचपदरा सिक्स लेन हाई-वे बनाएं ताकि रिफाइनरी प्रोजेक्ट उससे जुड़ सकें. सीएम ने कहा कि जयपुर-दिल्ली रोड का पता नहीं किस मुहुर्त में शिलान्यास हुआ है. इस हाईवे का काम अभी तक भी अटका पड़ा है. जयपुर दिल्ली हाईवे के काम को जल्द पूरा करवायें. गहलोत ने दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेस-वे के समानांतर लॉजिस्टिक पार्क विकसित करने की पहल स्वागत योग्य बताया.

शहरवासियों को नववर्ष एवं मकर संक्रांति की
हार्दिक शुभकामनाएं

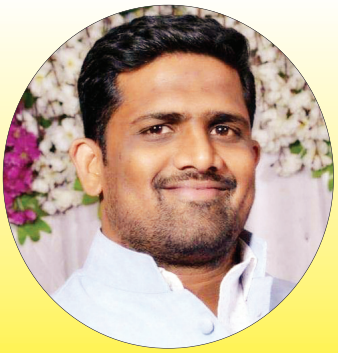

बलवीर तोमर, पार्षद वार्ड 19

अवधेश तोमर
जिलाध्यक्ष, युवा मोर्चा भाजपा

अंकुर सिंह
समाजसेवी

नगरवासियों को नववर्ष एवं मकर संक्रांति पर्व की हार्दिक शुभकामनाएं

नववर्ष 2021

राजेश राठौर
यूनिवर्सल डे बॉर्डिंग एकेडमी
पिन्टू पार्क, ग्वालियर

कमलनाथ का ऐलान- कृषि कानूनों के खिलाफ कांग्रेस का किसान सम्मेलन

देश में जारी किसान आंदोलन के बीच कांग्रेस ने भाजपा पर बड़ा हमला बोला है. पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ ने कहा है कि केंद्र सरकार का नया कृषि कानून स्स्क्कखत्म करने वाला है. केंद्र कृषि क्षेत्र का निजीकरण कर रही है. इसके खिलाफ कांग्रेस 16 जनवरी से छिंदवाड़ा में किसान सम्मेलन आयोजित करेगी. इसके बाद एक बड़ा सम्मेलन 20 जनवरी को होगा. पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ ने गुरुवार को मीडिया को संबोधित किया. उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार किसानों को खत्म करने का काम कर रही है. केंद्र सरकार के कानून की बुनियाद कमजोर है. उन्होंने कहा कि इस कानून का केवल हम ही विरोध नहीं करे रहे, बल्कि ह्रष्ठ के घटक दल भी कर रहे हैं पूर्व मुख्यमंत्री ने कहा कि मध्य प्रदेश देश में सबसे ज्यादा गेहूं पैदा करने वाला राज्य है. केंद्र सरकार के इस कानून से कॉन्ट्रेक्ट फॉर्मिंग के लिए किसान मजबूर हो जाएगा. अभी प्रदेश में 20 फीसदी लोगो को ही स्स्क्क का फायदा मिलता है. इससे सबसे ज्यादा मध्य प्रदेश के किसान प्रभावित होंगे. इसलिए किसानों को जागरूक करने के लिए किसान सम्मेलन की शुरुआत 16 जनवरी से छिंदवाड़ा में होगी और फिर एक बड़ा सम्मेलन 20 जनवरी को होगा. दिल्ली जाने के सवाल पर कमलनाथ ने कहा कि वे कहीं नहीं जाएंगे. मध्य प्रदेश ही उनकी कर्मभूमि है. कमलनाथ ने आराम करने के मामले पर कहा कि फिलहाल उनकी ऐसी कोई योजना नहीं है.

शिवपुरी कलेक्टर ने नवजात बालिकाओं का किया स्वागत

शिवपुरी। पूरे प्रदेश के साथ ही जिले में भी सोमवार को जन जागरूकता अभियान सम्मान का शुभारंभ किया गया। इस अवसर पर कलेक्टर अक्षय कुमार सिंह ने जिला चिकित्सालय का भ्रमण किया और जन्म लेने वाली नवजात बालिकाओं का स्वागत किया। उन्होंने बालिकाओं की माताओं को शॉल श्रीफल भेंट कर बालिकाओं का स्वागत किया। शक्तिपुरम कॉलोनी निवासी प्रियंका-नितेश बाथम, कांकेर निवासी सविता-घनश्याम और सेसई सड़क निवासी अनीता- अजीत जाटव के यहां सोमवार 11 जनवरी को बेटियों का जन्म हुआ है और इसी दिन जिले में महिलाओं के प्रति हो रहे अपराधों के उन्मूलन और महिला सुरक्षा के प्रति जन जागरूकता लाने और इसमें समुदाय की भागीदारी सुनिश्चित करने के उद्देश्य से सम्मान अभियान का शुभारंभ किया गया है। इस अवसर पर कलेक्टर अक्षय कुमार सिंह ने जिला चिकित्सालय में नवजात बालिकाओं का सम्मान कर अभियान का शुभारंभ किया और परिजनों को बधाई दी। इस दौरान महिला एवं बाल विकास विभाग के जिला कार्यक्रम अधिकारी देवेंद्र सुंद्रियाल, सिविल सर्जन पीके खरे, सीडीपीओ नीलम पटेरिया भी मौजूद थे।

श्योपुरः जिला चिकित्सालय में कलेक्टर के नेतृत्व में चलाया गया सफाई अभियान

श्योपुर। कलेक्टर राकेश कुमार श्रीवास्तव के नेतृत्व में जिला मुख्यालय श्योपुर स्थित जिला चिकित्सालय के क्षेत्र में विशेष सफाई अभियान आज संचालित किया गया। इस सफाई अभियान के अंतर्गत जिला चिकित्सालय के बाहर श्योपुर-शिवपुरी रोड पर कलेक्टर, जनप्रतिनिधि, स्वयंसेवी संगठनों एवं नागरिको के सहयोग से कतार बनाकर कचरे को नगरपालिका की गाडी में डालकर श्रमदान किया। साथ ही स्वच्छता की दिशा में झाडू लगाकर सफाई कार्य को अंजाम दिया। विशेष सफाई अभियान की कडी में 11 जनवरी 2021 को प्रातः 08 बजे से श्रीराम धर्मशाला -गुलम्बर से सफाई अभियान शुरू होगा। यह अभियान श्योपुर नगर के वार्ड क्र. 05 एवं 06 में संचालित किया जावेगा। कलेक्टर श्री राकेश कुमार श्रीवास्तव ने विशेष सफाई अभियान के दौरान जनप्रतिनिधि, स्वयंसेवी संगठनों एवं पत्रकारो से चर्चा करते हुए कहा कि सभी के सहयोग से जिला मुख्यालय स्थित नगरपालिका श्योपुर के क्षेत्र में विशेष सफाई अभियान संचालित किया जा रहा है।

यातायात सुधार के लिए आमजन का जागरुक होना जरूरीः आईजी

ग्वालियर। सिटी सेंटर स्थित पुलिस कन्ट्रोल रूम सभागार में आईजी अविनाश शर्मा एवं एसपी अमित सांघी ने यातायात जागरूकता संबंधी एक वीडियो फिल्म जारी की। यह फिल्म यातायात पुलिस ग्वालियर द्वारा अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक यातायात पंकज पाण्डेय के मार्गदर्शन में तैयार कराई गई है। इसका उद्धेश्य आम लोगों में यातायात के प्रति जागरूकता फैलाना है। इस अवसर पर आईजी शर्मा ने कहा कि यातायात पुलिस ग्वालियर का यह एक सराहनीय प्रयास है। यातायात सुधार के लिये आमजनता की सहभागिता भी आवश्यक है। केवल चालानी कार्यवाही से यातायात में सुधार लाना संभव नहीं है इसके लिये लोगों को भी अपनी जिम्मेदारी समझना होगी। तभी यातायात में सुधार हो सकेगा। एसी पी श्री सांघी ने इस अवसर पर कहा कि यातायात पुलिस ग्वालियर द्वारा तैयार कराई गई 39यार्ड वीडियो

फिल्म को जारी करने का उद्धेश्य आम लोगों में यातायात के प्रति जागरूकता फैलाना है। आज लोगों को यातायात के नियमों का पालन कर अपनी वअपने परिवार की सुरक्षा करनी चाहिए। इसी कड़ी में झांसी रोड पर वीडियो कोच बस स्टेण्ड प्रारम्भ कराया गया, मोतीमहल रोड को टू वे कर जाम से मुक्ति दिलाने के प्रयास किये गये। गोले का मन्दिर के पास मंगाराम फैक्ट्री के सामने बस स्टेण्ड प्रारम्भ किया गया। उन्होने बताया कि यातायात पुलिस यातायात के सुचारू संचालन के लिये कार्य कर रही है, लेकिन इसके लिये मीडिया व जनता का सहयोग अति आवश्यक है। कार्यक्रम में डीएसपी यातायात श्री नरेश बाबू अन्नोटिया, विक्रम सिंह कनपुरिया आदि उपस्थित थे।

महिला जागरूकता अभियान "सम्मान" का शुभारम्भ

भिण्ड। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान मध्यप्रदेश शासन द्वारा महिला जागरूकता अभियान ''सम्मान'' का शुभारम्भ राज्य स्तर से किया गया। जिसे सम्पूर्ण प्रदेश के जिलों में ऑनलाईन प्रसारित किया गया ''सम्मान'' उद्देश्य महिलाओं को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक करना, महिला अपराध को नियंत्रित कर समाप्त करने हेतु संभावित अपराधी को हतोत्साहित करना एवं समाज के विभिन्न तवको को साथ में लेकर महिला अपराध उन्मूलन हेतु सक्रिय भूमिका अदा करना है। जिला स्तर पर महिला अपराध उन्मूलन हेतु कलेक्टर श्री वीरेन्द्र सिंह रावत एवं पुलिस अधीक्षक श्री मनोज कुमार सिंह, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक श्री संजीव कुमार कंचन एवं समस्त जिला अधिकारियों को द्वारा कलेक्ट्रेट कार्यालय के सभागार में शपथ दिलाई जाकर हस्ताक्षर अभियान का शुभारंभ किया गया। जिला स्तर पर कार्यक्रम का शुभारंभ कलेक्टर श्री वीरेन्द्र सिंह रावत एवं पुलिस अधीक्षक श्री मनोज कुमार सिंह के द्वारा संयुक्त किया गया। जिसमें महिला जागरूकता एवं महिला अपराध को नियंत्रित करने हेतु जिला कार्यक्रम अधिकारी महिला एवं बाल विकास विभाग श्री अब्दुल गफ्फार द्वारा प्रस्तुत कार्य योजना पर विस्तृत विचार विमर्ष कर कार्य योजना का अनुमोदन किया गया।

देश की बेटी ने फिर लहराया परचम बनेगी भारतीय सेना में अफसर

ग्वालियर स्थित हजीरा पर रहने वाली तृप्ति पाल पुत्री श्री श्यामवीर सिंह पाल उम्र 18 वर्ष का सेना द्वारा आयोजित ्स्नस्ष्ट पुणे की प्रतिष्ठित नर्सिंग ऑफिसर की परीक्षा में चयन हुआ है। एन. डी. ए. की तर्ज पर ही 4 साल के प्रशिक्षण उपरांत तृप्ति पाल को भारतीय सेना में लेफ्टिनेंट का रैंक प्रदान किया जाएगा। जैसा कि विदित है अभी हाल ही में भारत सरकार ने महिलाओं के लिए स्थायी कमीशन का नियम पारित किया हैमूलत : उत्तर प्रदेश के एटा जिले के रहने वाली तृप्ति पाल के पिता श्री श्यामवीर सिंह पाल ग्वालियर में ही स्वास्थ्य विभाग में सेवारत हैं। तृप्ति की माँ श्री मति सुमन पाल ने दिल्ली विश्व विद्यालय से ग्रेजुएट किया हैं। उसके पश्चात एक विद्यालय में शिक्षक के रूप में कार्य किया। बच्चों के उज्ज्वल भविष्य , उनकी पढ़ाई

और परिवार की बेहतर देखभाल के लिए श्री मति सुमन पाल ने अपने शिक्षक जीवन को बीच मे ही छोड़ दिया। जीवन मे कई उतार चढ़ाव उन्होंने देखे। यह परिवार 30 वर्षो से ग्वालियर (हजीरा) में ही निवास कर रहा है। तृप्ति पाल के दादा स्व. श्री हवलदार सिंह जी भी भारतीय सेना में सूबेदार से सेवानिवृत्त हुए थे। और उनके नाना श्री जगन्नाथ पाल भी सेना के पोस्टल डिपार्टमेंट (्क्क्स) में वारंट ऑफिसर से सेवा निवृत्त हुए हैं। अपने दादा और नाना के पदचिन्हों पर चलते हुए तृप्ति पाल ने ग्वालियर से 12ह्लद्ध के बाद दिल्ली में अपने नाना की देखरेख में तैयारी की। तृप्ति पाल अपनी सफलता का श्रेय अपने नाना और दादा सहित माता पिता और गुरुजनों को देती हैं।

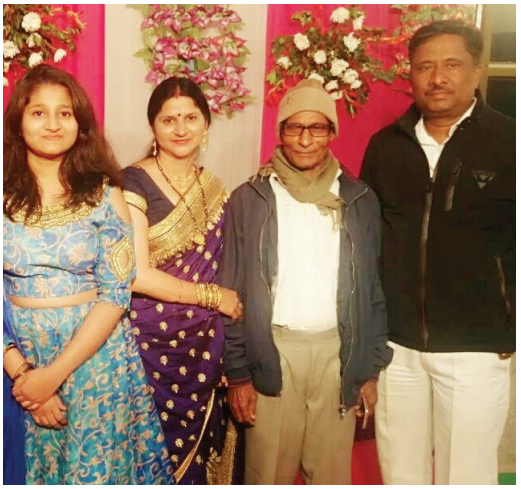

सभी देशवासियों को नववर्ष एवं मकर संक्रांति की
हार्दिक शुभकामनाएँ
नववर्ष 2021
श्री वैष्णव मेडिकल
भिण्ड रोड, गोले का मंदिर ग्वालियर

सभी देशवासियों को नववर्ष एवं मकर संक्रांति की
हार्दिक शुभकामनाएँ
नववर्ष 2021
अपूर्वा मेडिकल
रणधीर कॉलोनी भिण्ड रोड, गोले का मंदिर ग्वालियर

अर्पित गुप्ता बने राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष

राजनैतिक दल,समाजसेवी व पत्रकारों ने दी शुभकामनाएं

(पुष्पांजली टुडे) मप्र में पत्रकारिता के क्षेत्र में चमकते चेहरे अर्पित गुप्ता जी बने पुष्पांजली जनकल्याण फाउडेंशन के राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष।यहां बता दें कि अर्पित गुप्ता ने बहुत ही कम समय मे पत्रकारिता व समाजसेवा के क्षेत्र में अपनी एक अलग ही पहचान बनाई है जिसके चलते उन्हें लगातार पदोन्नती व नए संस्थानों में जगह मिलती रही है।यहां बता दें कि वर्तमान में अर्पित गुप्ता जी समाचार के क्षेत्र में पुष्पांजली टुडे(दैनिक समाचार पत्र,ऑनलाइन न्यूज़ चैनल,वेब पोर्टल,मासिक पत्रिका)में लगभग 4 वर्ष से अपनी सेवाएं दे रहे हैं सबसे पहले उन्हें पुष्पांजली टुडे में मप्र हैड के रूप में जिम्मेदारी सौंपी गई थी तदोपरांत उनकी लगन को देखते हुए पुष्पांजली टुडे ने उन्हें विगत 2 वर्ष पूर्व बतौर उपसम्पादक के रूप में कमान सौंपी थी और अब उनकी मेहनत व कार्य को देखते हुए उन्हें समाजसेवी संस्थान पुष्पांजली जनकल्याण फाउंडेशन में एक नई जिम्मेदारी का दायित्व सौंपते हुए राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष मनोनीत किया गया है।साथ ही यहां बता दें कि अर्पित गुप्ता जी ने वर्ष 2014 में मीडिया जगत में कदम रखा था जिस दौरान वह भास्कर न्यूज,दैनिक उदगार,दैनिक इंडिया आज कल,चम्बल की तस्वीर आदि कई संस्थानो में अपनी सेवाएं दे चुके हैं और अभी वर्तमान में वह इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में स्वराज एक्सप्रेस व पुष्पांजली टुडे न्यूज़ से जुड़े हुए हैं।पत्रकारिता के क्षेत्र में उनके कार्य को देखते हुए उन्हें

भारत के कई राज्यो में सम्मानित भी किया जा चुका है।राष्ट्र में इतनी बड़ी जिम्मेदारी मिलने पर उन्होंने वरिष्ठ नेतृत्व,शुभचिंतको व मित्रो का आभार व्यक्त किया है उन्होंने कहा कि संगठन ने भरोसा जताते हुए उन्हें इतनी बड़ी जिम्मेदारी सौंपी है जिसे वह बखूबी निभाएंगे और जल्द ही सम्पूर्ण भारत मे पुष्पाजंली टुडे जनकल्याण फाऊंडेशन की टीम की नियुक्ति करेंगे जिससे संगठन को मजबूती मिल सके।इस दौरान उन्हें बधाई देने वालो में महिमा एक्सप्रेस सम्पादक अभिषेक शिवहरे,श्री राम एक्सप्रेस सम्पादक हरीश उपाध्याय,नवनीत एक्सप्रेस सम्पादक महेंद्र तिवारी,संसद मत सम्पादक हेमन्त गुप्ता,रतनगढ़ टाइम्स प्रतीक दुर्बार,वीनस टुडे सम्पादक वरुण गुप्ता,ग्वालियर की शान सम्पादक मृगनेंद्र सिंह,संघर्ष न्यूज़ सम्पादक राजेन्द्र झा,सन्दीप शुक्ला,भिंड रमाशंकर शर्मा,हेमन्त शर्मा आज तक,नवीन शर्मा,गुणाकेश पाराशर,परिनिधेश भारद्वाज,एन के भटेले,अनिल चौधरी,प्रदीप चौधरी,गिर्राज बौहरे,शुभम जैन,विपिन भारद्वाज,आशुतोष राजौरिया,मनीष ऋषिवर,असवार रविकांत त्यागी,गोहद देवेंद्र जैन,ऊमरी राघवेंद्र जी,मिहोना नीरज शर्मा,पंकज शर्मा,पवन शुक्ला,दबोह मोहित गोस्वामी,दिलीप नायक,रविन्द्र शर्मा,कुंजबिहारी कौरव,हरिश्चंद्र पाण्डेय,पंकज शर्मा,राजाभैया पाल,सुधांशु मुदगल,अजय त्रिपाठी,आलमपुर उत्तम चौधरी, उदयराज चौहान,मयंक त्रिपाठी,रोबिन अग्रवाल,अजीज पठान,संजीव चौधरी,लहार राजू त्रिपाठी,मोनू उपाध्याय,नितिंन त्रिपाठी,बिबेक दुबे,विवेक पांडेय,राजू मुडोतिया,संजीव चौधरी,उत्तम चौधरी,देवानंद नायक,रावतपुरा महेन्द्र त्रिपाठी,सेंवढ़ा रहीम मलिक,दतिया संदीप प्रधान,मुरैना पुष्पेंद्र तोमर,अम्बाह केशव पण्डित जी,इंदरगढ़ सुनील खरे, समथर यशपाल सिंह,करैरा संजय गुप्ता बिलैया,शिवपुरी मयंक खत्री,रामस्वरूप रजक,सुनील रजक,गुना चन्द्रप्रकाश मांझी आदि पत्रकार के साथ साथ कई राजनैतिक दल के नेता एवम अर्पित गुप्ता मित्र मंडल शामिल है।।

कार्य के लिए जिले से बाहर जाने वाली बच्चियों का रिकॉर्ड रखने का सिस्टम बनाएँ

पुष्पांजली टुडे ब्यूरो मुरैना। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने मंत्रालय में एक उच्च-स्तरीय बैठक में प्रदेश से गायब हुई बालिकाओं के संबंध में गृह मंत्री डॉ. नरोत्तम मिश्रा, मुख्य सचिव श्री इकबाल सिंह बैंस और पुलिस महानिदेशक श्री विवेक जौहरी से चर्चा की। मुख्यमंत्री चौहान ने गायब हुई बालिकाओं के संबंध में कहा कि पुलिस ऐसे मामलों में बालिकाओं की बरामदगी संख्या बढ़ाएँ। उन्होंने गत कुछ माह में महिला अपराधों में आई कमी के लिए पुलिस को बधाई दी। उल्लेखनीय है कि गत आठ माह में महिलाओं के विरुद्ध अपराध आधे हुए हैं। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि महिलाओं की सुरक्षा और सम्मान के लिए महिला जागरूकता अभियान का संचालन सराहनीय है।

मुरैना स्थित नवीन कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में कार्यक्रम का लाइव देखा एवं सुना गया। इस अवसर पर कलेक्टर श्री अनुराग वर्मा, पुलिस अधीक्षक श्री अनुराग सुजानिया, नगर निगम कमिश्नर श्री अमरसत्य गुप्ता, समस्त एसडीएम, जिला महिला एवं बाल विकास अधिकारी श्रीमती उपासना राय सहित समस्त विभागों के जिलाधिकारी उपस्थित थे। कार्यक्रम के उपरांत सभी अधिकारियों ने शपथ का वाचन किया। जिसमें अपने आसपास ऐसा वातावरण बनायें, जिसमें नारी

अपने आप को सुरक्षित मेहसूस करे तथा उन्हें समान अवसर प्राप्त हो।

चिंता का विषय है बेटियों का गुम होना मुख्यमंत्री श्री चौहान ने बैठक में कहा कि बेटियों के गायब होने के मामले में गंभीर कार्यवाही की आवश्यकता है। इसलिए आज की यह विशेष बैठक बुलाई गई है। मुख्यमंत्री ने कहा कि बेटियों का गायब होना चिंता का विषय है। उन्होंने कहा कि गुम हुई बेटियों को लाना, प्राथमिकता हो। मुख्यमंत्री ने कहा ऐसा सिस्टम बनाएं कि जिले से कार्य, रोजगार आदि के लिए बाहर जाने वाली बेटी का पूरा रिकार्ड हो, जिससे वे शिकायत कर सकें।

एक ऐसा संत जिसने बनवाए पाकिस्तान में 12 हिन्दू मंदिर

हम आज बात करने जा रहे हैं,श्री स्वामी प्रभूपाद। जिन्हें लोग स्वामी श्री भक्तिवेदांत प्रभूपाद के नाम से भी जानते हैं। एक ऐसे गीता ग्रंथ के धर्मप्रचारक थे,जिन्होंने भारत ही नहीं अपितु पूरे विश्व में गीता के महत्व को बताया। इनका जन्म कलकत्ता के एक बंगाली परिवार में सन् 1 सितम्बर 1896 में हुआ था। पिता का नाम श्री गौर मोहन डे था तथा माता का नाम श्रीमति रजनी था। इनके पिता एक कपड़ा व्यापारी थे और माता ग्रहिणी थी। पिता ने इनका नाम अभयचरण डे रखा। नंदोत्सव पर जन्म होने के

कारण इनको नंदूलाल भी कहते थे। ऐ बच्चों के साथ खेलने की बजाय मंदिर जाना ज्यादा पंसद करते थे। जब ऐ 14 साल के थे,तब इनकी माता का देहांत हो गया था। 22 वर्ष में इनका विवाह 11 वर्ष की राधारानी देवी से करवा दिया गया था। ऐ बचपन से ही कृष्ण भक्त थे। सन् 1922 में इनकी मुलाकात दार्शनिक भक्ति सिद्वांत सरस्वती हुई। जो उस समय 64 गौडीय मठ के संस्थापक थे। इनको अंग्रेजी का अच्छा ज्ञान था। तत्पश्चात् इन्होंने गीता पर टिप्पणी लिखना प्रारंभ कर दिया। सन् 1944 में इन्होंने बिना किसी की सहायता से गीता का अंग्रेजी में अनुवाद प्रारंभ कर दिया, संपाद,टंकण और परिशोधन स्वयं करते थे। सन् 1947 में गौडीय समाज ने इन्हें भक्तिवेदान्त की उपाधि से सम्मानित किया। स्वामी जी अपने गुरू का बहुत आदर करते थे। गुरू के द्वारा दिए गये आदेश को पूरा करने के लिये ए अपने आप को पूरा झोंक देते थे। इन्होंने सन् 1959 में सन्यास ग्रहण कर लिया था। सन्यास के बाद ऐ वृंदावन में रहकर गीता का अंग्रेजी में अनुवाद करने लगे। प्रारंभिक तीन खंडों को प्रकाशित करने के बाद सन् 1965 को गुरू की आज्ञा से ऐ अमेरिका चले गये। उस समय इनकी आयु 70 वर्ष थी। 1966 से 1977 तक पूरे विश्व का 14 बार भ्रमण किया था। इन्होंने अनेक भक्ति वेदांत विद्यालयों की स्थापना की।विश्व की सबसे बड़ी आध्यात्मिक पुस्तकों की प्रकाशन संस्था - भक्तिवेदांत बुक ट्रस्ट की स्थापना इन्होंने की थी। इन्होंने स्वतंत्रता आन्दोलन के लिए चलाए जाने वाले असहयोग आंदोलन में भी गांधी जी का साथ दिया। आज पूरे विश्व के लोग जो सनातन धर्म के अनुयायी बने हैं, और हिन्दू धर्म के भगवान श्री कृष्ण और श्रीमद्भगवतगीता में जो आस्था है,उसका असली श्रेय स्वामी प्रभुपाद जी को ही जाता है। इन्होंने ही कृष्ण भक्ति को पूरे विश्व में अनेक भाषाओं में रूपांतरित करके विश्व मे फैलाया।

इस्कॉन की स्थापना

जब 1965 में यह मालवाहक जहाज से पहली बार लगभग 70 साल की उम्र में न्यूयॉर्क नगर में पहुँचे तो उस समय वियतनमी और न्यूयॉर्क का यद्व चल रहा था। जिसके कारण हिप्पी आ गये थे। जो नंगे रोडो पर घूमते एवं नशा करते थे। वहां की सरकार इनसे बहुत परेशान थी। तब स्वामी जी के मन में आया क्यों न इन्हीं से कृष्णभक्ति शुरू की जाए। स्वामी जी ने कीर्तन प्रारंभ कर दिये,लेकिन हिप्पी इनका अपमान करते थे,इनके सामान की चोरी कर लेते थे। पर स्वामी जी फिर भी उनके लिए भोजन की व्यवस्था करते थे और कृष्ण कीर्तन चालू रखते थे। स्वामी जी ने इन लोगों में परिर्वतन कर कृष्ण भक्ति और गीता पाठ में लगा लिया। वहां लगभग 1000 शिष्य बन गये। स्वामी सभी को विश्व के विभिन्न देशों में गीता का उपदेश देने के लिए भेजा। 1966 में इन्होंने अंतर्राष्ट्रीय कृष्णभावनामृत संघ (इस्कॉन) की स्थापना की। इन्होंने ही पाकिस्तान जैसे मुस्लिम बाहुल्य देश में एक नहीं पूरे 12 इस्कॉन मंदिर बनवाए। 12 साल में इन्होंने विश्व के कई देशों में पूरे 108 इस्कॉन मंदिर बनवा दिए थे तथा जगन्नाथ की रथयात्रा पूरे विश्व में इन्होंने ही शुरू की थी। फूड फॉर लाइफके नाम से इन्होंने ही फ्री में खाना की प्रथा शुरू की थी। आज भी 14 लाख बच्चों को इस्कॉन मंदिर खाना खिलाता है। आज भारत से बाहर विदेशों में हजारों महिलाओं को साडी पहने,चंदन की बिंदी लबाए व पुरूषों को धोती कुर्ता और गले में तुलसी की माला पहने देखा जा सकता है। लाखों ने मांसाहार तो क्या चाय,काफी,प्याज,लहसुन जैसे तामसी पदार्थों का सेवन छोडकर शाकाहार शुरू कर दिया है।श्री

प्रभुपाद के ग्रंथों की प्रामाणिकता,गहराई और उनमें झलकता उनका अध्ययन अत्यंत मान्य हैं। कृष्ण को सृष्टि के सर्वेसर्वा के रूप में स्थापित करना और अनुयायियों के मुख पर हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे,हरे कृष्णा हरे कृष्णा कृष्णा हरे हरे का उच्चारण सदैव रखे की प्रथा इनके द्वारा स्थापित हुई।

अंतिम यात्रा: स्वामी जी अंत समय में भी श्रीभगतगीता का अंग्रेजी में अनुवाद करते रहे। स्वामी जी 14 नवम्बर 1977 को कृष्ण बलराम मंदिर, वृन्दावन में हमसबको अनाथ छोडकर श्रीकृष्ण में हमेशा के लिए लीन हो गये।बताया जाता है कि जब ये मृत्यु के निकट थे तब भी गीता का उपदेश रिकार्ड करा रहे थे। ऐसे महान संत की कभी मृत्यु नहीं होती है, ये तो हमेशा अपने चाहने वालों के दिल में जीवित रहते है।

स्वामी जी ने कहा था कि: मैं अकेला हूँ और मैं सब कुछ नहीं कर सकता, इसका मतलब यह नहीं है कि मैं कुछ नहीं कर सकता। क्योंकि मैं कुछ कर सकता हूँ तो कुछ करूँगा और कुछ कुछ कर करके कुछ भी कर दूँगा।

कृषि विधेयकः उचित या अनुचित

जिस देश का अन्नदाता किसान कुदाल और बैल लेकर खेतों में जाने के बजाय सड़को पर उतर जाए उस देश के लिए इससे ज्यादा शर्म की बात क्या होगा, देश के जीडीपी में 16-18त्न तक का योगदान देने वाले किसानों की संख्या 2014-2015 रिपोर्ट के अनुसार देश की जनसंख्या का 67.8त्न है , इस आधार पर कहा जा है इस देश का एक बड़ा तबका आज खेत- खलिहानो पर निर्भर हैं हैं और इनके हित को किसी भी तरीके से नजर अंदाज़ नहीं किया जा सकता हैं । वर्तमान में भारत सरकार ने कृषि से संबंधित तीन अध्यादेश लागू करने जा रही है जिसे सरकार, उनके सहयोगी घटक और कुछ सामाजिक/कृषि संगठन किसानों के हित में बता रहे है वही विरोधी दलों, अन्य कृषि संगठनों के साथ साथ अब सरकार का एक घटक अकाली दल भी विधेयक के विरोध में आ चुका है।

अंकुर सिंह
चंदवक, जौनपुर,उप्र

सरकार का पहला विधेयक हैं, कृषि उत्पादन व्यापार और वाणिज्य (संवर्धन और सुविधा) विधेयक 2020, इस में किसानों को अपनी फसल व्यापारियों को मंडी के बाहर फ़सल बेचने की आज़ादी होगी इससे राज्य के अंदर एक जिले से दूसरे जिले और राज्यों के बाहर एक राज्य से दूसरे राज्य में व्यापार को बढ़ावा मिलेगा जो की स्वागत योग्य भी हैं। लेकिन यहाँ ये सोचने की बात हैं की देश का 86त्न किसान लघु और माध्यम वर्ग के श्रेणी में आते हैं जिनके पास 5 एकड़ से भी कम खेती योग्य ज़मीन हैं और इनमें से अधिकतर किसान अपनी फसल मंडी ना ले जाकर आस पास के व्यापारियों को बेचता हैं। वर्ष 2003 के एग्रीकल्चर प्रोड्यूस मार्केटिंग (रेगुलेशन) ऐक्ट के तहत सरकार किसानों को बाध्य भी नहीं कर सकती की वह अपनी फसल मंडी में ही बेचे, इस आधार पर कह सकते हैं की बाजार की आज़ादी तब भी था लेकिन सीमित क्षेत्र में अब ये क्षेत्र पूरी तरह खुला हो गया हैं और ई-ट्रेडिंग का सुलभ विकल्प भी मिल गया इस विधेयक से।

लेकिन तब किसानों के फसल का न्यूनतम फसल मूल्य (एमएसपी) था जो नए नियम में मंडी के बाहर अनाज उत्पादन में नहीं हैं जबकि देश के कृषि मंत्री और प्रधानमंत्री जी कह रहे है की मंडी में पूर्व की भांति सरकारी ख़रीदे चलती रहेगी और उसपर एमएसपी रहेगी। मंडी के बाहर एमसपी ना होना कही न कही किसानों के हित में नहीं हैं, यदि मंडी के बाहर के खरीद पर भी एमएसपी का प्रावधान हो और एमएसपी के नीचे ख़रीददारी जुर्म हो, तो ये विधेयक काफी क्रांति लाने वाला होगा क्योंकि बाजार में प्रतिस्पर्धा आएगी और किसानों के पास ज्यादा विकल्प होंगे अपनी उपज बेचने के लिए। आरबीई के 2018 के एक सर्वे के अनुसार 50त्न से ज्यादा किसानों ने न्यूनतम फसल मूल्य (एमएसपी) को अपने हित में बताया था, फिर भी सरकार नए बिल में एमसपी क्यों नहीं जोड़ रही ये समझ के बाहर की बात है। एमएसपी का निर्धारण तमिलनाडु में जन्मे और पद्म श्री,पद्म भूषण और पद्म विभूषण से सम्मानित प्रो. एमएस स्वामीनाथन कमेटी के रिपोर्ट के आधार पर कुल लागत (कुल खर्च + पारिवारिक मजदूरी) का 1.5 गुना होना चाहिए। दूसरा विधेयक, कृषक (सशक्तिकरण व संरक्षण) कीमत आश्वासन और कृषि सेवा पर करार विधेयक-2020, जिसमे व्यापारी या कम्पनियाँ बुवाई से पूर्व किसानों से एक अनुबंध करेंगी कि आप इस फसल की बुवाई करो और हम फलां तारीख को फलां कुंटल अनाज अमुक मूल्य पर आपसे खरीदेंगे जो निस्संदेह काफी अच्छा बिल हैं किसान के फसल का मूल्य बुवाई के पूर्व निर्धारण हो जायेगा इससे अच्छी बात और क्या हो सकती हैं लेकिन इससे साथ इसमें कुछ ख़ामियाँ भी हैं क्योंकि अपने देश के आधे से ज्यादा किसानों के पास खेती का पर्याप्त खेत नहीं हैं वो बड़े किसानों के खेत अधिया, तीसरी या बटाई पर लेकर खेती करते हैं और अनुबंध खेती प्रणाली आने पर व्यापारी या कम्पनियाँ सीधे खेत के मालिकों से अनुबंध

किसान को न्याय दिलाना सरकार का कर्तव्य है

किसान की आर्थिक हालात में सुधार हो इसके लिए सरकार प्रयासरत है लेकिन किसान की दिशा और दशा सुधारने के जो तरीके अपना रही है वह एकदम सही नहीं है अभी इस दिशा में बहुत अधिक सुधार की आवश्यकता है किसान दिन रात खेत में मेहनत करता है लेकिन उस मेहनत का फल व्यापारी खाता है किसान की हालत जस की तस बनी रहती है जब किसान के खेत की फसल बाजार में जाती है उस समय वह है सबसे कम दाम पर बिकती है जैसे ही वह फसल व्यापारी के गोदाम में पहुंच जाती है उसकी कीमत तेज गति से बढ़ने लगती है मुनाफाखोर लोग उस फसल को और कई गुना मुनाफे से बेचते हैं अभी कुछ फसलों को हम बता सकते हैं जैसे आलू के दाम आसमान चल रहे थे जैसे ही किसान ने पैदावार करके फसल को मंडी में पहुंचाया आलू की कीमत में भारी गिरावट देखी गई ऐसे ही कुछ समय पूर्व प्याज टमाटर लहसुन जैसी अनगिनत फसलों को मुनाफा खोर व्यापारी ने अपनी जेब में खूब भरी लेकिन किसान ने जैसे ही फसल को बाजार में लेकर आए वैसे ही उनके भाव जमीन पर आ गए और व्यापारी मौज करते रहते हैं किसान परेशान होता है इस तरह की पॉलिसी सरकार को बनाने की जरूरत है न्यूनतम समर्थन मूल्य से कम कीमत पर कहीं भी कभी भी किसान की फसल में खरीदी जाए और अन्य उत्पादों की तरह किसान स्वयं की फसल की कीमत निर्धारित कर सके ऐसी योजना लाने की जरूरत है सरकार को इस दिशा में सोचना चाहिए ना की व्यापारियों की बोली में बोली लगाकर उनका हित साधा जाए धरतीपुत्र किसान को उसका वाजिब हक मिल सके इस हेतु सरकार को सार्थक प्रयास करने की जरूरत है तभी यह किसान आंदोलन थमेगा और किसान को उसका वाजिब हक भी मिलेगा

शैलेश सिंह कुशवाह
वरिष्ठ पत्रकार ग्वालियर

करेंगी जिससे ये अधिया, तीसरी या बटाई पर खेती करने वाले किसान बस नाम मात्र का किसान कहलाएगा, जबकि सरकारी आकड़ों में उनकी गिनती देश के किसानों में होती रहेगी।

दूसरे अनुबंध खेती प्रणाली से एक फायदा ये है की अनुबंध होने से व्यापक स्तर पर उस फसल पर खेती होगी जिसके लिए श्रमिकों की जरुरत होगी और स्थानीय लघु किसानों के लिए रोज़गार का भी सृजन होगा लेकिन जो लघु किसान कल तक अन्नदाता भगवान के नाम से जाना जाता था अब वो राष्ट्र निर्माता मज़दूर कहलाएगा। एक प्रमुख ख़ामियाँ ये भी स्पष्ट दिख रहा कि किसी विवाद के स्थिति में किसान और अनुबंध करने वाला व्यापारी उप प्रभागीय न्यायाधीश (एसडीएम) के यहाँ अपील करेगा और 30 दिनों में निस्तारण न होने पर ज़िला न्यायाधीश (डीएम) के यहाँ मामला जायेगा और डीएम मामले का निस्तारण करेंगे। अपने देश में भ्रष्टाचार कितना चरम पर हैं, किसी से छुपा नहीं हैं ये (भ्रष्टाचार अनुभव सूचकांक 2019 में भारत का दुनिया के 180 देशों में 80वां स्थान पर है) तो यंहा भी सम्भावना है कि आर्थिक रूप से मजबूत व्यापारी या कंपनी इन प्रशासनिक अधिकारियों पर येन केन प्रकारेण दबाव डालेगा, निर्णय को अपने पक्ष में करने के लिए। यदि ऐसा हुआ तो दूसरों का पेट भरने वाला, आधा तन ढककर खेतों में हल चलाने वाला किसान अपने हक़ की लड़ाई कैसे जितेगा? सरकार को चाहिए की इसमें आगे के कोर्ट की व्यवस्था भी बनाएँ ताकि इन मनोनीत अधिकारियों से न्याय न मिलने पर किसान के साथ-साथ व्यापारी को भी ऊपर की अदालत में अपनी बात कहने का हक़ हों, क्योंकि आज भी देश का आम नागरिक कार्य-पालिका में उतना विश्वास नहीं रखता जितना की न्यायपालिका में।

इस कड़ी का तीसरा अध्यादेश है आवश्यक वस्तु (संशोधन) विधेयक- 2020 ,इस अध्यादेश में सरकार ने अब खाद्य तेल, तिलहन, दाल, प्याज और आलू जैसे कृषि उत्पादों पर से स्टॉक लिमिट हटा दी गई हैं। राष्ट्रीय आपदा, सूखा, महामारी युद्ध जैसी स्थितियों में स्टॉक लिमिट लगाई जाएगी. इससे एक फायदा तो हैं की किसानों की उपज अब बेकार होकर फेंकी नहीं जाएगी, लेकिन बाकी बिल की तरह यहाँ भी कालाबाजारी जैसी कुछ और ख़ामियाँ दिख रही हैं, क्योंकि जब फसल के उत्पादन का समय होता है तो ज्यादा उपलब्धता के कारण बाजार में आसानी से कम रेट में फसल मिलती है। जब इन खाद्य वस्तुओं से स्टॉक लिमिट हट जाएगी तो बड़े-बड़े व्यापारी, कंपनी फसल उत्पादन के समय किसानों से कम रेट में ज्यादा माल खरीद कर इन्हे जमा कर लेंगे और बाजार में इनके मांग पर पूर्ति ना करके इनकी उपलब्धता की कमी दिखाते हुए उच्च दामों में इन वस्तु को बेचेंगे जिससे इस संरचना में सबसे आखिरी कड़ी कहा जाने वाला उपभोक्ता प्रभावित होगा जिसे महंगे दामों पर इन दैनिक खाद्य वस्तुओं को खरीदनी पड़ेगी और महँगाई में बेजोड़ बढ़ोत्तरी होगी , इसका उदाहरण देश में बीच-बीच में प्याज की आसमान छूते भाव में देखने को मिले है की कैसे इसका भण्डारण कर कीमतों की कालाबाजारी किया जाता रहा हैं और खाद्य तेल, तिलहन, दाल, प्याज और आलू तो हर घर में प्रयोग किया जाता है। इस आधार पर कह सकते है कि आवश्यक वस्तु (संशोधन) विधेयक-2020 से किसान ही नहीं आम जनमानस भी परेशान होगा। आखिरी सवाल जेहन में ये उठता हैं कि सरकार को इतनी जल्दी क्या थी इस जो ये संशोधन को लोकसभा के बजाय अध्यादेश (भारतीय संसद के द्वारा नये क़ानूनों का निर्माण,पुराने क़ानूनों में संशोधन किया जाता है। लेकिन जब संसद का सत्र न चल रहा हो तो भारत सरकार के केंद्रीय मंत्रीमण्डल की सिफारिश पर भारत का राष्ट्रपति जिन क़ानूनों को लागू करता है वह अध्यादेश कहलाता है और अध्यादेश संसद की कार्यवाही पुन- शुरू होने पर दोनों सदनों में न्यूनतम छह सप्ताह और अधिकतम छह माह के समय सीमा में पारित करना आवश्यक होता है। यदि दोनों ही सदन इसे खारिज करने के पक्ष में मतदान करते हैं तो ये अध्यादेश समाप्त हो जाता है) से लाई, सरकार किसानों के बीच एक सर्वे करा कर लोकसभा से भी ये विधेयक ला सकती थी। सरकार क्या सच में, किसानों के हित के लिए ज्यादा उतावली थी या फिर पूँजीपतियों के दबाव में उन्हें फायदा पहुंचाने के उद्देश्य से इस महामारी में मौके पर चौका मरना चाहती थी, आज अकाली दल हरियाणा और पंजाब के किसानों का मूड देखते हुए सरकार से बगावती तेवर अपनाई हुई हैं, उस समय क्यों चुप थी जब कैबिनेट मीटिंग करके ये अध्यादेश लाया जा रहा था। इसे खाने के लिए अन्न उपजाने वाले बेबस किसानों के साथ सियासत की राजनीति करना ना कहे तो और क्या कहे ? खैर ये तो आने वाला भविष्य ही बताएगा कि इस अध्यादेश का परिणाम कैसा आएगा, क्योंकि इस तरह के कानून का परिणाम तुरंत नहीं अपितु कुछ सालों के बाद दिखाई पड़ता है।

ऐतिहासिक राजस्थान और मेवाड़ का इतिहास

राजस्थान शब्द का अर्थ हैः राजाओं का स्थान क्योंकि यहां राजपूत,जाट आदि ने पहले राज किया था। राजधानी थी। इस क्षेत्र की प्राचीनता का पता अशोक के दो शिलालेखों और चौथी पांचवी सदी के बौद्व मठ के भग्नावशेषों से भी चलता है। इसी राजस्थान की रियासत मेवाड़ के इतिहास के बारे में हम महाभारत में उल्लिखित मत्स्य पूर्वी राजस्थान और जयपुर के एक बड़े हिस्से पर शासन करते थे। जयपुर से 80किमी. उत्तर में बैराठ जो तब विराटनगर कहलाता था। उनकी आज पढ़ेगें।

मेवाड़ का इतिहास -

मेवाड़ का इतिहास प्रारंभ होता है राणा लाखा और हंसाबाई। इनके पुत्र हुये राणा मोकल। राणा मोकल की पत्नि का नाम था सौभाग्य देवी। इनके पुत्र हुये राणा कुंभा। राणा कुंभा के बारे कुछ अधिक जानकारी नहीं मिल पाई लेकिन जितनी मिली है उसके अनुसार राणा का अंतिम समय अधिक कष्ट से बीता। उन्हें उन्माद नामक बीमारी (मानसिक रोग) हो गई थी। राणा कुंभा को अनेक उपाधियां मिली थी, जिनमें प्रमुख हैं- 1. अभिनव भारताचार्य - यह उपाधि संगीत प्रेमी होने कारण मिली थी। 2. हिन्दु सुल्तान - यह उपाधि हिन्दु राजा होने कारण मिली। 3. हाल गुरू - पहाडी दुर्गो का स्वामी होने के कारण और चौथी उपाधि है राणो रासो - साहित्यकारों का आश्रयदाता होने के कारण यह उपाधि दी गई। राणा कुंभा को छोटी-मोटी सब मिलाकर कुल 108उपाधियां मिली थी। राणा कुंभा के दो पुत्र थे,ऊदा (1468ई.-71ई.) और रायमल(1471ई.-1509ई.)। राणा कुंभा के प्रमुख सैनिक अभियान - आबू विजय,गुजरात विजय,मांडू विजय,नागौर विजय। महाराणा कुंभा ने मेवाड के 84 दुर्गो में से 32 दुर्गो का निर्माण करवाया। इन्होंने दो टीका लिखी। राणा कुंभा ने कामशास्त्र पर कामराज रतिसार नामक ग्रंथ की रचना की थी। जिसमें ऊदा को मेवाड़ का राजा बनने की जल्दी थी। इसलिए ऊदा ने अपने पिता को कुम्भलगढ़(कुंभागढ़) के किले के अन्दर मामा का कुॅड में बेडियों से बांध कर रखता था। ऊदा ने राणा कुंभा की हत्या कर दी और खुद राजगद्दी पर बैठ गया। एक कहावत है- बुरे काम का बुरा नतीजा। कुछ समय बाद ऊदा की भी मृत्यु आकाश से बिजली गिरने का कारण हो गई। ऊदा की मृत्यु के बाद राणा कुंभा का दूसरा पुत्र रायमल मेवाड़ का राजा बना। राजा रायमल ने कुल 38 सालों तक राज्य किया । रायमल की पत्नि का नाम श्रृंगारदेवी था। रायमल के कुल चार पुत्र और एक पुत्री थी। पृथ्वीराज,जयसिंह,जयदेव और राणा सांगा(1509-1528) और आनन्दी बाई । पृथ्वीराज एक तेज धावक थे,इसलिए उनको उड़ता राजकुमार भी कहा जाता था। राजा रायमल ने अपने मंत्रियों के द्वारा यह पता लगवाया कि अगला मेवाड़ का राजा बनने लायक चारों पुत्रों में से कौन-सा पुत्र योग्य है। मंत्रियों के द्वारा राणा सांगा को राजा बनाने की सिफारिश की गई थी। यह बात जब पृथ्वीराज को पता चली तो उसने जब राणा सांगा बगीचे में थे तब उनके ऊपर एक बड़ा पत्थर दे मारा था। जिससे राणा सांगा को अपनी एक ऑख खोनी पड़ी थी। कुछ इतिहासकारों के अनुसार राणा सांगा के बड़े भाई पृथ्वीराज को जगमाल देवड़ा(आनन्दीबाई का पति) के द्वारा खाने में जहर दे दिया गया था। जिससे उनकी अपने महल के पास मृत्यु हो गई। इनकी छत्री उसी जगह पर बना दी गई। यह छत्री 12खम्बों की है।

राणा सांगा उर्फसंग्राम सिंह

राणा सांगा को संग्राम सिंह भी कहते थे। राणा सांगा का जन्म सन्1482ई. को कुंभलगढ़ दुर्ग में हुआ था और राजतिलक चितौड़गढ़ दुर्ग में सन्1509ई. में हुआ था। कर्नल जेम्स टॉड के अनुसार - राणा सांगा को सैनिको के भग्नवेश कहते थे। भग्नवेश एक उपाधि थी। इनके शरीर पर 80 घाव होने कारण यह कहा जाता था।

(शेष अगले अंक में)

पाली जिले में मोदी लहर से चारों तरफ कमल ही कमल खिला, कांग्रेस की करारी हार

(नेनाराम सीरवी)
ब्यूरो चीफ पुष्पांजलि टुडे पाली

राजस्थान के पाली जिले में पंचायत राज संस्थाओं के आम चुनाव 2020 के घोषित परिणामों में मोदी लहर से संपूर्ण जिले के चारों तरफ कमल ही कमल खिला। जिला परिषद के 33 वार्ड में से भाजपा के 30 वार्ड में अपने प्रत्याशियों को जीत मिली। कांग्रेस पार्टी को मात्र 3 वार्ड में जीत मिली। जिला परिषद के 33 वार्ड में से 20 महिला प्रत्याशियों की जीत हुई।जिले में दूसरी बार लगातार भाजपा का जिला प्रमुख बना। जिला परिषद वार्ड संख्या 5 के भाजपा विजेता प्रत्याशी रश्मि सिंह मैं अपने निकटतम कांग्रेस पार्टी के प्रत्याशी मुन्नालाल को 371 मतों से हराकर जीत हासिल की।और जिला परिषद के वार्ड संख्या 5 के भाजपा विजेता प्रत्याशी को जिला प्रमुख बनाया गया।

पाली जिले के सांसद पीपी चौधरी सुमेरपुर विधानसभा क्षेत्र के विधायक जोराराम कुमावत पाली विधानसभा क्षेत्र के विधायक ज्ञानचंद पारख बाली विधानसभा क्षेत्र के विधायक पुष्पेंद्र सिंह राणावत मारवाड़ जंक्शन विधानसभा क्षेत्र के भाजपा प्रत्याशी केसाराम चौधरी किसान मोर्चा के प्रदेश उपाध्यक्ष गिरधारी सिंह मंडली। भाजपा किसान मोर्चा जिला अध्यक्ष खीमा राम चौधरी। पाली भाजपा जिला अध्यक्ष मनसा राम परमार। पाली भाजपा जिला उपाध्यक्ष नारायण कुमावत।किसान मोर्चा जिला प्रतिनिधि पाली पुखराज पटेल। उप जिला प्रमुख नवल किशोर रावल। पूर्व प्रधान पंचायत समिति पाली श्रवण बंजारा। कृषि मंडी चेयरमैन रानी गिरधारी सिंह मेड़तिया। चैन सिंह राजपुरोहित रावलवास। महावीर सिंह टेवाली। हेमावास भाजपा मंडल अध्यक्ष वोरा राम सीरवी। गुंदोज भाजपा मंडल अध्यक्ष गणेश राम पटेल। गुंदोज भाजपा पूर्व मंडल अध्यक्ष उमेश सिंह सोनीगरा। शंकर सिंह राजपुरोहित खेरवा। भाजपा जिला प्रतिनिधि मुकेश सीरवी।पूर्व पंचायत समिति सदस्य सुमेरपुर लक्ष्मी सिरवी। सीरवी समाज के वरिष्ठ समाजसेवी एवं भाजपा के वरिष्ठ कार्यकर्ता भवरलाल सिरवी किसान केसरी गार्डन पाली। पूर्व उप प्रधान पंचायत समिति पाली नरेंद्र सिंह राठौड़। खोड भाजपा मंडल अध्यक्ष हुकुम सिंह.खरोखडा। वडेर वास ग्राम पंचायत पूर्व सरपंच प्रतिनिधि मांगीलाल सिरवी केनपुरा। हेमावास मंडल कार्यालय मंत्री मांगीलाल सीरवी रामपुरा। हेमावास मंडल महामंत्री नरेश मालवीय। सीरवी समाज के समाजसेवी अमराराम सीरवी रामपुरा। एवं भाजपा के जिला स्तर के शीर्ष पदाधिकारी कार्यकर्ता मंडल स्तर के कार्यकर्ता पदाधिकारी द्वारा संपूर्ण चुनावी प्रक्रिया के दौरान दिन-रात डोर टू डोर मतदाताओं से संपर्क करके भाजपा के पक्ष में मत देने की अपील की गई। और अंतिम परिणाम तक पाली जिले की लहर भारतीय जनता पार्टी के पक्ष में कायम रखने में सक्षम हुए। पाली सांसद पीपी चौधरी और सुमेरपुर विधानसभा क्षेत्र के विधायक जोराराम कुमावत एवं उनके सहयोगी कार्यकर्ताओं द्वारा तूफानी चुनावी प्रचार करके भाजपा के लिए पाली जिले में जिला प्रमुख एवं 10 पंचायत समिति में से 8 पंचायत समिति के प्रधान भारतीय जनता पार्टी के बनाने में सफलता हासिल की। पाली पंचायत समिति के 15 वार्ड में से 9 प्रत्याशी भारतीय जनता पार्टी 5 प्रत्याशी कांग्रेस पार्टी1 प्रत्याशी निर्दलीय के रूप में जीत मिली।

पाली पंचायत समिति के वार्ड संख्या 1 से विजेता भाजपा प्रत्याशी मोहनी देवी पटेल को पाली पंचायत समिति के प्रधान बनाया गया। वार्ड संख्या 8 के भाजपा विजेता

पाली पंचायत समिति के विजेता प्रत्याशी

1 मोहनी देवी पटेल भाजपा
2 संगीता मीणा भाजपा
3 शायरी देवी कुमावत भाजपा
4 पुष्पा चौधरी कांग्रेस
5 रेखा कांग्रेस
6 पिस्ता कवर भाजपा
7 प्रीति भाजपा
8 भारती कुमावत भाजपा
9 रामलाल भाजपा
10 ओमकार सिंह बोराणा भाजपा
11 मंजू भाजपा
12 विजय जोशी कांग्रेस
13 लक्ष्मण सिंह कांग्रेस
14 मंजू कंवर निर्दलीय
15 यशपालसिंह कुंपावत कांग्रेस

रानी पंचायत समिति के विजेता प्रत्याशी

1 संजू कवर मेड़तिया भाजपा
2 विक्रम कंवर राणावत निर्दलीय
3 दरिया देवी मीणा भाजपा
4 हनुमान सिंह राजपुरोहित भाजपा
5 तेजा राम चौधरी भाजपा
6 दीपिका कवर कांग्रेस
7 सुमित्रा राजपुरोहित भाजपा
8 नवरत्न सीरवी भाजपा
9 इंदर सिंह भाजपा
10 श्याम कवर मेड़तिया भाजपा
11 लाली भाजपा
12 राजाराम भाजपा
13 रतनलाल भाजपा
14 दूदाराम भाजपा
15 शीलासिंह राजपुरोहित कांग्रेस

प्रत्याशी भारती कुमावत उप प्रधान बनाया गया।
रानी पंचायत समिति के 15 वार्ड में से 12 वार्ड में भारतीय जनता पार्टी के प्रत्याशियों को जीत मिली। कांग्रेस पार्टी के 2 प्रत्याशी और 1 प्रत्याशी को निर्दलीय के रूप में जीत मिली।
वार्ड संख्या 10 के भाजपा विजेता प्रत्याशी श्याम कवर मेड़तिया को रानी पंचायत समिति का प्रधान बनाया गया। रानी पंचायत समिति वार्ड संख्या 15 के कांग्रेस पार्टी के विजेता प्रत्याशी शीला सिंह राजपुरोहित को रानी पंचायत समिति के निर्दलीय उप प्रधान बने।
रानी पंचायत समिति वार्ड संख्या 2 की विजेता निर्दलीय प्रत्याशी विक्रम कंवर राणावत ने दोनों ही बड़े राजनीतिक दलों के प्रत्याशियों को मात देकर वार्ड संख्या 2 में निर्दलीय के रूप में 86 मतों से जीत हासिल की।
राजस्थान पंचायत राज संस्थाओं के आम चुनाव के चुनावी प्रचार के दौरान भाजपा के सांसद के अलावा विधायक मंडल स्तर एवं जिला स्तर के पदाधिकारियों के साथ। कांग्रेस पार्टी के कद्दावर नेताओं द्वारा जगह जगह पर तूफानी नुक्कड़ सभाएं भी की गई और आम मतदाताओं से डोर टू डोर संपर्क भी किया गया लेकिन पाली जिले वासियों द्वारा मोदी लहर को बरकरार रखने के लिए चारों तरफ कमल को ही खिलाया गया। मारवाड़ जंक्शन विधानसभा क्षेत्र के कांग्रेस प्रत्याशी जेके राठौड़। पाली

सेवादल जिला अध्यक्ष मोहनलाल हटेला। मारवाड़ जंक्शन विधानसभा क्षेत्र के विधायक खुशवीर सिंह जोजावर। बाल श्रम बोर्ड के भूतपूर्व उपाध्यक्ष भारत सरकार शिशुपाल सिंह राजपुरोहित।पाली विधानसभा क्षेत्र के कांग्रेस प्रत्याशी महावीर सिंह सुकलाई. रमजान खान खोड। रानी पंचायत समिति पूर्व प्रधान पाबू सिंह राणावत। ऑल इंडिया कांग्रेस संगठन के प्रदेश महासचिव गणेश सिंह राजपुरोहित। ऑल इंडिया कांग्रेस संगठन पार्टी जिला अध्यक्ष रणजीत सिंह राजपुरोहित। एवं कई कांग्रेस पार्टी के जिला स्तर एवं ग्रामीण स्तर के कार्यकर्ताओं द्वारा दिन-रात सफल प्रयास किया लेकिन मोदी लहर के आगे संपूर्ण प्रयास जनता ने नकारा। पाली जिले के रोहट पंचायत समिति के एकमात्र कांग्रेस पार्टी का प्रधान बना। खोड मंडल के पूर्व मंडल अध्यक्ष मुकेश सीरवी की पुत्री जिला परिषद वार्ड संख्या 17 से भारतीय जनता पार्टी के लिए चुनाव लड़ा और समाज के वरिष्ठ समाजसेवी एवं वरिष्ठ भामाशाह भंवर लाल सीरवी किसान केसरी गार्डन पाली पुत्रवधू नंदनी सीरवी को जिला परिषद वार्ड संख्या 7 से भारतीय जनता पार्टी के चुनाव चिन्ह पर चुनाव लड़ा गया। हेमावास मंडल अध्यक्ष एवं हेमावास मंडल के संपूर्ण कार्यकर्ता। खोड मंडल के पूर्व अध्यक्ष मुकेश सीरवी वर्तमान मंडल अध्यक्ष हुकम सिंह राजपुरोहित खोड मंडल आईटी सेल प्रभु सिंह राव भाजपा के वरिष्ठ कार्यकर्ता सोहन सिंह राजपुरोहित भोपाजी सीरवी इंडिया परिवार के वरिष्ठ समाजसेवी धन्नाराम सीरवी।ग्रामीण क्षेत्र के भाजपा के वरिष्ठ कार्यकर्ता शैतान सिंह राजपुरोहित हिर सिंह राजपुरोहित पूर्व भाजपा पाली जिला महामंत्री विजय सिंह राजपुरोहित आदि सहित संपूर्ण भाजपा के कार्यकर्ताओं द्वारा दिन-रात मेहनत करके हेमावास मंडल

देश की नई शिक्षा नीति

हमारे प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में मंत्रीमंडल द्वारा नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति को 29 जुलाई 2020 को मंजूरी दे दी है। 34 साल बाद नई शिक्षा नीति लागू हुई है। इसरो के पूर्व चीफ के.कस्तूरीरंगन की अध्यक्षता वाले पैनल ने यह समझौता तैयार किया है। हायर एजुकेशन के लिए सिंगल रेगुलेटर रहेगा। उच्च शिक्षा में 2030 तक 50 फीसदी जीईआर पहुँचने का लक्ष्य है।

नई शिक्षा नीति में चार स्तरों को शामिल किया गया है।

1. **फाउंडेशन चरण** – पहले तीन साल बच्चे आंगनबाडी में प्री-स्कूलिंग शिक्षा लेंगे। फिर अगले दो साल कक्षा एक एवं दो में बच्चे स्कूल में पढेगें। इन पांच सालों की पढाई के लिए एक नया पाठ्यक्रम तैयार होगा। मोटे तौर पर एक्टिविटी आधारित शिक्षण पर ध्यान रहेगा। इसमें तीन से आठ साल तक की आयु के बच्चे शामिल होंगे।

2.प्रीप्रेटरी चरण - इस स्तर में कक्षा तीन से पांच तक की पढाई होगी। इस दौरान प्रयोगों के जरिए बच्चों को विज्ञान,गणित,कला आदि की पढाई कराई जाएगी। आठ से 11 साल तक की उम्र के बच्चों को इसमें शामिल किया गया है।

3.मिडिल चरण – इसमें कक्षा 6 से 8 की कक्षाओं की पढाई होगी तथा 11 से 14 साल की उम्र के बच्चों को इसमें शामिल किया गया है।

4.सेंकेंडरी चरण - कक्षा 9 से 12 तक की पढाई दो चरणों में होगी जिसमें विषयों का गहन अध्ययन कराया जाएगा। विषयों को चुनने की आजादी भी होगी।

नई शिक्षा नीति 2020 की कुछ खास बातें -

उच्च शिक्षा में बदलाव -

1.उच्च शिक्षा में मल्टीपल इंट्री और एग्जिट का विकल्प है। 2. पांच साल का कोर्स वालों को एमफिल में छूट 3.

कॉलेजों के एक्रेडिटेशन के आधार पर ऑटोनॉमी 4. हायर एजुकेशन के लिए एक ही रेग्यूलेटर 5. लीगल एवं मेडिकल एजुकेशन शामिल नहीं हैं 6. सरगारी और प्राइवेट शिक्षा मानक समान 7. नेशनल रिसर्च फाउंडेशन की होगी सिपना 8. शिक्षा में तकनीकी को बढावा 9. दिव्यांगजनों के लिए शिक्षा में बदलाव 10. 8 क्षेत्रीय भाषाओं में ई-कोर्सेस प्रारंभ किये जायेगे और ग्यारवा बदलाव शिक्षा में तकनीकी को बढावा दिया जायेगा।

स्कूली शिक्षा में बदलाव

1.तीन से 6 साल के बच्चों के लिए अर्ली चाइल्डहुड केयर एवं एजुकेशन 2. एनसीईआरटी द्वारा फाउंडेशनल लिट्रेसी एवं न्यूमेरेसी पर नेशनल मिशन प्रारंभ 3. नौवीं से 12वीं की पढाई की रूपरेखा 5334 के आधार पर शिक्षा 4. बच्चों के लिए नए कौशल कोडिंग कोर्स प्रारंभ 5. अतिरिक्त कैरिकुलर एक्टिविटीज-मेन कैरिकुलम में शामिल 6. वोकेशनल पर जोर कक्षा 6 से शुरू होगी पढाई 7. नई नेशनल क्यूरिकुलम फ्रेमवर्क तैयार , बोर्ड एग्जाम दो भाग में किये जायेगें 8. रिपोर्ट कार्ड मे लाइफस्किल्स भी शामिल होगी 9. साला 2030 तक हर बच्चे के लिए शिक्षा अनिवार्य मानव संसाधन विकास मंत्रालय का नाम बदलकर शिक्षा मंत्रालय कर दिया गया। बीएड कोर्स में सुधार जो विद्यार्थी 12वीं के बाद बीएड करना चाहते हैं,वो 4वर्ष का इंटीग्रेटेड बीएड कोर्स कर सकते हैं और स्नातक के बाद दो वर्ष का बीएड कोर्स जबकि परास्नातक के बाद एक वर्ष का बीएड कोर्स होगा। एमफिल को समाप्त कर दिया गया है। 4 साल का डिग्री प्रोग्राम,फिर एमए और उसके बाद बिना एमफिल के सीधा पीएचडी कर सकते हैं।

समान और समावेशी शिक्षा

सामाजिक और आर्थिक दृष्टि से वंचित समूहों को अवसर उपलब्ध कराने पर दिया गया है। बुनियादी सुविधाओं से वंचित क्षेत्रों एवं समूहों के लिए बालक-बालिका समावेशी कोष और विशेष शिक्षा जोन की सिपना का प्रावधान किया गया है और दिव्यांग बच्चों को बुनियादी चरण से लेकर उच्च शिक्षा तक की नियमित शिक्षा प्रक्रिया में पूरी तरह से भाग लेने में सक्षम बनाया जाएगा। शिक्षा के क्षेत्र में जीडीपी का 6प्रतिशत तक निवेश। वर्तमान यह जीडीपी का 4.43प्रतिशत है। डिजीटल शिक्षा को बढावा देने के लिए नेशनल एजुकेशनल टेक्नोलॉजी फोरम होगी, इससे शिक्षण प्रशिक्षण के साथ अध्ययन व आकलन में तकनीक अहम हिस्सा बनेगी।

जिला परिषद एवं पंचायत समिति के आम चुनाव 2020 में

नारी शक्ति ने मारी बाजी

(नेनाराम सीरवी)
ब्यूरो चीफ पुष्पांजलि टुडे पाली

राजस्थान के पाली जिले में जिला परिषद के घोषित परिणामों में महिलाओं की लहर बरकरार रही। जिला प्रमुख एवं रानी पाली सोजत बाली सुमेरपुर के प्रधान पद के लिए महिलाएं निर्वाचित हुई। पाली जिला प्रमुख के रश्मि सिंह एवं पाली पंचायत समिति के प्रधान मोहनी देवी पटेल उपप्रधान भारती कुमावत। रानी पंचायत समिति के प्रधान श्याम कवर मेड़तिया। उप प्रधान शीला सिंह राजपुरोहित। निर्वाचित हुए।

जिला परिषद वार्ड संख्या 6 के भाजपा विजेता प्रत्याशी पूजा कवर। वार्ड संख्या 7से नंदनी सिरवी। वार्ड संख्या 8 से भाजपा विजेता प्रत्याशी अनुराधा सिंह। वार्ड संख्या 9 से भाजपा विजेता प्रत्याशी तनुश्री।वार्ड संख्या 11 से भाजपा विजेता प्रत्याशी पुष्पा देवी । वार्ड संख्या 16 से भाजपा विजेता प्रत्याशी संगीता। वार्ड संख्या 17 से भाजपा विजेता प्रत्याशी दुर्गा सिरवी।वार्ड संख्या 18 से भाजपा विजेता प्रत्याशी सुशीला कवर। वार्ड संख्या 19 से भाजपा विजेता प्रत्याशी मंजू देवी। वार्ड संख्या 20 से भाजपा विजेता प्रत्याशी दुर्गा।वार्ड संख्या 25 से भाजपा विजेता प्रत्याशी बुदी देवी। वार्ड संख्या 28 से मीनाक्षी भाजपा प्रत्याशी। वार्ड संख्या 29 से भाजपा विजेता प्रत्याशी सोनू देवी।वार्ड संख्या 32 से भाजपा विजेता प्रत्याशी सुमित्रा सरगरा। वार्ड संख्या 33 से भाजपा विजेता प्रत्याशी आशा देवी। इन सभी महिला प्रत्याशियों ने जिला परिषद के चुनाव में जीत हासिल की।

पाली पंचायत समिति से वार्ड संख्या 1 भाजपा विजेता प्रत्याशी मोहनी देवी पटेल।वार्ड संख्या 2 से भाजपा विजेता प्रत्याशी संगीता मीणा। वार्ड संख्या 3 से भाजपा विजेता प्रत्याशी शायरी देवी कुमावत। वार्ड संख्या 4 से कांग्रेस विजेता प्रत्याशी पुष्पा चौधरी। वार्ड संख्या 5 से कांग्रेस विजेता प्रत्याशी रेखा। वार्ड संख्या 6 से भाजपा विजेता प्रत्याशी पिस्ता कवर। वार्ड संख्या 7 से भाजपा विजेता प्रत्याशी प्रीति। वार्ड संख्या 8 से भाजपा विजेता प्रत्याशी भारती कुमावत। वार्ड संख्या 11 से भाजपा विजेता प्रत्याशी मंजू। वार्ड संख्या 14 से निर्दलीय विजय प्रत्याशी मंजू कंवर। सभी महिलाओं ने पाली पंचायत समिति के चुनाव में जीत हासिल की।

रानी पंचायत समिति वार्ड संख्या 1 के भाजपा विजेता प्रत्याशी संजू कवर मेड़तिया। वार्ड संख्या 2 से निर्दलीय विजेताप्रत्याशी विक्रम कंवर राणावत। वार्ड संख्या 3 से भाजपा विजेता प्रत्याशी दरिया मीणा। वार्ड संख्या 6 से कांग्रेस पार्टी के विजेता प्रत्याशी दीपिका कवर। संख्या 7 से भाजपा विजेता प्रत्याशी सुमित्रा राजपुरोहित। वार्ड संख्या 8 से भाजपा विजेता प्रत्याशी नवरत्न सिरवी। वार्ड संख्या 10 से भाजपा विजेता प्रत्याशी श्याम कवर मेड़तिया। वार्ड संख्या 11 से भाजपा विजेता प्रत्याशी लाली।वार्ड संख्या 15 से कांग्रेस पार्टी के विजेता प्रत्याशी शीला सिंह राजपुरोहित। इन सभी महिलाओं ने रानी पंचायत समिति के आम चुनाव 2020 में जीत हासिल की।

पाली पंचायत समिति और रानी पंचायत समिति के कई कद्दावर भाजपा और कांग्रेस पार्टी के नेता हारे और कई कद्दावर नेता की धर्मपत्नी को चुनाव के दौरान हार मिली।

पाली भाजपा किसान जिला प्रतिनिधि पुखराज पटेल अपने 40 वर्ष के राजनैतिक कैरियर के दौरान पाली पंचायत समिति के वार्ड संख्या 1 से अपनी धर्मपत्नी मोहनी देवी पटेल को चुनाव के लिए मैदान में उतारा। जिसमें वार्ड संख्या 1 के मतदाताओं द्वारा पुखराज पटेल के 40 वर्ष के राजनीतिक कैरियर को बढ़ावा देते हुए वार्ड संख्या 1 में उनकी धर्मपत्नी को जीत दिलाई। जिसमें भारतीय जनता पार्टी के शीर्ष नेतृत्व के आधार पर 40 वर्ष के राजनीतिक कैरियर को देखकर पुखराज पटेल के धर्म पत्नी को पाली पंचायत समिति के प्रधान पद के लिए चुना गया। और संपूर्ण विजेता प्रत्याशियों द्वारा मोहनी देवी पटेल के पक्ष में मतदान करके पाली पंचायत समिति के प्रधान बनाया गया।टेवाली सरपंच जोगाराम कुमावत की पुत्रवधू भारती कुमावत उप प्रधान बनाया गया। रानी पंचायत समिति के भूतपूर्व प्रधान की धर्मपत्नी को रानी पंचायत समिति के वार्ड संख्या 2 से हार मिली। पाली भाजपा जिला उपाध्यक्ष सुमित्रा राजपुरोहित। रानी पंचायत समिति के पूर्व प्रधान नवरत्न चौधरी। रानी कृषि मंडी के चेयरमैन गिरधारी सिंह मेड़तिया की धर्मपत्नी श्याम कवर मेड़तिया। बाल श्रम बोर्ड के भूतपूर्व उपाध्यक्ष भारत सरकार शिशुपाल सिंह राजपुरोहित निंबाड़ा की धर्मपत्नी शीला सिंह राजपुरोहित कोरानी पंचायत समिति के आम चुनाव 2020 के दौरान जीत मिली। पाली पंचायत समिति के पूर्व प्रधान नरेंद्र सिंह राठौड़ की धर्मपत्नी पूजा कवर। सीरवी इंडिया परिवार के वरिष्ठ समाजसेवी भंवर लाल सीरवी किसान केसरी गार्डन पाली के पुत्र वधू नंदनी सिरवी। पाली भाजपा जिला प्रतिनिधि एवं खोड भाजपा मंडल पूर्व अध्यक्ष मुकेश सीरवी की पुत्री दुर्गा सीरवी जिला परिषद के आम चुनाव 2020 के दौरान जीत मिली।

जिला परिषद एवं पंचायत समिति के आम चुनावों में विजयी महिला प्रत्याशी

नवीन भारत के भीष्म, पंडित अटल बिहारी वाजपेयी

भारतीय जनता पार्टी के पित्र पुरुष एवं पूर्व प्रधानमंत्री श्रद्धेय स्वर्गीय अटल बिहारी बाजपेई जी की जन्म जयंती अभी-अभी सुशासन दिवस के रूप में मनाई गई। श्री बाजपेई जी का जन्म 25 दिसंबर 1924 को मध्यप्रदेश के ही ग्वालियर शहर में एक संभ्रांत ब्राह्मण परिवार में हुआ था, आपके पिता का नाम श्री कृष्ण बिहारी वाजपेई जी था जो कि पैसे से शिक्षक थे एवं कवि हृदय भी थे।

श्रीमती सुधा तोमर
श्योपुर (म. प्र.)

श्री वाजपेई जी की प्रारंभिक शिक्षा ग्वालियर के विक्टोरिया कॉलेज से हुई थी, एवं उत्तर प्रदेश के कानपुर के डीएवी कॉलेज से आपने इकोनॉमिक्स से पोस्ट ग्रेजुएशन पूरा किया इसके बाद की आगे की पढ़ाई में उनका मन नहीं लगा और उन्होंने पढ़ाई छोड़ दी।

कहते हैं उनकी प्रारंभिक शिक्षा के कुछ वर्ष श्योपुर शहर के मध्य बसे पारख जी के बाग वाले स्कूल में भी पढ़ाई कर पूरे हुए ,यह श्योपुर निवासियों के लिए भी बड़े गौरव की बात है ऐसे प्रखर व्यक्तित्व एवं भारत रत्न के पैर शिवपुर की गलियों एवं सड़कों पर पड़े। पंडित अटल बिहारी वाजपेई जी के जीवन को पंडित श्यामा प्रसाद मुखर्जी के विचारों व सिद्धांतों ने काफी प्रभावित किया एवं यहीं से बाजपेई जीके राजनैतिक जीवन का सफर भी शुरू हुआ। श्री बाजपेई जी ने अपने राजनीतिक जीवन की शुरुआत जनसंघ से ही की, परंतु श्री श्यामा प्रसाद मुखर्जी की बीमारी एवं उनके स्वर्गवास के बाद वाजपेई जी के कंधों पर जनसंघ की पूरी जिम्मेदारी आ गई, एवं वह श्री मुखर्जी के स्वर्गवास के पश्चात जन संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष भी बने। जनसंघ से शुरू हुआ सफर प्रधानमंत्री के पद तक पहुंचा ,वह 16 मई 1996 को पहली बार देश के प्रधानमंत्री बने,हम सभी के लिए यह बड़ा दुखद विषय था कि वाजपेई जी का प्रथम कार्यकाल मात्र 13 दिन का ही था। दूसरी बार 1998 में वह दोबारा प्रधानमंत्री बने, जिसका कार्यकाल भी मात्र 13 महीने ही रहा और एकमात्र सीट से जय ललिता के द्वारा समर्थन वापस लेने से उनकी सरकार दोबारा गिर गई, परंतु वह एक सैद्धांतिक व्यक्ति थ उन्होंने अपने सिद्धांतों से समझौता ना करके सरकार को गिराना ही उचित समझा।

तीसरी बार वह 13 मई 1999 को फिर से प्रधानमंत्री बने जिसका कार्यकाल पूरे 5 वर्ष चला ।वह पंडित जवाहरलाल नेहरू के बाद देश के पहले प्रधानमंत्री थे जो तीन बार प्रधानमंत्री बने एवं विपक्ष के ऐसे पहले प्रधानमंत्री भी थे जिन्होंने घटक दलों को साथ मिलाकर सरकार बनाई और उसे पूरी समझदारी के साथ पूरी साझेदारी के साथ पूरे सहयोग के साथ 5 वर्ष तक चलाई, जिसने एक मिसाल कायम की और एक नई परंपरा की शुरुआत भी की।

वे राजनीति में 50 वर्षों तक सक्रिय रहे वे अपने जीवन काल में चार अलग-अलग राज्यों से सांसद चुने गए, वह पांच दशक तक संसद में सक्रिय रहे। उन्होंने महात्मा गांधी जी के साथ मिलकर भारत छोड़ो आंदोलन में भी भाग लिया और जेल की कठिन यात्रा भी की। श्री अटल जी बहुमुखी प्रतिभा के धनी व्यक्ति थे वह एक स्पष्ट वक्ता एवं कवि हृदय व्यक्ति भी थे। वह अपने भाषणों और कविताओं के माध्यम से पक्ष ही नहीं विपक्षी विचारधारा के लोगों को भी प्रभावित करते रहे, एवं सभी के प्रशंसक बने रहे।श्री अटल बिहारी वाजपेई जी ने किन्ही कारणों से शादी नहीं की एवं आजीवन वह अविवाहित ही रहे, फिर भी उन्होंने बी एन कॉल की दो बेटियों नमिता और नंदिता कॉल को गोद लिया। प्रधानमंत्री पद ग्रहण करने के मात्र 1 माह बाद ही श्री वाजपेई जी ने मई 1998 में राजस्थान के पोखरण में पांच अंडर ग्राउंड परमाणु विस्फोट करवाएं, चूंकि भारत पर परमाणु परीक्षण नहीं करने का अंतरराष्ट्रीय दबाव भी था फिर भी उसकी परवाह किए बिना उन्होंने परमाणु परीक्षण करवाया एवं अंतर्राष्ट्रीय वैश्विक समुदाय के दबाव को भी झेला।

उन्होंने स्वर्णिम चतुर्भुज योजना नेशनल हाईवे डेवलपमेंट प्रोजेक्ट,व प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के द्वारा दिल्ली मुंबई चेन्नई कोलकाता को जोड़ने का काम किया एवं भारत में फोरलेन का प्रोजेक्ट भी लेकर आए आज वही फोरलेन का प्रोजेक्ट भारत के अंदर सिक्स लेन से बढ़ता बढ़ता 14 और 16 लेन तक भी पहुंच चुका है इसीलिए उन्हें स्वर्णिम चतुर्भुज योजना का जनक कहा जाता है। उनकी विदेश नीति कूटनीति एवं नेतृत्व ने पूरे विश्व समुदाय को बहुत प्रभावित किया वह देश के पहले प्रधानमंत्री थे जिन्होंने प्रथम बार संयुक्त राष्ट्र सभा के अंदर हिंदी में भाषण दिया, हिंदी को विश्व भाषा मैं स्तरीय स्थान दिलाने के लिए यह उनका प्रथम प्रयास था उनका मानना था कि हिंदुस्तान की आत्मा हिंदी में ही बसती है। उन्होंने विभिन्न घटक दलों को मिलाकर एनडीए की स्थापना की। उन्होंने पड़ोसी मुल्क पाकिस्तान के साथ मित्रता वार्ता की एवं लाहौर के लिए बस यात्रा शुरू की,उन्होंने स्वयं उस बस में बैठकर लाहौर तक की यात्रा की एवं पाकिस्तान के तत्कालीन प्रधानमंत्री नवाज शरीफ के साथ मित्रता की वार्ता की। पर पाकिस्तान के संस्कारों को दोस्ती कम दुश्मनी ज्यादा रूचती है आता है पाकिस्तान ने भारत की तरफ से बढाए गए मित्रता के हाथ का जवाब कारगिल के युद्ध के रूप में दिया , और 1999 में भारत पर कारगिल का युद्ध थोप दिया । श्री बाजपेई जी ने कारगिल युद्ध का जवाब पाकिस्तानी सेना को शिकस्त देकर जीत कर दिया। एवं टोलोलिन के शिखर पर तिरंगा फहराया । श्री बाजपेई जी कहते थे की मित्र तो बदले जा सकते हैं परंतु पड़ोसी नहीं बदले जा सकते हैं, वह कहते थे कि पेड़ पर चढ़ा आदमी ऊंचा दिखता है और पेड़ के नीचे खड़ा आदमी नीचे दिखता है, अतः आदमी ना ऊंचा होता है और ना नीचे होता है ,ना छोटा होता है और ना बड़ा होता है आदमी सिर्फ आदमी होता है । वह कहते थे कि गंगा में बहती हमारी अस्थियों में यदि कान लगाकर सुनोगे तो हमारी अस्थियों से भी केवल एक ही आवाज आएगी भारत माता की जय।श्री बाजपेई जी ने 2001 में सर्व शिक्षा अभियान शुरू किया,एवं 2005 में राजनीति से संन्यास की घोषणा कर दी।श्री अटल बिहारी वाजपेई जी को वेस्ट सांसद, पदम विभूषण से सम्मानित किया गया। एवं 2014 में राष्ट्रपति ने स्वयं घर जाकर उन्हें भारत रत्न से भी सम्मानित किया। श्री अटल बिहारी वाजपेई जी को भारतीय इतिहास का भीष्म कहा जाता है वह धूमकेतु साहित्य के, राजनीति के संत ,अटल अचल अभिराम थे उन्होंने कई पत्र-पत्रिकाओं का संपादन भी किया जिसमें पांचजन्य प्रमुख था ।उनके द्वारा रचित मृत्युंजय कविता की कुछ पंक्तियां, थम गई मेरी मौत से ठन गई, जूझने का मेरा इरादा ना था, किसी मोड़ पर मिलूंगा बाद आना था। राह रोक कर खड़ी हो गई यूं लगा जिंदगी से बड़ी हो गई, ठन गई मेरी मौत से ठन गई।

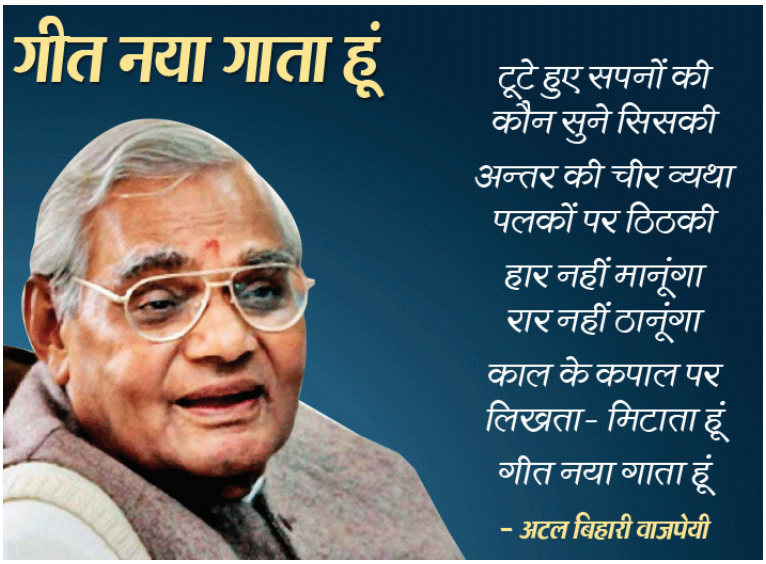

जैविक खेती समय की जरूरत

किसान भाई-बहनों,बिना रसायन वाली प्राकृतिक खेती ही जैविक खेती है। इसमें गोबर खाद, कम्पोस्ट, जीवाणु खाद, फसल अवशेष, फसल चक्र और प्रकृति में मिलने वाले खनिज पदार्थों द्वारा पौधों को पोषक तत्वों दिए जाते हैं। जैविक खेती में रोग व कीट प्रबंधन के लिए प्रकृति में मौजूद मित्र कीटों, जीवाणुओं, जैव एजेंट और जैविक कीटनाशकों का प्रयोग किया जाता है। रसायनों का प्रयोग नहीं होने से जैविक खेती कम मंहगी होती है और इससे निकलने वाले जैविक उत्पादों का मंडी भाव भी ज्यादा होता है। जैविक सब्जी की खेती करते वक्त अक्सर ये प्रश्न रहता है कि पौधों को समय-समय पर पोषक तत्वों, खाद-पानी, और कीटनाशक वगैरह की आवश्यकता पड़ती है, तो इन सब चीजों को कैसे दिया जाए।

सयाजी सीड्स के आज के अंक में इन्हीं सारी चीजों पर चर्चा की गयी है।

सब्जी की जैविक खेती में इन बातों का अवश्य ध्यान रखें

1- गर्मियों में खेत की गहरी जुताई द्वारा ज़मीन में निष्क्रिय पड़े कीटों और रोगों को नष्ट कर दें।

2- रोग-कीट से बचाव के लिए संक्रमित पौधे को तुरंत हटा दें।

3 समय-समय पर खेत में ज़मीन की निराई-गुड़ाई करके खरपतवार निकाल दें।

4- सड़ी हुई जैविक खाद जैसे एफवाईएम को 12.5 से लेकर 25 टन प्रति हेक्टेयर के हिसाब से डालें।

5- मिट्टी में लगने वाले रोग जैसे कि दीमक की रोकथाम के लिए अरंडी या नीम की खली की 1 टन मात्रा को प्रति हेक्टेयर के हिसाब से डालें।

6- मिट्टी के रोग उपचार हेतु ट्राइकोडर्मा विरडी या स्यूडोमोनास फ्लोरेसेंस की 2.5 किलो और कीट प्रबंधन के लिए ब्यूवेरिया बेसियाना या मेटाराइज़ियम एनीसोपली की 2.5 किलो मात्रा को 100 किग्रा एफवाईएम के साथ मिलाकर उसे 1 हेक्टेयर भूमि में छिड़काव करें।

7- बीजों से पैदा होने वाले रोगों की रोकथाम के लिए ट्राइकोडर्मा विरडी या स्यूडोमोनास फ्लोरेसेंस की 10 ग्राम-मिली मात्रा को प्रति किलोग्राम बीज के हिसाब से उपचारित करें। पोषक तत्वों की आपूर्ति को बनाए रखने के लिए एज़ोस्पिरिलम और फॉस्फोट घुलनशील बैक्टीरिया या पोटाश का इस्तेमाल करें।

8- जैविक सब्जी की खेती में रोग एवं कीट नियंत्रण के लिए सब्जी फसल की प्रतिरोधी या सहनशील किस्म लगाएं।

9- रोग की जानकारी मिलते ही, ताजा गोबर के अर्क की 200 मिलीलीटर मात्रा को प्रति लीटर के हिसाब से पानी के साथ मिश्रित करके दिन में दो बार और उसके बाद दो सप्ताह के अंतराल पर छिड़काव करें।

10- कीट और व्याधि नियंत्रण के लिए, 60 ईसी नीम के तेल को 30 मिली लीटर या एनएसकेई की 50 मिली मात्रा को प्रति लीटर पानी में मिलाकर महीने में दो बार छिड़काव कर दें।

11- रोग नियंत्रण के लिए, सुबह या शाम में जैव नियंत्रण एजेंट जैसे कि स्यूडोमोनास फ्लोरेसेंस की 100 ग्राम मात्रा को प्रति लीटर के हिसाब से छिड़काव करें।

12-जैविक खेती मिट्टी की उर्वरा शक्ति और जल धारण क्षमता को बढ़ाती है। अगर आप जैविक सब्जी की खेती शुरु करने के अभिलाषी हैं तो आपको 3 साल तक किसी भी तरह के रसायनों के प्रयोग से दूर रहना चाहिए। मित्रों, आज कोरोनावाइरस कमजोर लोगों को अपना शिकार बना रहा है। जैविक सब्जियों का हर दिन सेवन आपके शरीर के प्रतिरक्षा तंत्र को मजबूत बनाता है और कोरोना जैसी भयंकर बीमारियों के सामने कवच बनकर आपकी रक्षा करता है। तो क्यों न आज से ही ऑर्गेनिक सब्जी की खेती प्रारंभ करें और मिट्टी व शरीर दोनों को स्वस्थ रखें और हमारे मित्र सच्चे साथी सखा दोसतो रिसतेदारो गुरूजनो को रसायन मुक्त अनाज गिफ्ट स्वरूप दे। हम सब को मिलकर धरती माता को रसायन मुक्त करना है गाय आधारित प्राकृतिक खेती कि शुरूआत करे कम से कम एक एकड़ में जैविक खेती कि अभिनव पहल कि शुरूआत करे हम सब लोग मिलकर जैविक खेती को बढ़ावा दें और जहर मुक्त अन्न की उपज कर देश के लोगों को स्वस्थ भोजन प्रदान करने की दिशा में आवश्यक कदम बढ़ाए स्वस्थ समाज के निर्माण में अपनी अहम भूमिका निभाए जय हिंद जय भारत जय जय जैविक कृषि।

भदौरिया वंश का इतिहास

इस वंश का प्रारंभ कुछ इतिहासकारों एवं भदौरिया वंश के बुजुर्ग जानकारों के अनुसार यादनाथ से बताया जाता है। यादनाथ के बाद अगन वंश की चार शाखाएँ हुई कुछ लोगों के अनुसार ए चार शाखाएँ हैं - परिहार,पवांर,सोलंकी और चौहान। इनमें से चौहान ने अपनी राजधानी अजमेर (राजस्थान) को बनाया। इसी वंश में आगे चलकर राजा माणिक राव (मानिक राव) नाम के चौहान राजा हुये। इनकी 14 रानियाँ थी और इन रानियों के कुल 24 राजकुमार हुए। इन्हीं 24 राजकुमारों ने 24 शाखाएँ स्थापित की, वो इस प्रकार हैं -

1) हाडा 2) खींची 3) सोनीगारा 4) पाविया 5) पुरबिया 6) संचौरा 7) मेलवाल 8) भदौरिया 9) निर्वाण 10) मलानी 11) धुरा 12) मडरेवा 13) सनीखेची 14) वारेछा 15) पसेरिया 16) बालेछा

17) रूसिया 18) चांदा 19) निकूम 20) भावर 21) छछेरिया 22) उजवानिया 23) देवडा 24) बनकर । ये 24 शाखाएँ अजमेर से निकलकर अलग - अलग जगह स्थापित हों गई। माणिक राव के 8वें पुत्र का नाम राजा चंद्रपाल देव था। माणिक राव ने सन् 720 ईस्वी से 794 ईस्वी तक राज्य किया था। उनके पुत्र चंद्रपाल देव (794ई.-816ई.) ने '' चंद्रवार '' राज्य की स्थापना की थी। जिसे आजकल '' फिरोजाबाद'' के नाम से जाना जाता है। भदौरिया वंश का गौत्र- वत्स, वेद- श्याम, देवी - भद्रकाली, देवता - शिव, पक्षी - कबूतर (परेवा), नगाडा - रणजीत, तीर्थ स्थान - बटेश्वर और दशहरा के दिन खड्ग की पूजा होती है तथा निशान - केसरिया है। चंद्रपाल देव के पुत्र राजा भदों राव (816ई.-842ई.) ने ''भदौरागढ'' नामक नगर की स्थापना की। जिसे वर्तमान में ''पिन्हाट'' के नाम से हम सब जानते हैं। राजा भदों राव को ''भादूराणा'' के नाम से भी जाना जाता था। '' भदौरा गढ'' के निवासी होने कारण यह वंश ''भदौरिया वंश'' के नाम से जाना जाता है। भदौरिया वंश में विवाह 21 पीढी के अन्तर से प्रारंभ हो गया था। 28 पीढी तक भदौरिया और चौहानों में रिश्ता नहीं होता था। 28 पीढी तक भदौरिया वंश की राजधानी '' भदौरागढ'' रही। राव कज्जल देव ने (1123ई.-1163ई.) ने 1153ई.में हथिकाथ पर कब्जा करके अपने राज्य की सीमा बाह तहसील तक बढा दी।

ईश्वर के प्रतिनिधियों में ,
किसान धरती पर देखा है !

हर मुश्किल में खड़ा खेत में,
कैसा भी संघर्ष घना है !

कुआ खोद कर नीर निकाले,
प्रकृति से युद्ध ठना है !

जीवन के हर एक कदम पर,
रोज नया संघर्ष घना है !

चैन से भोजन या नही पाता,
कर्ज में सारा जीवन जाता है !

उत्पाद बाजार ले पहुँचे ,
मन से नही बेच वह पाता है !

ओने पौने भाव लगाकर ,
व्यापारी उनको भरमाता है !

दुनियां का इकला उत्पादक ,
मूल्य खरीदार बतलाता है !

खून पसीना लगा फसल में ,
अपना हक ले नही पाता है !

डॉ एल एस किरार
अम्बाह जिला मुरैना

प्यारी आकाशी

साक्षी अर्पित गुप्ता, दबोह भिंड मप्र

अंगना में आने से जिसके आई थी बहार
चह चहाती है चिडियी जैसी वो जिसपे लुटाते हैं सभी प्यार।
माँ-पापा की आंखों का तारा है
दादी की प्यारी तो नानी की राजदुलारी वो कहलाती है।
नाना की जान जिसमे बसती है
वहीं मौसी ने भी माना उसे सारा जहान है।
मामा से मिलते आकाशी को बड़े उपहार हैं
क्योंकि सभी को नटखट आकाशी से बड़ा प्यार है।
आंगन में जब चिड़ियों सी वह चह चहाती है
सबके चेहरों पर मुस्कान जिसके हंसने से आती है।
छोटी है सबसे और घर की लाड़ली भी इसलिए सभी के हिस्से का प्यार भी वही पाती है।

स्त्री की निःस्वार्थ प्रेम वाणी.....

आसान नहीं होता दिमाग वाली स्त्री से प्रेम करना। क्योंकि उसे पसंद नहीं होती जी हजूरी करना।।
झुकती नहीं वो कभी जबतक न हो। रिष्तों और प्रेम की मजबूरी ।।
तुम्हारी हर हॉ में हॉ और न में न कहना वो नहीं जानती। क्योंकि उसने सीखा ही नहीं झूठ की डोर में रिष्तों को बांधना वो नहीं जानती।।
स्वांग की चाषनी में डुबोकर अपनी बात मनवाना। वो नहीं जानती है बेवाकी से सच बोल जाना।।
फिज़ूल की की बहस में पडना,उसकी आदतों में षुमार नहीं। लेकिन वो जानती है तर्क के साथ अपनी बात रखना।।
वो क्षण-क्षण गहने कपडे की मांग नहीं किया करती। वो तो संवारती है स्वयं को अपने आत्मविष्वास से निखारती है अपना व्यक्ति्तव,मासूमियत भरी मुस्कान से तुम्हारी गलतियों पर तुम्हें टोकती है,वो तकलीफमें तुम्हें संभालती है।।
उसे घर संभालना बखूबी आता है। तो अपने सपनों को पूरा करना भी अगर नहीं आता तो

किसी की अनर्गल बातों को मान लेना भी आता है।।
पौरूश के आगे वो नतमस्तक नहीं होती। झुकती है तो नि:स्वार्थ प्रेम के आगे और इस प्रेम की खातिर अपना सर्वस्व न्योछावर करती।।
हौंसला हो निभाने का तभी एक स्त्री से प्रेम करना। क्योंकि वो टूट जाती है,धोके से छलावे से फिर जुड नहीं पाती किसी के प्रेम धागे से.....।।

दत्ताजी और जनकोजी सिंधिया ने पेशवा का विश्वास अर्जित किया

डॉ. सुरेश सम्राट
वरिष्ठ संपादक, लेखक
9406502099

औरंगजेब की मृत्यु के बाद, मुगल सल्तनत के बुरे दिन शुरू हो गए। उसके उत्तराधिकारी बहादुरशाह प्रथम (1707) जहांदार शाह (1702) और फर्रूखशियर (1713) के बाद सन् 1719 में तो हालात इतने बदतर हो गए कि एक के बाद एक तीन सम्राट बदले। पहले रफीउद्दाराजात, फिर रफी उद्दौला और फिर मोहम्मद शाह एक साल के भीतर सम्राट बने। मोहम्मद शाह (1719-1748) अहमद शाह (1748-1754) के बाद आलमगीर द्वितीय ने सन् 1954 में गद्दी संभाली। लेकिन औरंगजेब की मृत्यु से आलमगीर द्वितीय के सम्राट बनने की लगभग 47 वर्ष की अवधि में ग्वालियर क्षेत्र आगरा सूबे के अधीन बना रहा। आलमगीर द्वितीय के काल में जब कसवर अली ग्वालियर दुर्ग का किलेदार था, उसी समय एक आकस्मिक घटना के कारण दुर्ग, गोहद के राणा के हाथों में जाने के बाद मराठों के कब्जे में चला गया।

सन् 1755 में ग्वालियर दुर्ग पर पेशवा का झण्डा फहरा देने के आसपास के दौर और बाद की अवधि में मराठों और विशेषकर सिंधिया परिवार को कठिन परिस्थितियों ने घेर लिया। सिंधिया परिवार को तो जनहानि का बहुत बड़ा वज्रपात झेलना पड़ा। हालांकि उस दौर में दत्ताजी सिंधिया ने पेशवा की नजर में अच्छा रूबता हासिल कर लिया था और जनकोजी ने भी मराठा सेना में अपनी धाक जमा ली थी। लेकिन यह वह समय था, जब परिस्थतियों का चक्र बड़ी तेजी से उतार-चढ़ाव वाला इतिहास रच रहा था। यदि थोड़ा पीछे हटकर देखें तो मुगलों और मराठों के बीच हुए एक समणैते के बाद मराठा शक्ति सन् 1753 तक, लगभग दो वर्ष, दिल्ली की राजनीति में उमझी रही। उधर सिंधिया और होल्कर के बीच की ईर्ष्या के कारण, राजस्थान में भी मराठों की राजपूत-नीति की आलोचना होने लगी। लेकिन इस दौरान मराठों और मुगलों ने अफगानों को पराजित करके, इतिहास की दिशा बदल देने के अवसर को न्यौता दे दिया। तब पराजित पठानों के मुखिया नजीब खां ने अफगानिस्तान के बादशाह अहमद शाह अब्दाली को भारत पर आक्रमण करने का आमंत्रण भेजा। अब्दाली पहले से ही ऐसे अवसर की तलाश में था। उसने मार्च 1752 में ज्यों ही लाहौर पर कब्जा किया, मुगल सम्राट के पैरों तले जमीन खिसक गई। उसने घबराहटपूर्ण स्थिति में 12 अप्रैल 1752 को मराठों से एक संधि की। इस संधि से मराठों को अनेक लाभ मिलने वाले थे। लेकिन इसी बीच भयभीत सम्राट ने पंजाब और सिंध पर अब्दाली के अधिकार को मान्यता दे दी। तब मराठा उत्तर पश्चिम में ही अपने लिए संभावनाएं तलाशने तक सीमित हो गए। दूसरी ओर सम्राट के साथ हुए समझौते की पुष्टि के बाद अब्दाली लाहौर वापस लौट गया।

इन परिस्थितियों ने मुगल सल्तनत के समक्ष ब्राह्य एवं आंतरिक

दोनों स्तरों पर अनेक जटिल चुनौतियां खड़ी कर दीं। इस मौके का लाभ उठाते हुए होल्कर ने सल्तनत के इमाद-उल-मुल्क गाजीउद्दीन के साथ मिलकर सिकन्दरबाद के निकट मुगल सम्राट

अहमद शाह के शिविर पर आक्रमण कर दिया और 2 जून 1754 को दिल्ली पहुंचकर अहमदशाह के स्थान पर आलमगीर द्वितीय को गद्दी पर बैठा दिया। होल्कर द्वारा 82 लाख रुपए के लोभ में किए गए इस कृत्य से मराठों की प्रतिष्ठा को भारी धक्का लगा। इसी बीच मुगलों और मराठों से खफा और इतिहास पटल पर तेजी से उभरते पठान सरदार नजीब खां ने अब्दाली की ताकत में ही अपना भविष्य तलाशना शुरू कर दिया। वह गोपनीय तरीके से मराठों और मुगलों के बारे में अब्दाली को सूचनाएं देकर पुनः आक्रमण के लिए भटकता रहा। इन सूचनाओं के आधार पर जब अब्दाली ने दिल्ली के लिए कूच किया, तब पेशवा ने रघुनाथ राव को सम्राट की सहायता के लिए दिल्ली पहुंचने का आदेश दिया। लेकिन फरवरी-मार्च 1757 में जब अब्दाली दिल्ली में कत्लेआम करके वहां से वापस भी हो लिया, तब तक रघुनाथराव दिल्ली नहीं पहुंचा। उसने बीच में ही होल्कर के साथ एक निरर्थक से विवाद में उलझकर महत्वपूर्ण समय गवां दिया। जब वह दिल्ली पहुंचा तो अब्दाली तो नहीं, उसका प्रतिनिधि नजीब खां उसके हाथ लगा। लेकिन उसने नजीब को सबक सिखाए बिना, रिश्वत लेकर उसे छोड़ दिया। यही नहीं आलमगीर द्वितीय को पुनः दिल्ली सिंहासन पर बिठा दिया। नजीब को छोड़ देने की रघुनाथराव की यह भूल इतनी बड़ी थी कि आगे चलकर मराठा शक्ति को भारी जनहानि और अपनी प्रतिष्ठा से उसकी कीमत चुकानी पड़ी। हालांकि आगे की कार्रवाई में रघुनाथ राव ने कुंजपुरा और सरहिन्द को जीतकर लाहौर और पेशावर पर भी पकड़ बना ली, लेकिन पेशवा जानता था कि इसमें स्थायित्व नहीं है। अतः उसने होल्कर को आदेश दिया कि वह लाहौर जाकर मराठों की स्थिति को मजबूत करे। पेशवा ने यह भी कहा कि जब तक दत्ता जी सिंधिया लाहौर न पहुंच जाएं, तब तक होल्कर वहीं रहे। लेकिन होल्कर ने ऐसा नहीं किया।

उधर रघुनाथराव भी दत्ता जी के लाहौर पहुंचने के आठ माह पूर्व सन् 1758 में वहां से पूना रवाना हो गया। तब वहां तुकोजी और साबा जी सिंधिया ने सीमा प्रांत की कमान संभाली और अटक को जीतकर उन्होंने वहां वसूली अभियान को गति दी। पेशवा के आदेश पर दत्ता जी सिंधिया भी लाहौर पहुंच गया। वहां उसने अप्रैल 1759 में साबाजी को पंजाब पर नियंत्रण बनाए रखने के लिए नियुक्त किया और स्वयं ने शुक्रताल में अपना डेरा जमा लिया। दत्ताजी सिंधिया और जनकोजी ने इस समय तक होल्कर और रघुनाथ राव की तुलना में पेशवा का अधिक विश्वास अर्जित कर लिया था। इसका प्रमाण वह पत्र है, जिसमें पेशवा ने मुगलों के संबंध में मराठों की नीति स्पष्ट करते हुए दत्तजी और जनकोजी को 21 मार्च 1759 को लिखा था कि जो कोई पचास लाख रुपए देने का वचन दे, उसी को बजीर बना दिया जाएगा।

लेकिन निजी स्वार्थों को लेकर मराठा सरदारों के बीच जो आंतरिक कलह चल रही थी, उसमें पेशवा के ऐसे विश्वसनीय लोगों का मार्ग बहुत सरल नहीं रह गया था। यही वजह रही कि आगे के मात्र दो वर्षों में मराठों के सामने जो जटिल चुनौतियां आईं, उनमें दत्ताजी सिंधिया, तुकोजी सिंधिया और जनकोजी सिंधिया जैसे विश्वसनीय सहयोगियों को जान से हाथ धोना पड़ा। उधर रघुनाथ राव और होल्कर जैसे मराठा सरदार अपनी कूटनीति या पलायन के कारण बचे रहे और इतिहास की गाड़ी खींचते रहे। लेकिन सिंधिया परिवार का एक सदस्य अभी भी इतिहास के अंधेरे में था। उसका नाम था महादजी सिंधिया अत्यंत जटिल और विसंगतिपूर्ण परिस्थितियों में उसने स्वयं के बल पर, अपने लिए जमीन बनाई और आगे चलकर, अपनी तलवार की नौंक पर ऐसा इतिहास लिखा कि सिंधिया परिवार का पराक्रम एक बार फिर चमक उठा।

स्वस्थ रहना है तो ठण्ड के मौसम में ज़रूर करे इन फलो का सेवन

सर्दियों की शुरुआत हो चुकी है, इस मौसम में सेहत का खास ध्यान रखने की ज़रूरत होती है क्योकि इस मौसम में अधिक ठण्ड होने के कारण बीमार पड़ने का खतरा बढ़ जाता है, इसलिए आज हम आपको कुछ ऐसे फलो के बारे में बताने जा रहे है जिनका सेवन करने से आप ठण्ड के मौसम में भी स्वस्थ रह सकते है.

1- वैसे तो सेब हमारी सेहत के लिए हमेशा ही फायदेमंद रहता है पर ठण्ड के मौसम में इसके लाभ दोगुने हो जाते है. अगर आप सर्दियों के मौसम में नियमित रूप से एक सेब का सेवन करते है तो इससे दिल मजबूत होता है साथ ही भूलने की बीमारी से भी छुटकारा मिलता है.

2- सर्दियों के मौसम में संतरे का सेवन भी बहुत फायदेमंद होता है, इसमें भरपूर मात्रा में विटामिन सी मौजूद होता है जिसके कारण ठण्ड के मौसम में इसके सेवन से सर्दी-जुखाम नहीं होता और बॉडी की इम्युनिटी

पावर भी बढ़ती है, अगर आप नियमित रूप से एक संतरे का सेवन करते है तो आपको कभी भी एंटीबायॉटिक दवाएं खाने की जरुरत नहीं पड़ेगी.

3- लाल अंगूर भरपूर मात्रा में विटामिन सी, ए और बी6 मौजूद होते है और साथ ही इसमें भरपूर मात्रा में फोलेट, पोटैशियम, आयरन, कैल्शियम आदि पाए जाते है, सर्दियों के मौसम में इसके सेवन से कब्ज, थकान और पेट संबधी कोई बीमारी नहीं होती है.

4- कीवी में विटामिन सी की भरपूर मात्रा पायी जाती है, अगर आप नियमित रूप से नाश्ते में कीवी फल में हल्का सा नमक छिड़क कर खाते है तो इससे शरीर गरम रहता है और ठंड नहीं लगती.

सर्दियों के मौसम में ज़रूर करे गाजर करे जूस का सेवन

ठण्ड के मौसम में लाल लाल गाजर खाना बहुत अच्छा लगता है पर क्या आपको पता है की गाजर हमारी सेहत के लिए भी बहुत फायदेमंद होती है. नियमित रूप से कच्ची गाजर खाने या इसका जूस पीने से आप अपने शरीर को कई समस्याओ से बचा सकते है, गाजर में भरपूर मात्रा में औषधीय गुण मौजूद होते है, जो आपकी सेहत को हमेशा

तंदरुस्त बनाये रखने में आपकी मदद करते है,. अगर आपको हमेशा कमज़ोरी महसूस होती है तो रोज सुबह खाली पेट में आधा गिलास गाजर के जूस में पालक का रस मिलाये और फिर इसमें भुना जीरा, काला नमक मिला कर पिए इससे शरीर की कमजोरी दूर हो जाती है. ठण्ड के मौसम में नियमित रूप से गाजर के जूस का सेवन करने से आपकी बॉडी अंदर से गर्म रहती है इसके अलावा अगर आपको ठण्ड के कारण सर्दी जुकाम हो गया है तो गाजर के रस में काली मिर्च मिला कर पिए, ऐसा करने से सर्दी-खांसी, जुकाम और कफ की समस्या ठीक हो जाती है. पेट के लिए भी गाजर का सेवन बहुत फायदेमंद होता है, अगर आपको पेट से जुडी समस्याएँ रहती है तो इसके लिए नियमित रूप से गाजर के रस में नींबू और पालक का रस मिलाकर पिए, इससे पेट तो स्वस्थ रहता है साथ ही कब्ज की समस्या दूर होती है.

दिमाग को तेज बनाता है टमाटर

शरीर के साथ साथ दिमाग का स्वस्थ रहना भी बहुत ज़रूरी होता है, पर उम्र के बढ़ने के साथ ही हमारे दिमाग के सेल्स सिकुड़ने लगते है जिससे इनको बहुत नुकसान पहुँचता है, आज के समय में तो सिर्फ बड़े ही नहीं बल्कि बच्चे भी दिमाग के कमज़ोर होने की समस्या का शिकार हो रहे है. जिसके कारण वो कम उम्र में ही डिप्रैशन का शिकार हो जाते है, अगर आप भी बार बार भूल जाते है तो इसका मतलब ये है की धीरे धीरे आप भी दिमागी कमज़ोरी का शिकार हो रहे है. ऐसे में आपको कुछ खास आहारों का सेवन करने की ज़रूरत है इन आहारों के सेवन से आपका दिमाग तेज हो जायेगा पालक में भरपूर मात्रा में नेचुरल रूप से एंटीऑक्सीडेंट गुण मौजूद होते हैं जो हमारी सेहत के लिए बहुत फायदेमंद होते है, पालक में भरपूर मात्रा में आयरन और मैग्नीशियम पाए जाते है जो याद रखने की क्षमता को बढ़ाते है और खून को दिमाग से लेकर शरीर के अन्य हिस्सों तक पहुंचाने का काम करते है. अलसी के बीज भी याद रखने की क्षमता को बढ़ाने का काम करते है, अलसी के बीजों में भरपूर मात्रा में फाइबर और प्रोटीन मौजूद होते है अगर आप अलसी के बीजों को दही का सेवन करते है तो इससे दिमाग तेज होता है.

कब्ज़ की समस्या से छुटकारा दिलाता है अमरुद

अमरूद एक बहुत ही मीठा और स्वादिष्ट फल होता है, पर क्या आपको पता है की अमरुद हमारी सेहत के लिए भी बहुत फायदेमंद होता है, अमरुद से कई बीमारियों का इलाज भी किया जा सकता है, अमरूद में भरपूर मात्रा में विटामिन सी, विटामिन ए, कैल्शियम, आयरन जैसे सभी जरूरी पोषक तत्व पाए जाते हैं. सिर्फ अमरुद ही नहीं बल्कि इसके बीज और पत्तियां भी हमारी सेहत के लिए बहुत फायदेमंद होते है, आज हम आपको अमरुद के कुछ फायदों के बारे में बताने जा रहे है. अगर आप पेट से जुडी समस्याओं से परेशान रहते है तो नियमित रूप से सुबह खाली पेट में अमरूद को काले नमक के साथ खाएं. ऐसा करने से आपकी पाचन क्रिया दुरुस्त हो जाएगी. और पेट से जुडी और भी कई समस्याएं दूर होगी. कई बार बच्चो के पेट में कीड़े हो जाते है जिसके कारण बहुत परेशानी होती है, अगर आप भी इसी समस्या से परेशान है तो अपने बच्चे को अमरूद खिलाये. अमरुद के सेवन से पेट के सभी कीड़े मर जाते है. अमरुद के इस्तेमाल से आँखों की सूजन को भी दूर किया जा सकता है, इसके लिए अमरूद की पत्तियों को पीसकर अपनी आंखों के नीचे लगाएं. ऐसा करने से आपकी आँखों के नीचे की सूजन दूर हो जाएगी. आजकल अधिकतर लोग कब्ज की समस्या से परेशान रहते है. अगर आप कब्ज़ की समस्या से छुटकारा पाना चाहते है तो रोज सुबह खाली पेट पका हुआ अमरूद खाएं. ऐसा करने से कब्ज की समस्या दूर हो जायेगी.

राजस्थान के एतिहासिक पर्यटन स्थल

नव वर्ष 2021 और कोरोना के बीच राजस्थान के ऐतिहासिक पर्यटन स्थलों की सैर के लिए पर्यटक राजस्थान भारी संख्या में पहुंच रहे हैं राजस्थान के पर्यटन स्थलों की सैर किए बिना आपकी पर्यटन यात्रा अधूरी रहेगी। वहीं राजस्थान के पर्यटन स्थलों की बात करें तो जोधपुर न सिर्फ राजस्थान का दूसरा सबसे बड़ा शहर है, बल्कि यह जयपुर के बाद राजस्थान का दूसरा सबसे अधिक आबादी वाला शहर भी है। शहर की स्थापना 1459 में राठौड़ राजपूत शासक, मारवाड़ के राव जोधा सिंह द्वारा की गई थी। जोधपुर को सन सिटी भी कहा जाता है। क्षेत्रफल के आधार पर राजस्थान भारत का सबसे बड़ा राज्य है। यहां पर आपको घूमने के लिए कई बेहतरीन जगहें मिल जाएंगी।

जयपुर

राजस्थान राज्य की राजधानी जयपुर की स्थापना 1727 में कछवाहा राजपूत शासक सवाई जयसिंह द्वितीय द्वारा की गई थी, जो अंबर के शासक थे। इसकी इमारतों के गुलाबी रंग के कारण जयपुर को डपक सिटी ऑफ़ इंडिया के नाम से भी जाना जाता है। इस शहर की योजना वैदिक वास्तु शास्त्र (भारतीय वास्तुकला) के अनुसार की गई थी। 2008 के कॉनडे नास्ट ट्रैवलर रीडर्स चॉइस सर्वे में, जयपुर को एशिया में घूमने के लिए सर्वश्रेष्ठ स्थानों में से सातवां स्थान दिया गया था।

उदयपुर

इसे झीलों का शहर भी कहा जाता है। यह शहर मेवाड़ के सिसोदिया राजपूतों की राजधानी था और अपने महलों के लिए प्रसिद्ध है जो राजपुताना शैली की वास्तुकला की भव्यता का प्रतीक है। उदयपुर की स्थापना 1553 में सिसोदिया राजपूत शासक महाराणा उदय सिंह द्वितीय ने की थी। आज यहां पर अधिकांश महलों को होटलों में बदल दिया गया है और दूर-दूर से लोग इन होटलों में आकर एक राजसी अनुभव करना चाहते हैं।

जोधपुर

जोधपुर न सिर्फ राजस्थान का दूसरा सबसे बड़ा शहर है, बल्कि यह जयपुर के बाद राजस्थान का दूसरा सबसे अधिक आबादी वाला शहर भी है। शहर की स्थापना 1459 में राठौड़ राजपूत शासक, मारवाड़ के राव जोधा सिंह द्वारा की गई थी। जोधपुर को सन सिटी भी कहा जाता है। इसे पश्चिमी राजस्थान का सबसे महत्वपूर्ण शहर माना जाता है क्योंकि यह भारत-पाकिस्तान सीमा से केवल 250 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। जोधपुर एक महत्वपूर्ण पर्यटन स्थल भी है। यहां पर आने वाले सैलानियों के लिए देखने के लिए बहुत कुछ है।

गोल्डन फोर्ट

अगर आप जैसलमेर जाते हैं तो वहां का सबसे अच्छा अनुभव है गोल्डन फोर्ट, ये काफी खूबसूरत फोर्ट है जहां आप दिन में घूम सकते हैं और यहां पर रात में स्टे भी कर सकते हैं। रात में रुकने के लिए आपको पहले से ही बुकिंग करवानी पड़ेगी। आप गोल्डन फोर्ट की वेबसाइट पर जाकर वहां से अपना होटल बुक कर सकते हैं। यहां हर सात अलग-अलग तरह के इवेंट होते है। इवेंट के हिसाब से ही यहां के होटल के रेट भी बदलते हैं और वहां रहने का अनुभव भी बदलता है। गोल्डन फोर्ट में एक समय में केवल 300 लोग ही रह सकते हैं इसके लिए आपको यहां पर पहले बुकिंग करवानी होगी क्योंकि लोग जल्दी से होलट बुक कर लेते हैं। यह फोर्ट पर्यटकों के लिए सुबह 9 बजे खुल जाता है और शाम 5 बजे तक खुला रहता है।

ऑनलाइन ट्यूशन के क्षेत्र में कुछ इस तरह बनाएं अपना कॅरियर

ऑनलाइन ट्यूशन वास्तव में होम ट्यूशन का ही एक एडवांस मैथड है। इसमें ई-ट्यूटरिंग के जरिए बच्चों को पढ़ाया जाता है। ऑनलाइन ट्यूटरिंग का मूल लाभ यह है कि ट्यूटर छात्र को किसी भी स्थान से, यहां तक कि वह अपने घर पर रहकर भी टीचिंग कर सकता है। पिछले कुछ समय में देश में बच्चों के पढ़ने का तरीका काफी बदल गया है। वैसे तो भारत में ऑनलाइन टीचिंग काफी समय से पॉपुलर है, लेकिन कोरोना काल ने इसे काफी बढ़ावा दिया है। लंबे समय से स्कूल बंद है और बच्चे घर पर ही ऑनलाइन पढ़ाई कर रहे हैं। इतना ही नहीं, अब ट्यूशन भी आस-पड़ोस में ना रहकर ऑनलाइन अधिक होने लगी है। कुछ समय पहले तक ऑनलाइन ट्यूटर दूसरे राज्य या दूसरे देश के बच्चों को कंप्यूटर की मदद से पढ़ाया करते थे। लेकिन अब तो अधिकतर घरों में अभिभावक ऑनलाइन ट्यूटर को ही हायर करते हैं। जिसके कारण इस क्षेत्र में कॅरियर की संभावनाएं काफी बढ़ गई हैं। अगर आप भी इस क्षेत्र में कॅरियर बनाना चाहते हैं तो पढ़िए यह लेख-

योग्यता

कॅरियर एक्सपर्ट की मानें तो एक ऑनलाइन ट्यूटर के पास विशेषज्ञता के आधार पर योग्यता होनी आवश्यक है। मसलन, आप किसी विशेष भाषा के ऑनलाइन ट्यूटर बनना चाहते हैं तो आपको उस भाषा से संबंधित कम से कम सर्टिफिकेट कोर्स अवश्य करना चाहिए। इसके अलावा, बीएड, एमएड या नेट, आदि के बाद भी आप शिक्षण के क्षेत्र को चुन सकते हैं।

पर्सनल स्किल्स

एक ऑनलाइन ट्यूटर बनने के लिए सबसे जरूरी स्किल है पढ़ाई के प्रति जुनून। अर्थात् ना सिर्फ आपको

दूसरों को पढ़ाना पसंद होना चाहिए, बल्कि खुद भी हमेशा कुछ ना कुछ नया सीखने की चाहत होनी चाहिए। चूंकि आप ऑनलाइन टीचिंग कर रहे हैं, इसलिए आपमें तकनीकी गुण भी होने चाहिए। मसलन, कंप्यूटर व इंटरनेट के इस्तेमाल के साथ-साथ बच्चों के लिए प्रेजेंटेशन आदि भी बनाने आने चाहिए। इसके अलावा, ऑनलाइन टीचिंग के दौरान आपके कम्युनिकेशन स्किल भी काफी अहम् हैं। याद रखें कि दूसरों को पढ़ाना एक बेहद सीरियस काम है और इसके लिए कमिटमेंट की जरूरत होती है।

ऐसे बनें ऑनलाइन ट्यूटर

ऑनलाइन ट्यूटर बनने के लिए आपको बहुत अधिक मेहनत करने की आवश्यकता नहीं है। अगर आप अब तक ट्यूशन पढ़ाते आए हैं तो अब आप उन्हीं बच्चों को ऑनलाइन ट्यूशन पढ़ाने की शुरूआत कर सकते हैं। इसके अलावा, ऐसी कई कंपनियां व वेबसाइट हैं, जो टीचर्स को हायर करके ऑनलाइन पढ़ाने का अवसर प्रदान करते हैं। ऐसे में आपको ऑनलाइन छात्र ढूंढने की भी जरूरत नहीं है। बस इन कंपनियों के साथ जुड़कर आप एक अच्छा करियर बना सकते हैं।

आमदनी

ऑनलाइन ट्यूशन एक ऐसा क्षेत्र है, जहां पर अनुभवी टीचर्स काफी अच्छी खासी कमाई कर सकते हैं। शुरूआत में एक टीचर करीबन 200 रूपए प्रति घंटा चार्ज कर सकते हैं। वहीं कुछ समय के अुनभव, बाद आप 500 रूपए प्रति घंटा प्राप्त कर सकते हैं। अगर आप इस क्षेत्र में अपनी क्वालिटी को साबित करते हैं और छात्रों को आपके पढ़ाने का तरीका पसंद आता है, तब आपकी कमाई की कोई सीमा नहीं है।

वेब डिजाइनिंग के क्षेत्र में आजमाएं भविष्य और बनें आत्मनिर्भर

किसी वेबसाइट का ले आउट कैसा रहना चाहिए, इसका यूजर इंटरफेस किस डिजाइन से बेहतर होगा, इसे डिसाइड करने के लिए आप इसकी स्केचिंग करते हो। साथ में किसी सॉफ्टवेयर में इसका प्रोटोटाइप भी बनाते हो। कई लोग इसे तकनीकी लैंग्वेज में पीएसडी बनाना भी बोलते हैं।सूचना क्रांति का जिस क्षेत्र ने सर्वाधिक लाभ उठाया है, उनमें से एक है वेब डिजाइनिंग की फील्ड! डब्ल्यू डब्ल्यू डब्ल्यू, यानी वर्ल्ड वाइड वेब नामक क्रांति ने दुनिया को बदल कर रख दिया है। एक वेबसाइट दुनिया में क्या बदलाव ला सकती है इसे बखूबी दिखलाया है गूगल ने, इसे बखूबी दिखलाया है अमेजन ने, इसे बखूबी दिखलाया है फेसबुक जैसी वेबसाइट ने और ऐसे अनगिनत नाम हैं इस दुनिया में।आप चाहे विकिपीडिया का नाम लें, चाहे फ्लिपकार्ट कहें, चाहे न्यूज की दूसरी वेबसाइट का उद्धरण दें, इसने नए युग में नई क्रांति को जन्म दिया है। छोटा बिजनेस हो, बड़ा बिजनेस हो, किसी आम या ख़ास इंडस्ट्री से संबंधित कंटेंट की वेबसाइट हो, सामान की डिलीवरी हो या फिर कोई और काम, लोगों की जिंदगी में एक वेबसाइट ने आमूलचूल परिवर्तन लाया है। वस्तुतः यह कहने में हमें संकोच नहीं होना चाहिए कि शिक्षा तक की ट्रेडिशनल पद्धति को वेबसाइटों ने ना केवल बदला है, बल्कि इसकी बुनियाद को बदलने में भी अहम भूमिका निभाई है। अब जरा सोचिए! अगर इसका प्रभाव इतना व्यापक है तो इस फील्ड में कार्य करने वाले लोग भला महत्वपूर्ण क्यों नहीं होंगे? सच बात तो यह है कि वेब डिज़ाइनर पिछले कई दशकों से महत्वपूर्ण बने हुए हैं और आज भी इनका महत्व कम नहीं हुआ है। वेब डिजाइनिंग में आप सामान्य एचटीएमएल वेबसाइट से लेकर, स्टैटिक ऑपरेशन एवं डायनेमिक बिहेवियर वाली वेबसाइट बनाते हैं और उसकी सहायता से अपने कस्टमर

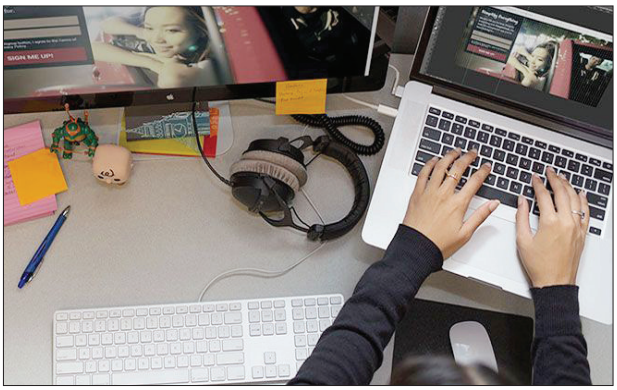

को लाभ भी पहुंचाते हैं।

डिजाइनिंग पार्ट-किसी वेबसाइट का ले आउट कैसा रहना चाहिए, इसका यूजर इंटरफेस किस डिजाइन से बेहतर होगा, इसे डिसाइड करने के लिए आप इसकी स्केचिंग करते हो। साथ में किसी सॉफ्टवेयर में इसका प्रोटोटाइप भी बनाते हो। कई लोग इसे तकनीकी लैंग्वेज में पीएसडी बनाना भी बोलते हैं। यहां डिजाइन फाइनल होती है और उसके बाद ही अगले स्टेप की तरफ कोई बढ़ता है। अगर आप इस क्षेत्र में कॅरियर बनाना चाहते हैं तो एडोबी का फोटोशॉप, इलस्ट्रेटर, कोरल ड्रा जैसे सॉफ्टवेयर में आपको सिद्धहस्त होना चाहिए। इसे आप एक लेवल पर ग्राफिक डिजाइनर भी बोल सकते हैं और आप जितनी बेहतरीन डिजाइन बनाएंगे, वेबसाइट उतनी ही शानदार तरीके से तैयार होगी। इस फील्ड में उपरोक्त सॉफ्टवेयर की महारत रखने वाले लोग न केवल वेबसाइट का लेआउट बनाते हैं, बल्कि लोगो से लेकर तमाम इमेज वर्क भी इनके हाथ में होता है।

कोडिंग जोन-यह ऐसा क्षेत्र है जो असली प्रोग्रामिंग की दुनिया में बदलाव लाता है। एक सामान्य वेबसाइट और गूगल में क्या अंतर है यह डिफाइन करता है कि इसमें कोडिंग किस स्तर की हुई है? एक सामान्य एचटीएमएल वेबसाइट और फेसबुक में क्या अंतर है, एक सामान्य वेबसाइट और अमेजन में क्या अंतर है, यह कोडिंग डिसाइड करती है। कहने का तात्पर्य यह है कि मनुष्य ऊपर से जैसा भी दिखता हो, किंतु उसके मस्तिष्क में कितनी नसें हैं, ब्लड सर्कुलेशन किस प्रकार होता है यह आप प्रोग्रामिंग समझ सकते हैं कोडिंग लैंग्वेज किसी भी वेबसाइट को नियंत्रित करती है। वह वेबसाइट चाहते गूगल जैसा कोई सर्च इंजन हो, फेसबुक जैसा कोई सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म हो या फिर फ्लिप्कार्ट जैसी कोई शॉपिंग वेबसाइट हो, कोडिंग ही यह तमाम चीजें तय करती है।

एनीमेशन में है मनोरंजन का भविष्य और कॅरियर

एनिमेशन का प्रयोग ना केवल छोटे-मोटे एडवरटाइजमेंट और ग्राफ़िक्स इत्यादि में किया जाता है, बल्कि पूरी की पूरी फिल्में और सीरियल्स भी इसी पर बनने लगे हैं। टॉम एंड जेरी, पेपा पेग, बब्लू डब्लू, बाल कृष्णा, छोटा भीम इत्यादि ऐसे दूसरे कई सीरियल एनिमेशन टेक्नोलॉजी पर ही तो बने हुए हैं। एनीमेशन निश्चय ही यह बहुत ही विस्तृत क्षेत्र है। कंप्यूटर की दुनिया में इसे एक तरह से क्रांति ही समझ लीजिये। और हो भी क्यों ना, कोई कार्टून स्क्रीन पर किस तरीके से मूव करता है, कैसे वह तमाम एक्टिविटीज करता है, आखिर यह सब एनिमेशन ही तो निश्चित करता है। वास्तव में एनिमेशन का प्रयोग ना केवल छोटे-मोटे एडवरटाइजमेंट और ग्राफ़िक्स इत्यादि में किया जाता है, बल्कि पूरी की पूरी फिल्में और सीरियल्स भी इसी पर बनने लगे हैं। टॉम एंड जेरी, पेपा पेग, बब्लू डब्लू, बाल कृष्णा, छोटा भीम इत्यादि ऐसे दूसरे कई सीरियल एनिमेशन टेक्नोलॉजी पर ही तो बने हुए हैं।यूं एनिमेशन का कोर्स करने के लिए आपको बहुत लंबी चौड़ी पढ़ाई की जरूरत नहीं होती है, बल्कि दसवीं के बाद ही आप इसे शुरू कर सकते हैं। हालाँकि

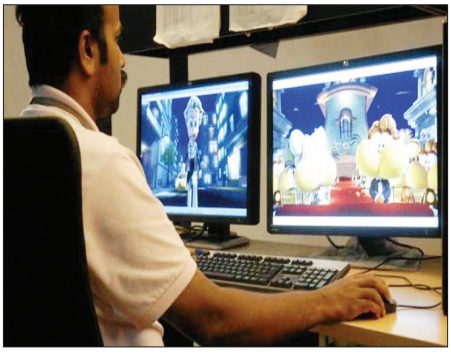

एनीमेशन में कॅरियर बनाने के इच्छुक लोग ग्रेजुएट, पोस्ट ग्रेजुएट व डिप्लोमा कोर्स अवश्य कर सकते हैं। अधिकांश कॉलेजों में बैचलर ऑफ फाइन आर्ट्स (बीएफए) में एक सब्जेक्ट के तौर पर भी एनिमेशन पढ़ाया जाता है। लेकिन कई बड़े संस्थानों में डिप्लोमा या एडवांस डिप्लोमा एवं सर्टिफिकेट कोर्स के तहत मार्केट की मांग के मुताबिक एनिमेशन की प्रोफेशनल ट्रेनिंग दी जाती है, जहां इंडस्ट्री के प्रोजेक्ट पर भी काम करने का मौका मिलता है। ऐसे कोर्सों का समय एक से दो वर्ष का होता है। इसके दौरान ड्राइंग, ग्राफिक्स, प्रोडक्शन, प्रोग्रामिंग, लाइटिंग इत्यादि के साथ-साथ एनिमेशन एवं डिजिटल आर्ट्स की डिटेल में जानकारी प्रदान की जाती है।एनीमेशन कराने वाले प्रमुख संस्थानों में एरीना मल्टीमीडिया की अलग अलग शाहरों में ब्रांचेज प्रमुख हैं। इसके अलावा नोएडा ग्लोबल स्कूल ऑफ एनिमेशन, नई दिल्ली ग्लोबल स्कूल ऑफ एनिमेशन, चेन्नई माया एकेडमी ऑफ एडवांस्ड सिनेमैटिक एवं मुंबई टेक्नो प्वाइंट मल्टीमीडिया और मुंबई टेक्नो प्वाइंट मल्टीमीडिया, बंगलुरु जैसे संस्थान प्रमुख रूप से गिनाये जा सकते हैं यूं तमाम कंपनियां अपने यहां जॉब से पहले प्रोफेशनल ट्रेनिंग तो कराती ही हैं। मुख्य रूप से 2-डी और 3-डी एनिमेशन का आज के समय में काफी चलन है। हालांकि मोशन ग्राफ़िक्स एवं स्टॉप एनीमेशन भी कई जगहों पर प्रयोग में लाया जाता है।

धूम 4 में विलेन बनेंगी दीपिका

बॉलीवुड एक्ट्रेस दीपिका पादुकोण को बड़े पर्दे पर हम भी ने हमेशा अगल-अलग अवतारों में देखा है। दीपिका ने अपनी एक्टिंग से लोगों का दिल जीता। कभी उन्होंने योद्धा और प्यार में सबकुछ भूल जाने वाली मस्तानी का किरदार निभाया तो कभी पद्मावती का। बॉलीवुड एक्ट्रेस दीपिका पादुकोण को बड़े पर्दे पर हम भी ने हमेशा अगल-अलग अवतारों में देखा है। दीपिका ने अपनी एक्टिंग से लोगों का दिल जीता। कभी उन्होंने योद्धा और प्यार में सबकुछ भूल जाने वाली मस्तानी का किरदार निभाया तो कभी पद्मावती का। रामलीला और ओम शांति ओम में भी उन्हें ट्रेडिशनल अवतार में देखा गया। तमाशा और ये जावानी है दीवानी जैसी फिल्मों में दीपिका ने नॉर्मल लड़की की भूमिका में देखा गया। कई फिल्मों में बोल्ड अवतार में भी देखा। अब दीपिका पादुकोण को पर्दे पर इन सबसे अलग एक खलनाईका के अवतार में देखा जाएगा। फैंस के लिए एक हैरान करने वाली खबर आयी है,इस खबर से बॉलीवुड में दीपिका पादुकोण की छवि बदल सकती है। आने वाली फिल्म धूम के चौथे पार्ट में दीपिका पादुकोण की एंट्री हो रही है। फिल्म में दीपिका पादुकोण विलेन की भूमिका निभाएंगी। दीपिका फिल्म में बड़े दर्जे की शातिर चोरनी होंगी। फिल्म को लेकर यशराज फिल्म के साथ दीपिका पादुकोण की बात चल रही है।

आलिया 'गंगूबाई काठियावाड़ी' 2021 में सिनेमा घरों में होगी रिलीज

अभिनेत्री आलिया भट्ट अभिनीत फिल्म 'गंगूबाई काठियावाड़ी' इस साल सिनेमा घरों में रिलीज होगी। संजय लीला भंसाली के निर्देशन में बनी यह फिल्म मशहूर लेखक हुसैन जैदी की पुस्तक 'माफिया क्वींस ऑफ मुम्बई' के एक अध्याय पर आधारित है। भंसाली की निर्माण कम्पनी ने 'इंस्टाग्राम' पर आठ सेकेंड का एक वीडियो साझा करते हुए फिल्म के इस साल रिलीज होने की जानकारी दी। निर्माण कम्पनी ने वीडियो साझा करते हुए लिखा, '' बहादुर, बिंदास और अपनी आंखों में शोले लिए 'गंगूबाई काठियावाड़ी'2021 पर राज करने को तैयार है...।''फिल्म 'गंगूबाई काठियावाड़ी' पहले 11 सितम्बर 2020 को सिनेमाघरों में रिलीज होने वाली थी, लेकिन कोविड-19 वैश्विक महामारी के कारण लागू लॉकडाउन की वजह से इसमें देर हुई।

सोनाक्षी सिन्हा को मिली नया प्रोजेक्ट

अभिनेत्री सोनाक्षी सिन्हा निर्देशक श्री नारायण सिंह की फिल्म में मुख्य किरदार अदा करने जा रही हैं जिसका अंतरिम नाम 'बुलबुल तरंग' रखा गया है। सिंह की पुरानी फिल्मों 'टॉयलेट- एक प्रेम कथा', बट्टी गुल मीटर चालू (2018) की तरह यह फिल्म भी सच्ची घटना से प्रेरित होगी। फिल्म की टीम से जुड़े एक सूत्र ने पीटीआई-से कहा, '' फिल्म में सोनाक्षी मुख्य भूमिका में हैं। इसमें राज बब्बर भी हैं। ताहिर राज भसीन भी इस फिल्म का हिस्सा हो सकते हैं। यह भारत की सामाजिक पृष्ठभूमि वाली फिल्म होगी और पुराने जमाने के रीति-रिवाज के बारे में होगी।'' पहली बार सिंह और सोनाक्षी साथ काम करेंगे। फिल्म की शूटिंग मार्च-अप्रैल में शुरू होगी। सोनाक्षी'भुज- द प्राइड ऑफ इंडिया' फिल्म के रिलीज होने का इंतजार कर रही हैं। इस फिल्म में अजय देवगन भी हैं और यह डिज्नी+हॉटस्टार पर रिलीज होगी।

नगरवासियों को
नववर्ष एवं मकर संक्रांति पर्व की
हार्दिक शुभकामनाएं
अशोक सिंह तोमर
(छोटू भईया)
प्रदेश उपाध्यक्ष, मप्र कांग्रेस कमेटी
नववर्ष 2021
कुंवर विजय सिंह तोमर
जनसेवक

नववर्ष एवं मकर संक्रांति पर्व की
हार्दिक शुभकामनाएं
रामकुमार सिंह सिकरवार
जिला अध्यक्ष
सतेन्द्र सिंह भदौरिया (लवली)
युवा प्रदेश अध्यक्ष
नववर्ष 2021
एड. धनेन्द्र सिंह चौहान
युवा प्रदेश उपाध्यक्ष
डॉ. धर्मेन्द्र सिंह चौहान
युवा प्रदेश प्रवक्ता
अभय प्रताप (बंटी)
युवा प्रदेश उपाध्यक्ष
शेखर भदौरिया
युवा प्रदेश संगठन मंत्री
अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा

ब्रम्हाणी हॉस्पीटल
HOSPITAL
ब्रम्हाणी हॉस्पिटल
अपील: कोरोना से बचाव के लिए मास्क लगाकर रखें, सोशल डिस्टेंसिंग का पालन करें, घर में रहें स्वस्थ रहें।
नव वर्ष एवं मकर संक्रांति पर्व की
हार्दिक शुभकामनाएं
डॉ. ब्रजेश सिंह राजपूत
(बंटी), संचालक
महावीर सिंह भदौरिया
ब्राह्मणी सिविल टेक प्राइवेट लिमिटेड
माँ वैष्णोपुरम, गदाईपुरा ग्वालियर म.प्र. 7354900036

Ring Ceremony
PreWedding
PostWedding
Candid Photography
Cinematic Videography
Event Photography
Model Shoot
Make-up Shoot
Arial Photography
PortFolio
Crane,Drone,LED Wall
Photography...
A quality Work
Dir. Arvind Rathor
9179432260
7514925493
Add.H23 Bateshwar Plaza Adityapuram
Bhind Road Gwalior(M.P.)

पुष्पांजली जनकल्याण फाउंडेशन

बेटी आगे बढ़ेगी, तो देश आगे बढ़ेगा

बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ, समाज को प्रगति के रास्ते ले जाओ

सौम्या तोमर

जिस घर में होता है बेटी का सम्मान
वह घर होता है स्वर्ग समान

नगरवासियों को नववर्ष एवं मकर संक्रांति पर्व की

हार्दिक शुभकामनाएं

नववर्ष 2021

छोटे सिंह भदौरिया
राष्ट्रीय अध्यक्ष

भरत सिंह चौहान
राष्ट्रीय सचिव

अमित शर्मा
राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष

अर्पित गुप्ता
राष्ट्रीय युवाध्यक्ष

कार्यालय :- जी एस प्लाजा गोले का मंदिर ग्वालियर मध्यप्रदेश

हेल्पलाइन: 0751-4901403, वाट्सएप: 9425665944

Website :- www.pushpanjalijkfoundation.comEmail :- pushpanjalijkfoundation@gmail.com

सभी देशवासियों को नववर्ष एवं गणतंत्र दिवस की

हार्दिक शुभकामनाएँ

साईं बुक डिपो

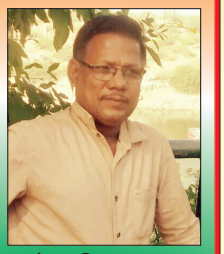

मोबाइल न.- 7828700794

पता : पुराना बस स्टेण्ड, पटेल चौक, जिला श्योपुर

प्रो : रवि अग्रवाल

सभी देशवासियों को नववर्ष एवं गणतंत्र दिवस की

हार्दिक शुभकामनाएँ

लाला फटे नोट वाले एवं रेडीमेड स्टोर

मोबाइल न.- 6268639386

पता - जय स्तम्भ के पास, जिला श्योपुर

प्रो : सुनील सिंघल (लाला)

नगरवासियों को नववर्ष एवं मकर संक्रांति पर्व की हार्दिक शुभकामनाएं

नववर्ष 2021

संजू कवर मेड़तिया

पंचायत सदस्य, वार्ड 01, रानी

पाली, राजस्थान

नगरवासियों को नववर्ष एवं मकर संक्रांति पर्व की हार्दिक शुभकामनाएं

नववर्ष 2021

नवरत्न सीरवी

पूर्व प्रधान, पंचायत समिति रानी

पाली, राजस्थान

नगरवासियों को नववर्ष एवं मकर संक्रांति पर्व की हार्दिक शुभकामनाएं

प्रॉपर्टी उचित मूल्य पर खरीदने एवं बेचने के लिए संपर्क करें

के. के. राय

8319733765

नगरवासियों को नववर्ष एवं मकर संक्रांति पर्व की हार्दिक शुभकामनाएं

सत्येन्द्र सिंह सत्तू भईया

प्रदेश कार्यसमिति सदस्य, भाजपा किसान मोर्चा

ग्रामवासियों को नववर्ष एवं मकर संक्रांति की

श्रीमती हेमा भदौरिया

सरपंच

अरिमर्दन सिंह भदौरिया

माधौ सिंह तोमर

सचिव

ग्राम पंचायत शुकलपुरा, अटेर जिला भिण्ड, मध्य प्रदेश

नगरवासियों को नववर्ष एवं मकर संक्रांति पर्व की

हार्दिक शुभकामनाएं

नववर्ष 2021

राठौर क्लीनिक अम्बाह

डाक्टर एल एस राठौर

ग्रामवासियों को नववर्ष एवं मकर संक्रांति की

महेन्द्र सिंह

सरंपच

हार्दिक शुभकामनाएं

ग्राम पंचायत खड़ीत,

अटेर जिला भिण्ड,

मध्य प्रदेश

उपेंद्र सिंह

सचिव

नववर्ष एवं मकर संक्रांति की हार्दिक शुभकामनाएं

दिनेश सिंह तोमर

(संचालक)

एक्स - सीआरपीएफ

अर्धसैनिक बल केंटीन अम्बाह